



رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

हिन्दी

هندي

حِصْنُ الْمُسْلِمِ مِنْ أَذْكَارِ الْكِتَابِ وَالسُّنَّةِ

हिस्न अल-मुस्लिम (कुरआन एवं हदीस की दुआएँ)



अल्लाह का मोहताज
डॉक्टर सईद बिन अली बिन वहफ़ अल-क़हतानी

٢٠٠٧

بن وهف ، سعيد

حصن المسلم من أذكار الكتاب والسنة - هندي. / سعيد بن وهف
- ط ١. - الرياض، ١٤٤٧هـ

١٤٧ ص ؛ ..سم

رقم الإيداع: ١٤٤٧/١٨٠٢٨
ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٥١٧-٢٧٨-٣

حِصْنُ الْمُسْلِمِ
مِنْ أَذْكَارِ الْكِتَابِ وَالسُّنَّةِ

हिरन अल-मुरिलम (कुरआन एवं हदीस की दुआएँ)

د. سَعِيدُ بْنُ عَلِيٍّ بْنِ وَهْفٍ الْقَحْطَانِيُّ

अल्लाह का मोहताज
डॉक्टर सईद बिन अली बिन वहफ़ अल-कहतानी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हिस्न अल-मुस्लिम

(कुरआन एवं हदीस की दुआएँ)

अल्लाह का मोहताज

डॉक्टर सईद बिन अली बिन वहफ़ अल-कहतानी

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ), जो बड़ा दयालु एवं अति दयावान् है

भूमिका

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह की है। हम उसी की प्रशंसा एवं स्तुति करते हैं, उसी से सहायता माँगते हैं और उसी से क्षमायाचना करते हैं। हम अपनी आत्माओं और अपने कर्मों की बुराइयों से अल्लाह की शरण माँगते हैं। वह जिसका मार्गदर्शन करे, उसे कोई पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकता, और जिसे वह पथभ्रष्ट करे, उसका कोई मार्गदर्शक नहीं हो सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है और उसका कोई शरीक नहीं। तथा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अल्लाह के बंदे एवं उसके रसूल हैं। उनपर, उनके परिजनों पर और उनके साथियों पर, अल्लाह की अपार कृपा एवं शांति की बरखा बरसे। तत्पश्चात :

यह संक्षिप्त पुस्तक दरअसल मेरी किताब "अज़-ज़िक्र वद-दुआ वल-इलाज बिर-रुक्का मिनल-किताब वस-सुन्नह" का सार रूप है, जिसमें उसके अज़कार वाले भाग को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है, ताकि उसे यात्रा के दौरान आसानी से साथ रखा जा सके।

मैंने अपनी इस पुस्तक में केवल हदीस के मत्न (पाठ) को नक़ल किया है, और असल पुस्तक में उल्लिखित उसके संदर्भों में से महज़ एक-दो संदर्भ का उल्लेख किया है। जो वर्णन करने वाले सहाबी एवं अधिक संदर्भों से अवगत होना चाहे, उसे असल किताब का अध्ययन करना चाहिए। मैं सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह से, उसके सुंदर नामों एवं उच्च गुणों के वसीले से दुआ करता हूँ कि इस पुस्तक को अपनी प्रसन्नता की प्राप्ति का साधन बनाए, उसे मेरे जीवन में तथा मेरी मृत्यु के बाद मेरे साथ-साथ उसके पाठकों, प्रकाशकों और इस कार्य में सहयोग करने वाले सभी लोगों के लिए लाभदायक बनाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सारे कार्य वही करता है और इनकी शक्ति भी वही रखता है। अल्लाह की कृपा तथा शांति की बरखा बरसे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके परिजनों, साथियों तथा क़यामत के दिन तक निष्ठा के साथ उनका अनुसरण करने वालों पर।

लेखक

इन शब्दों को सफ़र 1409 हिजरी में लिखा गया है।

¹ असल किताब, उसमें उल्लिखित हदीसों के संदर्भों के विस्तृत रूप से उल्लेख के साथ चार खंडों में छप चुकी है। उसके प्रथम एवं द्वितीय खंड में "हिस्न अल-मुस्लिम" मौजूद है।

ज़िक्र का महत्व

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ﴾⁽¹⁵²⁾

"अतः, तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूँगा और मेरे आभारी रहो तथा मेरे कृतघ्न न बनो।"¹

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا أَذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا﴾

"हे ईमान वाले, अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करते रहो।"²

﴿...وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُم مَّغْفِرَةً
وَأَجْرًا عَظِيمًا﴾

"तथा अल्लाह को अत्याधिक याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ, अल्लाह ने इन्हीं के लिए क्षमा तथा महान प्रतिफल तैयार कर रखा है।"³

﴿وَادْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ﴾⁽¹⁵⁵⁾

¹ सूरा अल-बक्रा, आयत संख्या : 152

² सूरा अल-अहज़ाब, आयत संख्या : 41

³ सूरा अल-अहज़ाब, आयत संख्या : 35

"और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनय पूर्वक तथा डरते हुए और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो और उन लोगों में से न हो जाओ, जो अचेत रहते हैं।"

तथा अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है :
"उस व्यक्ति का उदाहरण जो अपने रब को याद करता हो और जो अपने रब को याद न करता हो, जीवित और मृत की तरह है।"

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें तुम्हारा सबसे उत्तम कार्य न बताऊँ, जो तुम्हारे प्रभु के निकट सबसे ज़्यादा सराहनीय, तुम्हारे दर्जे को सबसे ऊँचा करने वाला, तुम्हारे लिए सोना एवं चाँदी दान करने से बेहतर तथा इस बात से भी बेहतर है कि तुम अपने शत्रु से भिड़ जाओ और तुम उनकी गर्दन मार दो और वह तुम्हारी गर्दन मार दें?" सहाबा ने कहा : अवश्य ऐ अल्लाह के रसूल! तो फ़रमाया : "अल्लाह का ज़िक्र करना, जो उच्च एवं महान है।"

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "महान अल्लाह कहता है : मैं अपने बंदे के साथ वही करता हूँ, जो वह मेरे बारे में गुमान रखता है, तथा जब वह मुझे याद करता है, तो मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वह मुझे अपने नफस में याद करता है, तो मैं भी उसे अपने नफस में याद करता हूँ। अगर वह मुझे लोगों के बीच याद करता

¹ सूरा अल-आराफ़, आयत संख्या : 205

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/208, हदीस संख्या : 6407 तथा सहीह मुस्लिम 1/539, हदीस संख्या : 779। सहीह मुस्लिम के शब्द हैं : "उस घर का उदाहरण जिसमें अल्लाह को याद किया जाए और उस घर का उदाहरण जिसमें अल्लाह को याद न किया जाए, ऐसे हैं, जैसे जीवित और मृत।"

³ सुनन तिरमिज़ी 5/459, हदीस संख्या : 3377 तथा सुनन इब्न माजा 2/124, हदीस संख्या : 3790। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/316 तथा सुनन तिरमिज़ी 3/139।

है, तो मैं उसे ऐसे लोगों में याद करता हूँ जो उनसे अच्छे हैं। अगर वह मुझसे एक बिता करीब आता है, तो मैं उससे एक हाथ करीब आता हूँ और अगर वह मुझसे एक हाथ करीब आता है, तो मैं उससे दोनों हाथों को फैलाकर जितनी दूरी बनती है, उतना करीब आता हूँ और अगर वह मेरे पास चलकर आता है, तो मैं उसके पास दौड़ कर आता हूँ।¹

अब्दुल्लाह बिन बुस- रज़ियल्लाहु अन्हु- कहते हैं कि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के पास एक व्यक्ति आया और कहने लगा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे सामने इस्लाम के बहुत सारे अहकाम (विधान) मौजूद हैं। अतः, आप मुझे कोई ऐसा व्यापक कार्य बता दें, जिसे मैं मज़बूती से पकड़ लूँ। आपने फ़रमाया : “तुम्हारी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे।”²

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जिसने अल्लाह की किताब का एक अक्षर पढ़ा, उसके बदले में उसे एक नेकी मिलेगी और अल्लाह यहाँ एक नेकी का बदला दस गुना मिलता है। मैं यह नहीं कहता कि अलिफ़, लाम, मीम एक अक्षर है। बल्कि अलिफ़ एक अक्षर है, लाम एक अक्षर है और मीम एक अक्षर है।"³

उक़बा बिन आमिर -रज़ियल्लाहु अन्हु- से रिवायत है, वह कहते हैं : हम लोग सुफ़फ़ा में उपस्थित थे कि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व

¹ सहीह बुखारी 8/171, हदीस संख्या : 7405 तथा सहीह मुस्लिम 4/2061, हदीस संख्या : 2675। शब्द सहीह बुखारी के हैं।

² सुनन तिरमिज़ी 5/458, हदीस संख्या : 3375 तथा सुनन इब्न-माजा 2/1246, 3793। अलबानी ने इसे सहीह तिरमिज़ी 3/139 और सहीह इब्न-ए-माजा 2/317 में सहीह कहा है।

³ सुनन तिरमिज़ी 5/175, हदीस संख्या : 2910, अलबानी ने इसे सहीह तिरमिज़ी 3/9 और सहीह अल-जामे अस-सगीर 5/340 में सहीह कहा है।

सल्लम- निकले और फरमाया : "तुममें से कौन यह पसंद करता है कि प्रत्येक सुबह बुतहान या अक्रीक जाए और बिना कोई गुनाह किए या किसी रिश्तेदार का हक मारे दो ऊँचे कोहान वाले ऊँट ले आए? हमने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! हममें से हर व्यक्ति को यह पसंद है। तब फ़रमाया : "तुममें से कोई यदि मस्जिद जाए और सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह की किताब की दो आयतें सीखे या पढ़े, तो यह उसके लिए दो ऊँटों से बेहतर है। यदि तीन आयतें सीखता या पढ़ता है तो तीन ऊँटों से बेहतर है, और यदि चार आयतें सीखता या पढ़ता है चार ऊँटों से बेहतर है। इस प्रकार जितनी आयतें वह सीखता या पढ़ता जाएगा, वह उतने ऊँटों से बेहतर होगा।"¹

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जो किसी जगह बैठा और वहाँ अल्लाह को याद न किया, तो वह बैठना उसके लिए अल्लाह की ओर से पछतावे का कारण बनेगा, और जो किसी जगह लेटा और वहाँ अल्लाह को याद न किया, तो उसका वह लेटना उसके लिए अल्लाह की ओर से पछतावे का कारण बनेगा।"²

और आप-सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-ने फ़रमाया : "जो लोग किसी सभा में बैठते हैं और वहाँ अल्लाह को याद नहीं करते तथा अपने नबी पर दरूद नहीं भेजते, तो उनका वह बैठना उनके लिए पछतावे का कारण बनेगा। अब यदि अल्लाह चाहेगा, तो उन्हें यातना देगा और चाहेगा तो माफ़ करेगा।"³

¹ सहीह मुस्लिम, 1/553, हदीस संख्या : 8031

² सुनन अबू दाऊद 4/264, हदीस संख्या : 4856, आदि, और देखिए : सहीह अल-जामे 5/342।

³ सुनन तिरमिज़ी 5/461। हदीस संख्या : 3380। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/140।

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जो लोग किसी सभा से अल्लाह का ज़िक्र किए बिना उठ जाते हैं, वे जैसे मरे हुए गधे के पास से उठते हैं और यह उनके लिए पछतावे का कारण बनेगा।"¹

1- नींद से जागने के अज़कार

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا، وَإِلَيْهِ النُّشُورُ»

अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लज़ी अह्याना बअद मा अमातना, व इलैहि अन्नूशूर

"सारी प्रशंसा अल्लाह की है, जिसने हमें मृत्यु के पश्चात जीवन दिया और उसी की ओर लौटकर जाना है।"²

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ

أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ، رَبِّ اغْفِرْ لِي»

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, सुब्हानल्लाहि, वल्हम्दु लिल्लाहि, वला इलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम, रब्बिग़फ़िर ली

¹ सुनन अबू दाऊद 4/264, हदीस संख्या : 4855 तथा मुसनद-ए-अहमद 2/389, हदीस संख्या : 106801 देखिए : सहीह अल-जामे 5/176 ।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/113, हदीस संख्या : 6314 और सहीह मुस्लिम 4/2083, हदीस संख्या : 2711 ।

"अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, पूर्ण स्वामित्व बस उसी को प्राप्त है, सारी प्रशंसा उसी के लिए है और वह हर चीज़ करने में सक्षम है। अल्लाह पाक है समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं, और अल्लाह के सिवा कोई भी सत्य पूज्य नहीं है, अल्लाह सबसे बड़ा है और उच्च एवं महान अल्लाह के अतिरिक्त न किसी के पास भलाई के मार्ग पर लगाने की शक्ति है, न बुराई से रोकने की क्षमता। हे मेरे प्रभु! मुझे क्षमा कर दे।"

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي فِي جَسَدِي، وَرَدَّ عَلَيَّ رُوحِي، وَأَذِنَ

لِي بِذِكْرِهِ»

अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाजी आफ़ानी फ़ी जसदी, व-रद्दा अलैय्या रूही,
व-अज़ि'ना ली बिज़िक्रिह

"सारी प्रशंसा उस अल्लाह की है, जिसने मुझे शारीरिक रूप से स्वस्थ रखा, मुझे मेरा प्राण लौटा दिया और मुझे अपने ज़िक्र की अनुमति दी।"²

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ
لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ
وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَطْلًا

¹ जिसने यह दुआ पढ़ी, उसे क्षमा कर दिया जाएगा। उसके बाद यदि अल्लाह से कुछ माँगा, तो उसकी माँग पूरी की जाएगी। फिर यदि उठकर वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी, तो उसकी नमाज़ क़बूल कर ली जाएगी। सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 3/39, हदीस संख्या : 1154 आदि। शब्द इब्न-ए-माजा के हैं। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/335।

² सुनन तिरमिज़ी 5/473। हदीस संख्या : 3401। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/144।

سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ
أَخْرَجْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَا إِنَّنا سَمِعْنَا مُنَادِيًا
يُنَادِي لِلْإِيمَنِ أَنْ ءَامِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا
وَكْفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى
رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ
لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أَضِيعُ عَمَلٍ عَمِلَ مِنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنشُرْ
بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا
فِي سَبِيلِي وَقَتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ
حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّتْكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَّعُ
قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ
لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ
اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَشِعِينَ لِلَّهِ لَا
يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ

اللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا أَصْبِرُوا وَصَابِرُوا
وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾

"वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना और रात्रि तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते-जाते रहने में, मतिमानों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

जो खड़े, बैठे तथा सोए (प्रत्येक स्थिति में,) अल्लाह को याद करते तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं :) हे हमारे पालनहार! तू ने यह सब व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दंड से बचा ले।

हे हमारे पालनहार! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, उसे अपमानित कर दिया और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

हे हमारे पालनहार! हमने एक पुकारने वाले को ईमान के लिए पुकारते हुए सुना कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आए। हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे तथा हमारी बुराइयों को अनदेखी कर दे तथा हमारी मौत पुनीतों (सदाचारियों) के साथ हो।

हे हमारे पालनहार! हमें, तू ने रसूलों द्वारा जो वचन दिया है, हमें वो प्रदान कर तथा क्रयामत के दिन हमें अपमानित न कर। वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।

तो उनके पालनहार ने उनकी (प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि) निःसंदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य को व्यर्थ नहीं करता, नर हो अथवा नारी। तो जिन्होंने हिजरत (प्रस्थान) की, अपने घरों से निकाले गए, मेरी राह में सताए गए और युद्ध किया तथा मारे गए, तो हम अवश्य उनके दोषों को क्षमा कर देंगे तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे, जिनमें नहरें बह रही हैं। यह अल्लाह के पास से उनका प्रतिफल होगा और अल्लाह ही के पास अच्छा प्रतिफल है।

(ऐ नबी!) नगरों में काफ़िरों का (सुविधा के साथ) चलना-फिरना आपको धोखे में न डाले।

यह तनिक लाभ है। फिर उनका स्थान नरक है और वह क्या ही बुरा आवास है!

परन्तु जो अपने पालनहार से डरे, तो उनके लिए ऐसे स्वर्ग हैं, जिनमें नहरें प्रवाहित हैं। उनमें वे सदावासी होंगे। यह अल्लाह के पास से अतिथि सत्कार होगा तथा जो अल्लाह के पास है, पुनीतों के लिए उत्तम है।

और निःसंदेह अह्ले किताब (अर्थात् यहूद और ईसाई) में से कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह पर तथा तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उसपर ईमान रखते हैं, अल्लाह से डरे रहते हैं और उसकी आयतों को थोड़ी-थोड़ी क्रीमों पर बेचते भी नहीं। उनका बदला उनके रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाला है।

हे ईमान वालो! तुम धैर्य रखो, एक-दूसरे को थामे रखो, जिहाद के लिए तैयार रहो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।"

[सूरा आल-ए-इमरान : 190-200]¹

2- कपड़ा पहनने की दुआ

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي هَذَا (الثَّوبَ) وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ

مِنِّي وَلَا قُوَّةَ»

अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लजी कसानी हाज़ा अस्सौब व रज़कनीहि मिन गैरि हौलिन मिन्नी व ला कुव्वता

¹ आयतें सूरा आल-ए-इमरान (190-200) की हैं। सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 8/337, हदीस संख्या : 4569 तथा सहीह मुस्लिम 1/530, हदीस संख्या : 256।

"सारी प्रशंसा उस अल्लाह की है, जिसने मुझे यह कपड़ा पहनाया और मुझे कपड़ा प्रदान किया, जबकि मेरे पास न कोई शक्ति है और न सामर्थ्य..."¹

3- नया कपड़ा पहनने की दुआ

«اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ، أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ»

अल्लाहुम्मा लकल हम्दु अन्त कसौतनीहि, अस्अलुक मिन खैरिहि व खैरि मा सुनिअ लहू, व अऊजु बिका मिन शर्रिहि व शर्रि मा सुनिअ लहू

"ऐ अल्लाह! सारी प्रशंसा तेरी है कि तू ने मुझे यह कपड़ा पहनाया। मैं तुझसे इस कपड़े की भलाई तथा जिस काम के लिए इसे बनाया गया है, उसकी भलाई माँगता हूँ। इसी तरह मैं इसकी बुराई तथा जिस काम के लिए इसे बनाया गया है, उसकी बुराई से तेरी शरण माँगता हूँ।"²

4- नया कपड़ा पहनने वाले को दी जाने वाली दुआ

«تُبْلِي وَيُخْلِفُ اللَّهُ تَعَالَى»

तुब्ली वयुख्लिफुल्लाहु तआला

"तुम इसे पहन कर पुराना करो और इसके बाद तुम्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह नया कपड़ा दे।"³

¹ इसे अबू दाऊद हदीस संख्या : 4023, तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3458 और इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3285 ने रिवायत किया है, और अलबानी ने इरवा अल-ग़ालील 7/47 में हसन कहा है।

² सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 4020, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 1767, बग़ावी 12/40 तथा अलबानी की किताब मुख्तसर शमाइल तिरमिज़ी पृष्ठ : 47।

³ सुनन अबू दाऊद 4/41, हदीस संख्या : 4020 तथा देखिए : सहीह अबू दाऊद 2/760।

«الْبَسْ جَدِيدًا، وَعِشْ حَمِيدًا، وَمُتْ شَهِيدًا»

इल्बस जदीदन, वइश हमीदन, वमुत शहीदन

"तुम नया कपड़ा पहनो, प्रशंसनीय जीवन व्यतीत करो और शहीद होकर मरो।"¹

5- कपड़ा उतारने की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ»

बिस्मिल्लाह

"मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ।"²

6- शौचालय जाने की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ [اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ]»

[बिस्मिल्लाह], अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल खुब्बिस वल खबाइस

"अल्लाह के नाम से। ऐ अल्लाह! मैं नापाक जिन्नों एवं नापाक जिनियों से तेरी शरण माँगता हूँ।"³

¹ इब्न-ए-माजा 2/1178, हदीस संख्या : 3558 तथा बगवी 41/121 देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/275।

² सुनन तिरमिज़ी 2/505, हदीस संख्या : 606। देखिए : इरवा अल-गलील हदीस संख्या : 50 तथा सहीह अल-जामे 3/203।

³ सहीह बुखारी 1/45 हदीस संख्या : 142 तथा सहीह मुस्लिम 1/283 हदीस संख्या : 375। शुरू में "अल्लाह के नाम से" की वृद्धि सईद बिन मनसूर से की गई है। देखिए : फ़तह अल-बारी 1/244।

7- शौचालय से निकलने की दुआ

«عُفِّرْ أُنْكَ»

गुफ़रानक

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी क्षमा का प्रार्थी हूँ।"

8. वज़ू से पहले की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ»

बिस्मिल्लाह

"मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ।"²

9. वज़ू के बाद की दुआ

«أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا

عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ»

अशहदु अन् ला इलाह इल्लल्लाहु, वह्दहू ला शरीक लहू, व अशहदु
अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू

¹ इसे नसई के अतिरिक्त सुनन के तीनों संकलनकर्ताओं यानी अबू दाऊद ने हदीस संख्या : 30, तिरमिजी ने हदीस संख्या : 7 और इब्न-ए-माजा ने हदीस संख्या : 300 के तहत रिवायत किया है। इसी तरह नसई ने "अमल अल-यौम वल-लैलह" में हदीस संख्या : 79 के तहत रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह सुनन अबू दाऊद 1/19 में सहीह कहा है।

² सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 101, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 397 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 9418। देखिए : इरवा अल-गलील 1/122।

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं।"

«اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ»

अल्लाहुम्मज् अल्नी मिनत् तव्वाबीना वज् अल्नी मिनल मुततहिहीन
"ऐ अल्लाह, मुझे बहुत ज़्यादा तौबा करने वालों में से बना और खूब साफ़-सुथरा रहने वालों में से बना।"²

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ
وَأَتُوبُ إِلَيْكَ»

सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बिहम्दिका, अशहदु अन् ला इलाहा इल्ला
अन्ता, अस्तगफ़िरुकाव अतूबु इलैका

"ऐ अल्लाह, तू पाक है और तेरी ही प्रशंसा है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है। मैं तुझसे क्षमा माँगता हूँ और तेरी ओर लौटकर आता हूँ।"³

10- घर से निकलने की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ»

बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलल्लाहि, व ला हौला व ला कुव्वता इल्ला
बिल्लाह

¹ सहीह मुस्लिम 1/209, हदीस संख्या : 2341

² सुनन तिरमिज़ी 1/78, हदीस संख्या : 551 देखिए : सहीह तिरमिज़ी 1/181

³ नसई की "अमल अल यौम व अल-लैलह" पृष्ठ : 173। देखिए : इरवा अल-गलील 1/135 तथा 3/94।

"अल्लाह के नाम के साथ हम अंदर आए और अल्लाह के नाम के साथ हम बाहर निकले तथा अल्लाह ही पर हम ने भरोसा किया जो हमारा पालनहार है।" यह दुआ पढ़ने के बाद अपने घर वालों को सलाम करो।

12- मस्जिद जाने की दुआ

«اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي لِسَانِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَمِنْ فَوْقِي نُورًا، وَمِنْ تَحْتِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ شِمَالِي نُورًا، وَمِنْ أَمَامِي نُورًا، وَمِنْ خَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي نَفْسِي نُورًا، وَأَعْظِمْ لِي نُورًا، وَعَظِّمْ لِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا، وَاجْعَلْنِي نُورًا، اللَّهُمَّ أَعْطِنِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي عَصِي نُورًا، وَفِي لَحْمِي نُورًا، وَفِي دَمِي نُورًا، وَفِي شَعْرِي نُورًا، وَفِي بَشَرِي نُورًا»

अल्लाहुम्मज्-अल फ़ी क़ल्बी नूर, व-फ़ी लिसानी नूर, व-फ़ी समई नूर, व-फ़ी बसरी नूर, व-मिन फ़ौक़ी नूर, व-मिन तहती नूर, व-अन यमीनी नूर, व-अन शिमाली नूर, व-मिन अमामी नूर, व-मिन खल्फ़ी नूर, वज्-अल फ़ी नफ़्सी नूर, व-अज़्ज़िम ली नूर, व-अज़्ज़िम ली नूर,

¹ सुनन अबू दाऊद 4/325, हदीस संख्या : 5096। शैख बिन बाज़ ने अपनी पुस्तक "तोहफ़ा अल-अख़यार" पृष्ठ : 28 में इसकी सनद को हसन कहा है। जबकि सहीह मुस्लिम (हदीस संख्या : 2018) में है : "जब इनसान घर में प्रवेश करते समय तथा खाना खाते समय अल्लाह का स्मरण करता है, तो शैतान कहता है कि यहाँ तुम्हारे लिए (शैतान के लिए) रात बिताना और रात के भोजन में सम्मिलित होना असंभव होगया।"

वज-अल ली नूरन, वज-अल्ली नूरन, अल्लाहुम्मा अअतिनी नूरन, वज-अल फ़ी असबी नूरन, व-फ़ी लहमी नूरन, व-फ़ी दमी नूरन, व-फ़ी शअरी नूरन, व-फ़ी बशरी नूरन

"ऐ अल्लाह! मेरे हृदय में उजाला कर दे, मेरी ज़बान में उजाला कर दे, मेरे कान में उजाला कर दे, मेरी आँख में उजाला कर दे, मेरे ऊपर उजाला कर दे, मेरे नीचे उजाला कर दे, मेरे दाएँ उजाला कर दे, मेरे बाएँ उजाला कर दे, मेरे आगे उजाला कर दे, मेरे पीछे उजाला कर दे, मेरी अंतरात्मा में उजाला कर दे, मेरे लिए उजाला बड़ा कर दे तथा मेरे लिए उजाला को बहुत बड़ा कर दे और मुझे उजाला प्रदान कर दे और मुझे स्वयं उजाला बना दे। ऐ अल्लाह! मुझे उजाला प्रदान कर, मेरे पेटों में उजाला कर दे, मेरे मांस में उजाला कर दे, मेरे रक्त में उजाला कर दे, मेरे बालों में उजाला कर दे और मेरी त्वचा में उजाला कर दे।"¹

«اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِي نُورًا فِي قَبْرِي... وَنُورًا فِي عِظَامِي، وَزِدْنِي

نُورًا، وَزِدْنِي نُورًا، وَزِدْنِي نُورًا، وَهَبْ لِي نُورًا عَلَى نُورٍ»

अल्लाहुम्मज्जअल ली नूरन फ़ी कब्री... व नूरन फ़ी इज़ामी, व ज़िदनी नूरन, व ज़िदनी नूरन, व ज़िदनी नूरन, व हब ली नूरन अला नूरिन

¹ इन सारे शब्दों के लिए देखिए : सहीह बुखारी 11/116, हदीस संख्या : 6316 तथा सहीह मुस्लिम 1/526, 529 और 530, हदीस संख्या : 763।

"ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र में उजाला कर दे... और मेरी हड्डियों में उजाला कर दे।"¹ "मेरे उजाले को बढ़ा दे, मेरे उजाले को बढ़ा दे, मेरे उजाले को बढ़ा दे।"² "मुझे उजाला ही उजाला प्रदान करा।"³

13- मस्जिद में प्रवेश करने की दुआ

पहले अपना दायाँ पाँव अंदर रखेगा⁴ और कहेगा :

«أَعُوذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيمِ، وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ، مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अरुज़ु बिल्लाहिल् अज़ीम, व बिवज्जिहिल् करीम, व सुल्तानिहिल् क़दीम, मिनश् शैतानिर रज़ीम

"मैं महान अल्लह, उसके सम्मानित मुख मंडल तथा उसके आद्य सत्ता की शरण में आता हूँ धुतकारे हुए शैतान से।"⁵

«بِسْمِ اللّٰهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللّٰهِ»

¹ सुन्नन तिरमिज़ी 5/483, हदीस संख्या : 3419।

² इसे इमाम बुखारी ने अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 695, पृष्ठ : 258 में रिवायत किया है। एवं अलबानी ने सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 538 में इसकी सनद को सहीह कहा है।

³ इसका उल्लेख इब्न-ए-हज़र ने फ़तह अल-बारी में किया है, और किताब अद-दुआ में उसकी निस्बत इब्न अबू आसिम की ओर किया है। देखिए : फ़तह अल-बारी : 11/118। उन्होंने कहा है : "विभिन्न रिवायतों को मिलाने के बाद पच्चीस चीज़ें एकत्र हो जाती हैं।"

⁴ क्योंकि अनस -रज़ियल्लाहु अन्हु- कहते हैं : "सुन्नत यह है कि मस्जिद में प्रवेश करते समय पहले अपना दायाँ पाँव अंदर रखो और बाहर निकलते समय पहले बायाँ निकालो।" इसे हाकिम ने मुसतदरक 1/218 में नक़ल किया है और इमाम मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है। ज़हबी ने भी उनकी पुष्टि की है। जबकि बैहकी ने भी (2/442) में इसे नक़ल किया है और अलबानी ने सिलसिला अल-अहादीस अस-सहीहा (5/624, हदीस संख्या : 2478) में हसन कहा है।

⁵ सुन्नन अबू दाऊद हदीस संख्या : 466, देखिए : सहीह अल-जामे हदीस संख्या : 4591।

अल्लाह के नाम से (आरम्भ करता हूँ), तथा अल्लाह के रसूल पर शांति एवं कल्याण की वर्षा हो।

«बिस्मिल्लाहि वस्सलातु»¹ «वस्सलामु अला रसूलिल्लाह»²

«اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ»

ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी कृपा के द्वार खोल दे।

"अल्लाहुम्मा इफ़्तह ली अब्वाबा रहमतिक"³

14- मस्जिद से निकलने की दुआ

"पहला अपना बायाँ पाँव बाहर निकालो"⁴ और कहे :

«بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ»

बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ और दुरूद व सलाम हो अल्लाह के रसूल पर,"

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका मिन फ़ज़्लिक

¹ इसे इब्न अस-सुन्नी ने हदीस संख्या : 88 के तहत सहीह कहा है, और अलबानी ने अष-षमर अल-मुसतताब पृष्ठ : 607 में हसन कहा है।

² सुनन अबू दाऊद 1/126, हदीस संख्या : 465, देखिए : सहीह अल-जामे 1/528।

³ सहीह मुस्लिम 1/494, हदीस संख्या : 713। जबकि सुनन इब्न-ए-माजा में फ़ातिमा -रज़ियल्लाहु अन्हा- की हदीस में है : "ऐ अल्लाह मेरे गुनाह क्षमा कर दे और मेरे लिए अपनी दया के द्वार खोल दो" और इस हदीस के कई शवाहिद (साक्षी हदीसों) के कारण अलबानी ने इसे सही कहा है। देखिए : सहीह इब्न-माजा 1/128-129।

⁴ मुसतदरक हाकिम 1/218, बैहकी 2/442। अलबानी ने सिलसिला अल-अहादीस अस-सहीहा 5/624, हदीस संख्या : 2478 में इसे हसन कहा है। इससे पहले इसके संदर्भों का उल्लेख हो चुका है।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरी कृपा माँगता हूँ,

«اللَّهُمَّ اعْصِمْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अल्लाहुम्मा इअसिम्नी मिनश् शैतानिर रजीम

"ऐ अल्लाह! मुझे दुत्कारे हुए शैतान से सुरक्षित रखा।"

15- अज़ान के अज़कार

अज़ान सुनने वाला वही कुछ कहे जो अज़ान देने वाला कह रहा हो।
अंतर बस यह है कि सुनने वाला "हय्या अलस्सलाह " तथा "हय्या
अललफ़लाह" के उत्तर में कहेगा :

«لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ»

ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

"अल्लाह की तौफ़ीक़ के बिना ना पाप से बचने की शक्ति है, न पुण्य
की क्षमता।"²

इसके साथ यह दुआ भी पढ़े :

«وَأَنَا أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا

عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا، وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا»

¹ मस्जिद में प्रवेश के समय पढ़ी जाने वाली दुआ से संबंधित उल्लिखित हदीस की विभिन्न रिवायतों के संदर्भ हदीस क्रम संख्या 20 में देख लीजिए। "ऐ अल्लाह! मुझे धुतकारे हुए शैतान से बचा।" की वृद्धि इब्न-ए-माजा से ली गई है। देखिए : सहीह सुनन इब्न-ए-माजा 1/129।

² सहीह अल-बुखारी 1/152, हदीस संख्या : 611 एवं 613 तथा सहीह मुस्लिम 1/288, हदीस संख्या : 383।

व अना अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वऱ्हदहू ला शरीका लहू व
अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन, व बिमुहम्मदिन
रसूलन, व बिल इस्लामि दीना

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। वह
अकेला है और उसका कोई साझी नहीं है। साथ ही इस बात की भी गवाही
देता हूँ कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अल्लाह के बंदे और
उसके रसूल हैं। मैं अल्लाह को प्रभु, मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-
को रसूल और इस्लाम को धर्म मानकर संतुष्ट हूँ।"¹

(यह दुआ मुअज़्ज़िन के "अशहदु अल ला इलाहा इल्लल्लाह" एवं
"अशहदु अन्ना मुहम्मद रसूलुल्लाह" कहने के बाद कहे।)²

"मुअज़्ज़िन का उत्तर देने के बाद अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि
व सल्लम- पर दरूद भेजे।"³

इसके साथ यह दुआ भी पढ़े :

«اللَّهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةُ التَّائِمَةُ، وَالصَّلَاةُ الْقَائِمَةُ، آتِ مُحَمَّدًا
الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ، [إِنَّكَ لَا
تُخْلِفُ الْمِيعَادَ]

अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद् दअ-वतित ताम्मति, वस-सलातिल
क्राइमति, आति मुहम्मदिनल् वसीलति वल-फ़ज़ीलति, वब-अस्-हु मक्रामम
महमूदिनिल्लज़ी वअद्-तहु, [इन्नका ला तुख़्लिफुल मीआद]

¹ सहीह मुस्लिम 1/290, हदीस संख्या : 3861

² इब्न-ए-खुज़ैमा 1/2201

³ सहीह मुस्लिम 1/288, हदीस संख्या : 3841

"ऐ अल्लाह! इस संपूर्ण आह्वान तथा खड़ी होने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को वसीला (जन्नत का सबसे ऊँचा स्थान) और श्रेष्ठतम दर्जा प्रदान कर और उन्हें वह प्रशंसनीय स्थान प्रदान कर, जिसका तू ने उन्हें वचन दिया है। [निश्चय तू वचन नहीं तोड़ता]"¹

अज्ञान तथा इक्रामत के बीच अपने लिए दुआ करेगा, क्योंकि इस समय की जाने वाली दुआ रद्द नहीं की जाती।²

16- नमाज़ आरंभ करने की दुआ

«اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ
وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ تَقْنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُتَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ
الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِنَ خَطَايَايَ، بِالثَّلْجِ وَالْمَاءِ وَالْبَرْدِ»

अल्लाहुम्म बाइद बैनी व-बैना खतायाया कमा बाअदता बैनल-
मशरिकि वल-मगरिबि, अल्लाहुम्मा नक्किनी मिन खतायाया कमा
युनक्कस-सौबुल अब्यजु मिनद्नसि, अल्लाहुम्मग़िसलनी मिन खतायाया,
बिस-सल्लिज वल-माइ वल-बरद।

"ऐ अल्लाह! मेरे तथा मेरे गुनाहों के बीच उतनी दूरी पैदा कर दे, जितनी दूरी पूरब और पश्चिम के बीच रखी है। ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों से साफ़ कर

¹ सहीह बुखारी 1/152, हदीस संख्या : 614। दोनों कोष्ठकों के बीच का भाग बैहकी 10/410 से लिया गया है। इसकी सनद को शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ ने तोहफ़ा अल-अखयार पृष्ठ : 38 में हसन कहा है।

² सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3594, 3595, सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 525 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 12200। देखिए : इरवा अल-ग़लील 1/262।

दे, जैसे उजले कपड़े को मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से पानी, बर्फ और ओले से धो दो"।

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلَا

إِلَهَ غَيْرُكَ»

सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बिहमिदका, व तबारकस्मुका, व तआला जदुका, व ला इलाहा गैरुका

"ऐ अल्लाह! तू पवित्र है। हम तेरी प्रशंशा करते हैं, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी महिमा उच्च है और तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है"।²

«وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلَاتِي، وَنُسُكِي، وَمَحْيَايَ، وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ بِذُنُوبِي فَاعْفِرْ لِي ذُنُوبِي جَمِيعًا إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ، وَاهْدِنِي لِأَحْسَنِ الْأَخْلَاقِ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ،

¹ सहीह बुखारी 1/181, हदीस संख्या : 744 तथा सहीह मुस्लिम 1/419, हदीस संख्या : 598।

² सही मुस्लिम हदीस संख्या : 399, अबू दाऊद हदीस संख्या : 775, तिरमिजी हदीस संख्या : 243, इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 806 तथा नसई : 899, देखिए : सहीह तिरमिजी 1/177 तथा सहीह इब्न-ए-माजा 1/135।

وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا، لَا يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ، لَبَّيْكَ
وَسَعْدَيْكَ، وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ، وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ، أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ،
تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ»

वज्जहतु वज्जिहया लिल्लज्जी फ़तरस-समावाति वल-अर्जा हनीफ़न वमा
अना मिनल मुश्रिकीन, इन्ना सलाती, व-नुसुकी, व-मह्याया, व-ममाती
लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, ला शरीका लहु व-बिज़ालिका उमिर्तु व अना
मिनल मुस्लिमीन, अल्लाहुम्मा अन्तल मलिकु ला इलाह इल्ला अन्ता,
अन्ता रब्बी व अना अब्दुक, ज़लम्तु नफ़सी वअ़तरफ़्तु बिज़म्बी फ़ग़िफ़र ली
ज़ुनूबी ज़मीअन इन्नहु ला यग़िफ़रुज़-ज़ुनूबा इल्ला अन्त, वहिदनी लि-
अह्सनिल अख़्लाकि ला यहदी लि-अह्सनिहा इल्ला अन्त, वसिफ़ अन्नी
सय्यिअहा, ला यस्मिफ़ु अन्नी सय्यिअहा इल्ला अन्त, लब्बैक व-सअदैक,
वल-ख़ैरु कुल्लुहु बि-यदैक, वश-शर्रु लैस इलैक, अना बिक व-इलैक,
तबारक्त व-तआलैत, अस्तग़िफ़रुक व-अतुबु इलैक

"मैंने अपना मुख एकाग्र होकर, उसकी ओर कर लिया है, जिसने
आकाशों तथा धरती की रचना की है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। निश्चय
मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह
के लिए है, जिसका कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है
और मैं मुसलमानों में से हूँ। ऐ अल्लाह तू ही बादशाह है और तेरे सिवा कोई
सत्य पूज्य नहीं है। तू मेरा पालनहार है और मैं तेरा बंदा। मैंने अपने प्राण पर
अत्याचार किया है और मैं अपने गुनाह का एतराफ़ करता हूँ। अतः, मेरे गुनाहों
को क्षमा कर दे। तेरे सिवा कोई क्षमा करने वाला नहीं है। मुझे सर्वोत्तम व्यवहार
का मार्ग दिखा, जो कि तेरे अतिरिक्त कोई और दिखा नहीं सकता। मुझे

कुव्यवहार से बचा, जिससे तेरे सिवा कोई बचा नहीं सकता। मैं तेरे आदेश के अनुपालन के लिए तत्पर हूँ और तेरे धर्म के अनुसरण के प्रति उत्साहित हूँ। सारी भलाइयाँ तेरे हाथ में हैं। जबकि बुराई की निसबत तेरी ओर नहीं की जा सकती। मुझे तू ही सामर्थ्य प्रदान करता है और मुझे तेरी ही ओर लौटकर जाना है। तू बड़ी भलाइयों वाला है और तेरी हस्ती बड़ी ऊँची है। मैं तुझसे क्षमा माँगता हूँ और तेरी ओर लौटकर आता हूँ।¹

«اللَّهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيلَ، وَمِيكَائِيلَ، وَإِسْرَافِيلَ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ، عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ، اهْدِنِي لِمَا اخْتَلَفَ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِي
مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ»

अल्लाहुम्मा रब्बा जिब्राईला, व मीकाईला, व इसराफ़ीला, फ़ातिरस्-
समावाति वल्-अर्ज़, आलिमल्-ग़ैबि वश्-शहादति अन्ता तहकुमु बैना
इबादिका फ़ीमा कानू फ़ीहि यख्तलिफ़ून, इहिदनी लिमख्तुलिफ़ा फ़ीहि
मिनल्-हक्कि बि-इज़्ज़िन्क, इन्नका तहदी मन तशाउ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम

"ऐ अल्लाह! ऐ जिबरील, मीकाईल तथा इसराफ़ील के रब! आकाश
तथा धरती को बनाने वाले और हाज़िर और ग़ायब का ज्ञान रखने वाले! तू
ही अपने बन्दों के मतभेदों का निर्णय करने वाला है। जिस सत्य के बारे में
लोगों में मतभेद हो गया है, उसके बारे में मेरा मार्गदर्शन कर। निश्चय तू जिसे
चाहता है, सीधा रास्ता दिखाता है।"²

¹ सहीह मुस्लिम 1/534, हदीस संख्या : 7711

² सहीह मुस्लिम 1/534, हदीस संख्या : 7701

«اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا،
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، وَسُبْحَانَ اللَّهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا»

अल्लाहु अकबर कबीरन, अल्लाहु अकबर कबीरन, अल्लाहु अकबर कबीरन, वल हम्दु लिल्लाहि कसीरन, वल हम्दु लिल्लाहि कसीरन, वल हम्दु लिल्लाहि कसीरन, व सुब्हानल्लाहि बुक्रतन व असीला

"अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है। अल्लाह की अत्यधिक प्रशंसा है, अल्लाह की अत्यधिक प्रशंसा है, अल्लाह की अत्यधिक प्रशंसा है। मैं सुबह एवं शाम अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ।"

तीन बार

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ: مِنْ نَفْخِهِ، وَنَفْثِهِ، وَهَمْزِهِ»

अऊजु बिल्लाहि मिनश-शैतानि: मिन नफ़िखहि, व नफ़िस्हि, व हम्ज़िहि
"मैं अल्लाह की शरण में आता हूँ शैतान के अभिमान, उसकी बुराई और उसके उन्माद से।"

¹ सुनन अबू दाऊद 1/203, हदीस संख्या : 764, इब्न-ए-माजा 1/265, हदीस संख्या : 807 तथा मुसनद-ए-अहमद 4/85, हदीस संख्या : 16739, शोऐब अरनाऊत ने इसे इसकी विभिन्न सनदों को मिलाकर हसन कहा है, जबकि अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इब्न-ए-तैमिया की किताब "अल-कलिम अत-तय्यिब" की हदीसों के संदर्भों का उल्लेख करते समय इसे इस अर्थ की अन्य रिवायतों के आधार पर सहीह कहा है। इसी तरह अलबानी ने इसे "सहीह अल-कलिम अत-तय्यिब" में हदीस संख्या : 62 के तहत दर्ज किया है। इसी तरह इमाम मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर -रज़ियल्लाहु अनहुमा- से इसी आशय की एक हदीस नक़ल की है, जिसमें एक घटना भी है। देखिए : सहीह मुस्लिम 1/420, हदीस संख्या : 6011

«اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، أَنْتَ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ،
 وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، [وَلَكَ
 الْحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ لَكَ
 مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ
 السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ] [وَلَكَ الْحَمْدُ] [أَنْتَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ،
 وَقَوْلُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ الْحَقُّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّونَ
 حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ] [اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ،
 وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَإِلَيْكَ أُنَبِّتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ،
 وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ. فَاعْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ، وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ،
 وَمَا أَعْلَنْتُ] [وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي] [أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ
 لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ] [أَنْتَ إِلَهِي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ] [وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا
 بِاللَّهِ]

अल्लाहुम्मा लकल हम्दु, अन्ता नूरुस-समावाति वल-अर्जि वमन
 फ़ीहिन्ना, व-लकल हम्दु अन्ता क़य्यिमुस-समावाति वल-अर्जि वमन
 फ़ीहिन्ना, [व-लकल हम्दु अन्ता रब्बुस-समावाति वल-अर्जि वमन
 फ़ीहिन्ना], [व-लकल हम्दु लका मुल्कुस-समावाति वल-अर्जि वमन
 फ़ीहिन्ना], [व-लकल हम्दु अन्ता मलिकुस-समावाति वल-अर्जि], [व-

लकल हम्दु], [अन्तल् हक्कु, व वअदुकल हक्कु, व कौलुकल हक्कु, व लिक्राउकल हक्कु, वल-जन्नतु हक्कुन, वन-नारु हक्कुन, वन-नबिय्यूना हक्कुन, व मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हक्कुन, वस-साअतु हक्कुन], [अल्लाहुम्मा लका अस्लम्तु, व अलैका तवक्कल्लु, व बिका आमन्तु, व इलैका अनन्तु, व बिका खासम्तु, व इलैका हाक्कम्तु, फ़िफ़िरी ली मा क़दम्तु, व मा अख़्खर्तु, व मा असर्तु, व मा अअलन्तु], [व मा अन्ता अअलमु बिही मिन्नी], [अन्तल मुक़द्दिमु, व अन्तल मुअख़्खरु ला इलाहा इल्ला अन्त], [अन्ता इलाही ला इलाहा इल्ला अन्त], [वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह]

"ऐ अल्लाह! सारी प्रशंसा तेरी है कि तू आकाशों एवं धरती तथा उनके अंदर मौजूद सारी चीज़ों का प्रकाश है। सारी प्रशंसा तेरी है कि तू आकाशों एवं धरती तथा उनके अंदर मौजूद सारी चीज़ों का संरक्षक है। सारी प्रशंसा तेरी है कि तू आकाशों एवं धरती तथा उनके अंदर मौजूद सारी चीज़ों का पालनहार है। सारी प्रशंसा तेरी है कि तू आकाशों एवं धरती तथा उनके अंदर मौजूद सारी चीज़ों का प्रभु है। सारी प्रशंसा तेरी है कि तू आकाशों एवं धरती तथा उनके अंदर मौजूद सारी चीज़ों का शासक है। सारी प्रशंसा तेरी है कि तू सत्य है, तेरा वचन सत्य है, तेरा कथन सत्य है, तुझसे मिलना सत्य है, जन्नत सत्य है, जहन्नम सत्य है, सारे नबी-गण सत्य हैं, मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- सत्य हैं और क्रयामत सत्य है। ऐ अल्लाह! मैंने तेरे आगे सिर झुकाया, तेरे ऊपर भरोसा किया, तुझपर ईमान रखा, तुझसे नाता जोड़ा, तेरे ज़रिए वाद-विवाद किया और अपने सारे मामलों को तेरे सामने रखा। अतः, मैंने जो भी बुरे कर्म किए, जो भी अच्छे कर्म छोड़े, जो कुछ छुपा कर किया और जिसे तू मुझसे अधिक जानता है, उन सब को माफ़ कर दे। तू ही आगे

¹ नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब रात में तहज्जुद के लिए उठते, तो यह दुआ पढ़ते थे।

करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। तू मेरा पूज्य है और तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। अल्लाह की तौफीक के बिना न किसी के पास अच्छा काम करने की क्षमता है और न बुरे काम से बचने की शक्ति है।"¹

17- रुकू की दुआ

«سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ»

मेरा महान् रब (पालनहार) सर्वथा पवित्र है।

«सुब्हाना रब्बिल अज़ीम»।

तीन बार।²

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي»

सुब्हानका अल्लाहुम्मा रब्बना व बिहम्दिका, अल्लाहुम्मा! फ़र ली

"ऐ अल्लाह! तू पाक है। ऐ हमारे पालनहार! तेरी प्रशंसा है। ऐ अल्लाह!

मुझे क्षमा कर दे।"³

«سُبُّوحٌ، قُدُّوسٌ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ»

सुब्बूहन, कुदूसुन, रब्बुल मलाइकति वरूह

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 3/3, 11/116, 13/371, 423 तथा 465, हदीस संख्या : 1120, 6317, 7385, 7442 तथा 7499। इमाम मुस्लिम ने भी संक्षिप्त रूप से इसी जैसी हदीस रिवायत की है। देखिए : 1/532, हदीस संख्या : 769।

² अबू दाऊद हदीस संख्या : 870, तिरमिज़ी हदीस संख्या : 262, नसई हदीस संख्या : 1007, इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 897 तथा अहमद हदीस संख्या : 3514, देखिए : सहीह तिरमिज़ी 1/831।

³ सहीह बुखारी 1/99 हदीस संख्या : 794 तथा सहीह मुस्लिम 1/350 हदीस संख्या : 484।

"ऐ अल्लाह! तू पवित्र एवं پاک है तथा फ़रिश्तों एवं ज़िबरील का रब है।"¹

«اللَّهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، خَشَعَ لَكَ سَمْعِي، وَبَصَرِي، وَمُخِّي، وَعَظْمِي، وَعَصْبِي، [وَمَا اسْتَقَلَّتْ بِهِ قَدَمِي]»

अल्लाहुम्मा लका रकअतु, व-बिका आमन्तु, व-लका अस्लम्तु, ख'श'अ लका समई, व-बसरी, व-मुखवी, व-अज्मी, व-असबी, [व-मस्तक़ल्लत बिहि क़दमी]

"ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए रुकू किया, तुझपर ईमान रखा और तेरे आगे सिर झुकाया। तेरे सामने नत्मस्तक हुआ मेरा कान, मेरी आँख, मेरा विवेक, मेरी हड्डी, मेरा पट्टा और मेरा पूरा शरीर।"²

«سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ، وَالْمَلَكُوتِ، وَالْكِبَرِيَاءِ، وَالْعَظَمَةِ»

सुब्हाना ज़िल-जबरूति, वल-मलकूति, वल-किब्रियाई, वल-अज़मति
"पवित्र है वह अल्लाह, जो प्रबलता, प्रभुत्व, महानता और विशालता से विसेषित है।"³

¹ सहीह मुस्लिम 1/353 हदीस संख्या : 487 तथा अबू दाऊद 1/230 हदीस संख्या : 8721

² सहीह मुस्लिम 1/534 हदीस संख्या : 771, अबू दाऊद हदीस संख्या : 760 तथा 761, तिरमिज़ी हदीस संख्या 3421 और नसई हदीस संख्या : 1049। दोनों कोष्ठकों के बीच के शब्द इब्न-ए-खुज़ैमा हदीस संख्या : 607 तथा इब्न-ए-हिब्बान हदीस संख्या : 1901 से लिए गए हैं।

³ सुनन अबू दाऊद 1/230 हदीस संख्या : 873, सुनन नसई हदीस संख्या : 1131 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 23980। इसकी सनद हसन है।

18- रुकू से उठाने की दुआ

«سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ»

समिअल्लाहु लिमन हमिदह

"अल्लाह ने उस बंदे की सुन ली, जिसने उसकी प्रशंसा की।"

«رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ»

रब्बना व-लकल हम्दु, हम्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीह

"ऐ हमारे रब, तेरी ही प्रशंसा है, अत्यधिक, पवित्र तथा बरकत वाली प्रशंसा।"²

«مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ، وَمَا بَيْنَهُمَا، وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ. أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ، أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ، وَكُنَّا لَكَ عَبْدُ، اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُ»

मिल्अस-समावाति व मिल्अल-अर्जि, व मा बैनहुमा, व मिल्अ मा शिअता मिन शैइन् बअदु. अहलस-सनाइ वल-मज्दि, अहक्कु मा क़ालल-अब्दु, व कुल्लुना लका अब्दुन, अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा अअतैता, व ला मुअतिया लिमा मनअता, व ला यन्फ़उ ज़ल-जदि मिन्कल-जद

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 2/282, हदीस संख्या : 796।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 2/284, हदीस संख्या : 796।

"आकाशों एवं धरती, उन दोनों के बीच की सारी चीजों और इसके बाद तू जो कुछ चाहे, उसकी समाई के बराबर। ऐ प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा के मालिक! तू बंदे की प्रशंसा का सबसे अधिक हक़दार है और हम सब तेरे बंदे हैं। ऐ अल्लाह! जो कुछ तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं है और जो कुछ तू रोक ले, उसे कोई देने वाला नहीं है तथा किसी प्रतिष्ठावान व्यक्ति की प्रतिष्ठा तेरे यहाँ कुछ काम नहीं दे सकती।"

19- सजदे की दुआ

«سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى»

सुब्हाना रब्बियल आला

«सुब्हाना रब्बियल अअ्ला» यानी मेरा उच्च एवं महान पालनहार पवित्र है।

तीन बार²

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي»

सुब्हानका अल्लाहुम्मा रब्बना व बिहम्दिका, अल्लाहुम्मा! फ़र ली

"ऐ अल्लाह! तू पाक है। ऐ हमारे पालनहार! तेरी प्रशंसा है। ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दो।"³

«سُبُّوحٌ، قُدُّوسٌ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ»

¹ सहीह मुस्लिम 1/346, हदीस संख्या : 4771

² अबू दाऊद हदीस संख्या : 870, तिरमिज़ी : 262, नसई हदीस संख्या : 1007, इब्न-ए-माज़ा हदीस संख्या : 897 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 3514, देखिए : सहीह तिरमिज़ी 1/831

³ सहीह बुखारी हदीस संख्या : 794 तथा सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : 484। यह हदीस पीछे हदीस क्रमांक 34 के तहत गुजर चुकी है।

सुब्बूहन, कुदूसुन, रब्बुल मलाइकति वरूह

"ऐ अल्लाह! तू पवित्र एवं पाक है तथा फ़रिश्तो एवं जिबरील का रब है।"¹

«اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِي
لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ
الْخَالِقِينَ»

अल्लाहुम्मा लका सजदतु व-बिका आमन्तु, व-लका अस्लम्तु, स'ज'द
वजिहया लिल्लज्जी ख'ल'क'हु, व-सव्वरहु, व-शक्का सम्'हु व-बसरहु,
तबारकल्लाहु अह्सनुल खालिकीन

"ऐ अल्लाह! मैंने तेरे सामने सजदा किया, मैं तुझपर ईमान लाया और
तेरे सामने नतमस्तक हुआ। मेरा चेहरा उसके लिए सजदे में गया, जिसने उसे
पैदा किया, उसे आकृति दी और उसकी सुनवाई और उसकी दृष्टि के लिए
जगह बनाया। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, जो सबसे अच्छा उत्पत्तिकार
है।"²

«سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ، وَالْمَلَكُوتِ، وَالْكِبْرِيَاءِ، وَالْعَظَمَةِ»

सुब्हाना ज़िल जबरूति, वल मलकूति, वल किब्रियाइ, वल अज़मति

¹ सहीह मुस्लिम 1/533 हदीस संख्या : 487 तथा सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 872। यह हदीस इससे
पहले हदीस क्रमांक 35 के तहत गुजर चुकी है।

² सहीह मुस्लिम 1/534 हदीस संख्या : 771 आदि।

"पवित्र है वह अल्लाह, जो प्रबलता, प्रभुत्व, महानता और विशालता से विसेषित है।"¹

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ: دِقَّةً وَجِلَّةً، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ، وَعَلَانِيَتَهُ

وَسِرَّهُ»

अल्लाहुम् इफ़िर् ली ज़म्बी कुल्लहु: दिक्क़हु व ज़िल्लहु, व अव्वलहु व आख़िरहु, व अलानिय्यतहु व सिर्रहु

"ऐ अल्लाह! तू मेरे समस्त पापों को क्षमा कर दे; छोटे-बड़े, अगले-पिछले तथा खुले एवं छुपे सभी को।"²

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ، لَا أَحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिरिज़ाका मिन सख़तिका, व-बिमुआफ़ातिका मिन उक़ूबतिका, व-अऊज़ु बिका मिन्का, ला उहसी सनाअन अलैका, अन्ता कमा असनैता अला नफ़्सिका।

"ऐ अल्लाह! मैं तेरे क्रोध से तेरी प्रसन्नता की शरण माँगता हूँ, तेरी सज़ा से तेरे क्षमादान की शरण माँगता हूँ और तुझसे तेरी शरण में आता हूँ मैं तेरी

¹ अबूद दाऊद 1/230 हदीस संख्या : 873, नसई हदीस संख्या : 1131 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 23980। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 1/166 में सहीह कहा है। इसके संदर्भों का उल्लेख इससे पहले हदीस संख्या 37 के तहत हो चुका है।

² सहीह मुस्लिम 1/230 हदीस संख्या : 4831

समपूर्ण प्रशंसा नहीं कर सकता। तू वैसा ही है, जैसा तूने अपनी प्रशंसा स्वयं की है।"¹

20- दो सजदों के बीच बैठने की अवस्था में पढ़ी जाने वाली दुआ

«رَبِّ اغْفِرْ لِي، رَبِّ اغْفِرْ لِي»

रब्बिग़्फ़िर ली, रब्बिग़्फ़िर ली

"ऐ मेरे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे ऐ मेरे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे"²

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَاجْبُرْنِي، وَعَافِنِي،

وَارْزُقْنِي، وَارْفَعْنِي»

अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली, वर्हम्नी, वह्दिनी, वज्बुर्नी, व-आफ़िनी, वर्जुक्नी, वर्फ़अनी

"ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा प्रदान कर, मुझपर दया कर, मुझे सत्य का मार्ग दिखा, मेरी चारागरी कर, मुझे हर विपत्ति से सुरक्षित रख, मुझे रोज़ी प्रदान कर और मुझे ऊँचा कर दे।"³

¹ सहीह मुस्लिम 1/352 हदीस संख्या : 486।

² सुनन अबू दाऊद 1/231 हदीस संख्या : 874 तथा सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 897। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 1/148।

³ सुनन अबू दाऊद 1/231 हदीस संख्या : 850, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 284 तथा 285 और सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 898। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 1/90 तथा सहीह इब्न-ए-माजा 1/148।

21- सजदा-ए-तिलावत की दुआ

«سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ،

فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ»

स'ज'द वज्हिया लिल्लज़ी ख'ल'क'हु, व-शक्का सम्अहु व-बसरहु
बिहौलिहि व-कुव्वतिहि, फ़-तबारकल्लाहु अह्सनुल ख़ालिकीन

"मेरे चेहरे ने उसके सामने सजदा किया, जिसने उसे पैदा किया तथा
अपने सामर्थ्य एवं शक्ति के बल पर उसकी सुनवाई और उसकी दृष्टि के लिए
जगह बनाया। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, जो सबसे अच्छा पैदा करने
वाला है।"

[सूरा मोमिनून : 14]¹.

«اللَّهُمَّ اكْتُبْ لِي بِهَا عِنْدَكَ أَجْرًا، وَضَعْ عَنِّي بِهَا وَزْرًا، وَاجْعَلْهَا

لِي عِنْدَكَ ذُخْرًا، وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ»

अल्लाहुम्मा उक्तुब ली बिहा इन्दका अज़्रन, व-ज़अ् अन्नी बिहा विज़्रन,
वज़अल्हा ली इन्दका ज़ुज़्रन, व-तक़ब्बल्हा मिन्नी कमा तक़ब्बलतहा मिन
अब्दिका दावूद

"ऐ अल्लाह! तू अपने यहाँ मेरे लिए इस सजदे का प्रतिफल लिख ले,
इसके बदले में मेरा गुनाह मिटा दे, इसे अपने यहाँ मेरा कोश बना दे और इसे

¹ सुनन तिरमिज़ी 2/474, हदीस संख्या : 3425, मुसनद-ए-अहमद 6/30, हदीस संख्या : 24022 और
मुसतदरक हाकिम 1/220। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनके कथन से सहमति व्यक्त की
है। वृद्धि वाला भाग मुसतदरक हाकिम ही से लिया गया है। जबकि आयत सूरा अल-मोमिनून, आयत
संख्या : 14 से ली गई है।

मेरी ओर से उसी तरह ग्रहण कर ले, जैसे अपने बंदे दाऊद की ओर से ग्रहण किया था।¹

22- तशहहद

«التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ، وَالصَّلَوَاتُ، وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ
وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ
أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ»

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि, वस्सलवातु, वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अलैका
अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला
इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना
मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुह

"हर प्रकार का सम्मान, समग्र दुआएँ एवं समस्त अच्छे कर्म व अच्छे
कथन अल्लाह के लिए हैं। हे नबी! आपके ऊपर सलाम, अल्लाह की कृपा
तथा उसकी बरकतों की वर्षा हो। हमारे ऊपर एवं अल्लाह के भले बंदों के
ऊपर भी सलाम की जलधारा बरसे। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा
कोई सत्य पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के बंदे
तथा उस के रसूल हैं।"²

¹ सुन्न तिरमिज़ी 2/473 तथा हाकिम 1/219। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनके कथन की पुष्टि की है।

² सहीह बुखारी 2/311, हदीस संख्या : 831 तथा मुस्लिम 1/301, हदीस संख्या : 4021

23- तशहूद के बाद अल्लाह के नबी-सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-पर दरूद

«اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى
إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى
مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ
إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ»

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन, व अला आलि मुहम्मदिन, कमा
सल्लैता अला इब्राहीमा, व अला आलि इब्राहीमा, इन्नका हमीदुन मजीद,
अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन, कमा
बारकता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा, इन्नका हमीदुन मजीद

"हे अल्लाह! मुहम्मद एवं उनकी संतान-संतति की उसी प्रकार से प्रशंसा
कर, जिस प्रकार से तू ने इबराहीम एवं उनकी संतान-संतति की प्रशंसा की है।
निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद तथा उनकी
संतान-संतति पर उसी प्रकार से बरकतों की बारिश कर, जिस प्रकार से तू ने
इबराहीम एवं उनकी संतान-संतति पर की है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा
सम्मानित है।"¹

¹ बुखारी फ्रह अल-बारी के साथ 6/408, हदीस संख्या : 3370 तथा मुस्लिम : 4061

«اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا صَلَّيْتَ
عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا
بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ»

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व अला अज्रवाजिही व
जुर्रिय्यतिही, कमा सल्लैता अला आलि इब्राहीमा, व बारिक अला
मुहम्मदिन व अला अज्रवाजिही व जुर्रिय्यतिही, कमा बारक्ता अला आलि
इब्राहीमा, इन्का हमीदुन मजीद

"ऐ अल्लाह! मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की और उनकी
पत्नियों तथा संतान-संतति की उसी प्रकार से प्रशंसा कर, जैसे इबराहीम -
अलैहिस्सलाम- की संतान-संतति की प्रशंसा की है। निश्चय ही, तू प्रशंसायोग्य
और सम्मानित है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-
और आपकी पत्नियों तथा संतान-संतति में उसी प्रकार बरकत दे, जैसे
इबराहीम -अलैहिस्सलाम- के अंदर बरकत रखी थी। निश्चय ही, तू प्रशंसा-
योग्य और सम्मानित है।"

24- अंतिम तशह्हुद के बाद सलाम से पहले की दुआ

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ،
وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ»

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 6/407, हदीस संख्या : 3369, तथा मुस्लिम 1/306, हदीस
संख्या : 407। शब्द सहीह मुस्लिम के हैं।

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिल क़ब्रि, व मिन अज़ाबि जहन्नमा, व मिन फ़ित्नतिल मह्या वल-ममाति, व मिन शरि फ़ित्नतिल मसीहिद् दज्जाल

"हे अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, नरक की यातना से, क़ब्र के अज़ाब से, जीवन और मृत्यु के फितने से और मसीह दज्जाल के फितने से।"¹

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिल क़ब्रि, व-अऊज़ु बिका मिन फ़ित्नतिल मसीहिद् दज्जालि, व-अऊज़ु बिका मिन फ़ित्नतिल मह्या वल-ममाति, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल-मअसमि वल-मग्रमि।

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ क़ब्र की यातना से, मैं तेरी शरण माँगता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ितने से और मैं तेरी शरण माँगता हूँ जीवन-मरण के फ़ितने से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ गुनाह तथा क़र्ज से।"²

¹ सहीह बुखारी 2/102, हदीस संख्या : 1377 तथा मुस्लिम 1/412, हदीस संख्या : 588, शब्द सहीह मुस्लिम के हैं।

² सहीह बुखारी 1/202, हदीस संख्या : 832, तथा मुस्लिम 1/412, हदीस संख्या : 587।

«اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ، فَاعْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ»

अल्लाहुम्मा इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन क़सीरन, वला यफ़्फ़िरुज़ जुनूबा इल्ला अन्ता, फ़ाफ़िर ली मफ़्फ़िरतम् मिन इन्दिका वर्हम्नी, इन्नका अन्तल ग़ाफ़ूर रहीमा।

"ऐ अल्लाह! मैंने अपने आप पर बड़ा अत्याचार किया है और तेरे सिवा कोई पापों को क्षमा नहीं कर सकता। इसलिए मुझे अपनी ओर से क्षमा प्रदान कर और मुझपर दया कर। निःसंदेह तू ही क्षमा करने वाला, अति दयालु है।"

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ، وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ، وَمَا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ»

अल्लाहुम्मफ़िर ली मा क़दमत्तु, वमा अख़्खर्तु, वमा असरर्तु, वमा अअ्लन्तु, वमा असरप्तु, वमा अन्त अअ्लमु बिहि मिन्नी, अन्तल मुक्कद्दिमु, व-अन्तल मुअख़्खरु ला इलाह इल्ला अन्त

"हे अल्लाह, तू मेरे पापों तथा कोताहियों को क्षमा कर दे, मेरे छिपाकर किए गए गुनाहों को माफ़ कर दे, मेरे दिखाकर किए गए गुनाहों को माफ़ कर दे, मेरी ओर से की गई ज़्यादतियों को माफ़ कर दे तथा उन गुनाहों को भी

¹ सहीह बुखारी 8/168, हदीस संख्या : 834 तथा सहीह मुस्लिम 4/2078, हदीस संख्या : 27051

माफ़ कर दे, जिन्हें तू मुझसे अधिक जानता है। तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं"।

«اللَّهُمَّ اَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ»

अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिका, व-शुक्रिका, व-हुस्नि इबादतिक
"ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, शुक्र और अच्छी तरह इबादत करने के संबंध में मेरी मदद फ़रमा।"²

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजु बिका मिनल बुख्लि, व-अऊजु बिका मिनल जुब्नि, व-अऊजु बिका मिन अन उरद्दा इला अर्ज़लिल उमुरि, व अऊजु बिका मिन फ़ित्नतिद् दुन्या व अज़ाबिल क़ब्र

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ कृपणता से, मैं तेरी शरण में आता हूँ कायरता से, मैं तेरी शरण में आता हूँ लाचारी की आयु में लौटाए जाने से तथा मैं तेरी शरण में आता हूँ दुनिया के फ़ितने एवं क़ब्र की यातना से।"³

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल जन्नता, व अऊजु बिका मिनन् नार

¹ सहीह मुस्लिम 1/534, हदीस संख्या : 7711

² सुनन अबू दाऊद 2/86, हदीस संख्या : 1522 और सुनन नसई 3/53, हदीस संख्या : 2302। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 1/284 में सहीह कहा है।

³ बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 6/35, हदीस संख्या : 2822 तथा 6390।

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत माँगता हूँ और जहन्नम से तेरी शरण में आता हूँ"¹

«اللَّهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبِ وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ أَحْيِنِي مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْرًا لِي، وَتَوَفَّنِي إِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَشْيَتِكَ فِي الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، وَأَسْأَلُكَ كَلِمَةَ الْحَقِّ فِي الرِّضَا وَالْغَضَبِ، وَأَسْأَلُكَ الْقَصْدَ فِي الْغِنَى وَالْفَقْرِ، وَأَسْأَلُكَ نَعِيمًا لَا يَنْفَدُ، وَأَسْأَلُكَ قُرَّةَ عَيْنٍ لَا تَنْقُطُ، وَأَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ، وَأَسْأَلُكَ بَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَأَسْأَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ، وَالشَّوْقَ إِلَى لِقَائِكَ فِي غَيْرِ ضَرَاءٍ مُضِرَّةٍ، وَلَا فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ، اللَّهُمَّ زَيْنًا بِزِينَةِ الْإِيمَانِ، وَاجْعَلْنَا هُدًى مُهْتَدِينَ»

अल्लाहुम्मा बि-इल्मिकल ग़ैबा व कुदरतिका अलल् खल्कि, अहयिनी मा अलिमतल् हयाता ख़ैरन ली, व-तवफ़्फ़नी इज़ा अलिमतल वफ़ाता ख़ैरन ली, अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका ख़श्यतका फ़िल ग़ैबि वश-शहादति, व-असअलुका कलिमतल हक्कि फ़िर-रिज़ा वल ग़ज़बि, व-अस्अलुकल क़स्दा फ़िल ग़िना वल फ़क्कि, व-असअलुका नईमन ला यन्फ़दु, व-असअलुका क़ुरता ऐनिन ला तनक़तिउ, व-असअलुकर-रिज़ा बअदल क़ज़ाइ, व-असअलुका बर्दल ऐशि बअदल मौति, व-अस्अलुका लज़ज़तन्

¹ सहीह अबू दाऊद हदीस संख्या 792 तथा इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 910, देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/328।

नज़रि इला वज्हका, वश-शौका इला लिकाइका फ़ी ग़ैरि ज़र्रा-अ मुज़िर्तितिन,
व-ला फ़ित्नतितिन मुज़िल्लतितिन, अल्लाहुम्मा ज़य्यिन्ना बिज़ीनतिल ईमानि,
वज्अल्ना हुदातन मुहतदीन।

"ऐ अल्लाह! मैं तेरे ग़ैब की बात जानने तथा सृष्टि पर तेरे सामर्थ्य का वास्ता देकर तुझसे विनती करता हूँ कि मुझे उस समय तक जीवित रख जब तक तेरे ज्ञान के अनुसार जीना मेरे लिए अच्छा हो, तथा उस समय मौत दे दे जब तेरे ज्ञान के अनुसार मर जाना ही मेरे लिए अच्छा हो। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरा ऐसा भय माँगता हूँ जो ज़ाहिर एवं बातिन में हो, शांत तथा क्रोधित स्थिति में सत्य बात कहने का सुयोग माँगता हूँ, संपन्नता तथा दरिद्रता जैसी अवस्थाओं में संतुलन माँगता हूँ, ऐसी नेमत माँगता हूँ जो कभी खत्म न हो, आँखों की ऐसी ठंडक माँगता हूँ जिसका सिलसिला कभी न टूटे। मैं तेरा निर्णय सामने आने के बाद उससे संतुष्ट रहने का सुयोग माँगता हूँ, मृत्यु के बाद सुखी जीवन माँगता हूँ, तेरे मुखमंडल को देखने का सौभाग्य माँगता हूँ और तुझसे मिलने की अभिलाषा माँगता हूँ। ऐसी अभिलाषा, जिसमें न विनाशकारी हानि हो और न पथभ्रष्ट कर देने वाला फ़ितना। ऐ अल्लाह! हमें ईमान की शोभा से सुशोभित कर तथा हमें सत्य के मार्ग पर चलने वाला तथा उसका प्रचारक बना।"¹

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ يَا اللَّهُ بِأَنَّكَ الْوَاحِدُ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ، أَنْ تَغْفِرَ لِي ذُنُوبِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ»

¹ सुनन नसई 3/54,55, हदीस संख्या : 1304 तथा मुसनद-ए-अहमद 4/364, हदीस संख्या : 21666, अलबानी ने इसे सहीह सुनन नसई 1/281 में सहीह कहा है।

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका या अल्लाहु बिअन्नकल वाहिदुल अहदुस समदुल लजी लम् यलिद व लम् यूलद, व लम् यकुल्लहु कुफुवन अहदुन, अन तःफ़िरा ली जुनूबी इन्नका अन्तल ग़फ़ूर रहीमा।

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस बात के आधार पर कि तू अकेला और बेनियाज़ है, न तेरी कोई संतान है और न तू किसी की संतान है और न कोई तेरा समकक्ष है, विनती करता हूँ कि मेरे गुनाहों को क्षमा कर दे। निःसंदेह तू बहुत क्षमा करने वाला और दयालु है।"

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا

شَرِيكَ لَكَ، الْمَنَّانُ، يَا بَدِيعَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ

وَالْإِكْرَامِ، يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका बिअन्ना लकल हम्दा ला इलाहा इल्ला अन्ता वह्दका ला शरीका लका, अलमन्नानु, या बदीअस समावाति वल-अर्जि या ज़ल जलालि वल-इक्रामि, या हय्यु या कय्यूमु इन्नी अस्अलुकल जन्नता व अऊज़ु बिका मिनन् नारि

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस आधार पर विनती करता हूँ कि सारी प्रशंसा तेरी है, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं है, और तू बड़ा उपकारी एवं दाता है। ऐ आकाशों तथा धरती के रचयिता! ऐ

¹ सुन्न नसई 3/52, हदीस संख्या : 1300। शब्द उसी के हैं। मुसनद-ए-अहमद 4/338, हदीस संख्या : 18974। अलबानी ने इसे सहीह नसई 1/280 में सहीह कहा है।

विशाल प्रभु एवं दाता! ऐ जीवित तथा नित्य स्थायी! मैं तुझसे जन्नत माँगता हूँ और जहन्नम से तेरी शरण माँगता हूँ।¹

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ
الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अलुका बिअन्नी अशहदु अन्नका अन्ता
अल्लाहु ला इलाहा इल्ला अन्ता अल-अहदु अस-समदु अल्लज्जी लम्
यलिद व लम् यूलद व लम् यकुल् लहु कुफुवन अहद

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे विनती करता हूँ, क्योंकि मैं गवाही देता हूँ कि तेरे
सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू अकेला है, बेनियाज़ है, न तेरी कोई संतान
है और न तू किसी की संतान है और न कोई तेरा समकक्ष है।"²

25- सलाम फेरने के बाद के अज़कार

«أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ»

अस्तग़फ़िरुल्लाह

«मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ

(तीन बार)।

¹ अबू दाऊद हदीस संख्या : 1495, तिरमिज़ी : 3544, इब्न-ए-माजा : 3858 और नसई हदीस संख्या : 1299। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/329।

² सुनन अबू दाऊद 2/62 हदीस संख्या : 1493, सुनन तिरमिज़ी 5/515 हदीस संख्या : 3475, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या 2/1267, सुनन नसई हदीस संख्या : 1300 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 18974। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/329 तथा सहीह तिरमिज़ी 3/163।

«اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ، وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ

وَالْإِكْرَامِ»

अल्लाहुम्मा अन्तस् सलामु, व-मिन्कस् सलाम, तबारक्ता या ज़ल
जलालि वल इकराम

"ऐ अल्लाह! तू ही सुरक्षा तथा शांति का मालिक है और तेरी ही ओर
से सुरक्षा एवं शांति प्राप्त होती है। हे महानता और भलाई वाले ! तू बड़ी
बरकतों वाला है।"

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु वलहुल
हम्दु व-हुवा अला कुल्लि शै-इन क़दीर

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका
कोई साझी नहीं है, उसी का राज्य है, उसी की सब प्रशंसा है और वह प्रत्येक
चीज़ का सामर्थ्य रखता है।"

[तीन बार।]

«اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا

الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ»

¹ सहीह मुस्लिम 1/414, हदीस संख्या : 5911

अल्लाहुम्मा ला मानिअ लिमा अअतैता, व ला मुअतिया लिमा मनअता, व-ला यन्फउ ज़ल-जदि मिन्कल-जद्

"ऐ अल्लाह! जो कुछ तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं है और जो कुछ तू रोक ले, उसे कोई देने वाला नहीं है तथा किसी प्रतिष्ठावान व्यक्ति की प्रतिष्ठा तेरे यहाँ कुछ काम नहीं दे सकती।"

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ لَهُ النُّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ»

ला इलाहा इल्लल्लाह वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व-लहुल् हम्दु, व-हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, ला हौला व-ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाहु, व ला नअबुदु इल्ला इय्याहू लहुन् निअमतु व-लहुल् फ़ज़्लु व लहुस-सनाउल हसन, ला इलाहा इल्लल्लाहु मुख़िलसीना लहुद् दीना व लौ करिहल काफ़िरून

"अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी की बादशाहत है और उसी की सब प्रशंसा है और वह हर काम में सक्षम है। अल्लाह के अतिरिक्त न कोई भलाई का सामर्थ्य प्रदान कर सकता है और न बुराई से रोकने की क्षमता रखता है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा उपास्य नहीं है, हम केवल उसी की उपासना करते हैं, उसी

¹ सहीह बुखारी 1/255 हदीस संख्या : 844 तथा सहीह मुस्लिम 1/414 हदीस संख्या : 593। दोनों कोष्ठकों के बीच की वृद्ध सहीह बुखारी हदीस संख्या : 6473 से ली गई है।

की सब नेमतें हैं और उसी का सब पर उपकार है और उसी के लिए समस्त अच्छी प्रशंसाएँ हैं। अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, हम उसी के लिए धर्म को शुद्ध करते हैं, चाहे ये बात काफिरों को नागवार लगती हो।"

«سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ»

सुब्हानल्लाहि, वलहमदुलिल्लाहि, वल्लाहु अकबर
 «अल्लाह पवित्र है, सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह सबसे बड़ा है
 (तैंतीस बारा)

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

"अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी की बादशाहत है और उसी की सब प्रशंसा है और वह हर काम में सक्षम है।"²

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝﴾

¹ सहीह मुस्लिम 1/415 हदीस संख्या : 594।

² सहीह मुस्लिम 1/418 हदीस संख्या : 597। उसमें आगे है : "जिसने हर नमाज़ के बाद इस ज़िक्र की पाबंदी की, उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, चाहे वह समुद्र की झाग के समान ही क्यों न हों।"

“(आप) कह दीजिए कि अल्लाह एक है।

अल्लाह निःछिद्र है।

न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

और न उसके बराबर कोई है।

[सूरा इखलास : 1-4]

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝۳ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝۴ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝۵﴾

"(ऐ नबी!) कह दीजिए कि मैं भोर के रब की शरण लेता हूँ।

हर उस चीज़ की बुराई से, जिसे उसने पैदा किया।

तथा रात की बुराई से, जब उसका अंधेरा छा जाए।

तथा गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से।

तथा ईर्ष्या करने वाले की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।

[सूरा फ़लक़ : 1-5]

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝۱ مَلِكِ النَّاسِ ۝۲ إِلَهِ النَّاسِ ۝۳ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝۴ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝۵ مِنَ الْغَيْبَةِ وَالنَّاسِ ۝۶﴾

"(ऐ नबी!) कह दीजिए कि मैं मनुष्यों के रब की शरण में आता हूँ।

जो सारे इन्सानों का स्वामी है।

जो सारे इन्सानों का पूज्य है।

भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (शैतान) की बुराई से
जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
जो जिन्यों में से है और मनुष्यों में से भी।

[सूरा नास : 1-6]

हर नमाज़ के बाद।¹

﴿اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَّهٗ
مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ مَن ذَا الَّذِى يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖ
اِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهٗ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا
وَهُوَ الْعَلِىُّ الْعَظِيْمُ ﴿١٥٥﴾

“अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थायी है। ना उसे ऊँघ आती है और ना निद्रा आती है। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, उन सब को अल्लाह जानता है। लोग उसके ज्ञान में से उतना ही जान सकते हैं, जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोए हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च, महान है।”

¹ सुनन अबू दाऊद 2/86 हदीस संख्या : 1523, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 2903 तथा सुनन नसई 3/68 हदीस संख्या : 1335। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 2/8। इन तीन सूरतों को "अल-मुअ्व्वज़ात" कहा जाता है। यानी ऐसी सूरतें जिनकी ज़रिए अल्लाह की शरण माँगी जाए। देखिए : फ़तह अल-बारी 9/62।

[सूरा बक्रा : 255] इसे हर नमाज़ के बाद पढ़ा जाए।

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व-हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का सारा राज्य और उसी की सब प्रशंसा है, वह जीवन और मृत्यु देता है और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।"

इसे मग़िब तथा फ़ज़्र की नमाज़ के बाद दस बार पढ़ा जाएगा।²

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا، وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا»

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका इल्मन नाफ़िअन, व-रिज़्कन तय्यिबन, व अमलन मुतक़ब्बलन

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे लाभकारी ज्ञान, पवित्र रोज़ी एवं ग्रहण होने वाला अमल माँगता हूँ।"

¹ जिसने हर नमाज़ के बाद इसे पढ़ा, उसे जन्नत में प्रवेश से मृत्यु के अतिरिक्त कोई चीज़ बचा नहीं सकती। देखिए: नसई की किताब अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 100 तथा इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 121। अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे 5/339 तथा सिलसिला अल-अहादीस अस-सहीहा 2/697 हदीस संख्या : 972 में सहीह कहा है। इसमें दर्ज आयत सूरा अल-बक्रा की आयत संख्या : 255 से ली गई है।

² सुनन तिरमिज़ी 5/515 हदीस संख्या : 3474 तथा मुसनद-ए-अहमद 4/227 हदीस संख्या : 17990। इसके विस्तृत संदर्भों के लिए देखिए : ज़ाद अल-मआद 1/300।

फ़ज्र की नमाज़ में सलाम फेरने के बाद का ज़िक्र।

26- इस्तिख़ारा की नमाज़ की दुआ

जाबिर बिन अब्दुल्लाह -रज़ियल्लाहु अन्हुमा- से रिवायत है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- हमें सभी कामों के लिए उसी प्रकार इस्तिख़ारा सिखाते थे, जिस प्रकार हमें कुरआन की सूरा सिखाते थे। आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- फरमाते हैं: "जब तुम में से किसी को कोई महत्वपूर्ण काम करना हो तो फ़र्ज़ नमाज़ के अतिरिक्त दो रक्'अत पढ़े और फिर यह दुआ पढ़े :

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ؛ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ - وَيُسَمِّي حَاجَتَهُ - خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمْرِي - أَوْ قَالَ: عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ - فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمْرِي - أَوْ قَالَ: عَاجِلِهِ

¹ सुन्नन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 925 तथा नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह हदीस संख्या : 1021
देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 1/152 तथा मजमा अज़-ज़वाइद 10/11। आगे यह हदीस हदीस संख्या : 95 के तहत भी आएगी।

وَأَجَلِهِ - فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدُرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ،
ثُمَّ أَرْضِنِي بِهِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्तखीरुका बिइल्मिका, व अस्तक्रदिरुका
बिक्दरतिका, व अस्अलुका मिन फ़ज़िलकल् अज़ीम; फ़इन्नका तक्रदिरु
वला अक्रदिरु, व-तअलमु वला अअलमु, व अन्ता अल्लामुल् गुयूब,
अल्लाहुम्मा इन कुन्ता तअलमु अन्ना हाज़ल अम्रा - व युसम्मी हाज़तहु -
खैरुन् ली फ़ी दीनी व मआशी व आक्रिबति अम्री - औ क़ाल: अज़िलिही
व अज़िलिही - फ़क्रदुहु ली व यस्सिहु ली सुम्मा बारिक ली फ़ीहि, व इन
कुन्ता तअलमु अन्ना हाज़ल अम्रा शरुन् ली फ़ी दीनी व मआशी व
आक्रिबति अम्री - औ क़ाल: अज़िलिही व अज़िलिही - फ़सिफ़हु अन्नी
वसिफ़नी अन्हु वक्रदुर लियल खैरा हैसु काना, सुम्मा अर्ज़िनी बिह

ऐ अल्लाह! मैं तेरे अपार ज्ञान के कारण तुझसे भलाई माँगता हूँ, तेरे
असीम सामर्थ्य के कारण तुझसे सामर्थ्य माँगता हूँ, और तुझसे तेरे बड़े अनुग्रह
का प्रार्थी हूँ। क्योंकि तू सामर्थ्यवान है, मैं सामर्थ्य नहीं रखता और तू जानता
है, मैं नहीं जानता। ऐ अल्लाह! यदि तू जानता है कि यह कार्य (यहाँ कार्य का
नाम लेकर बताए) मेरे धर्म, मेरी दुनिया और मेरी आखिरत के लिए बेहतर है,
(या यूँ कहे कि मेरी इस दुनिया और उस दुनिया के लिए बेहतर है) तो इसे मेरे
लिए निर्धारित कर दे तथा इसे करना मेरे लिए सरल बना दे और फिर मेरे लिए
उसमें बरकत भी रख दे। लेकिन यदि तू जानता है कि यह कार्य मेरे धर्म, मेरी
दुनिया और मेरी आखिरत के लिए बेहतर नहीं है, (या यूँ कहे कि मेरी इस
दुनिया और उस दुनिया के लिए बेहतर नहीं है) तो उसको मुझसे और मुझको

उससे दूर फ़रमा और मेरे लिए भलाई निश्चित कर दे, जहाँ कहीं भी हो और फिर मुझे उसपर संतुष्टि प्रदान करा।"¹

याद रहे कि जिसने अल्लाह से भलाई तलब की, इमानदार लोगों का परामर्श लिया और पूरी लगन के साथ काम किया, वह शर्मिदा नहीं हो सकता। उच्च एवं पाक अल्लाह का फ़रमान है :

﴿...وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ...﴾

"तथा उनसे भी मामले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो, तो अल्लाह पर भरोसा करो।"²

27- सुबह तथा शाम के अज़कार

"हर प्रकार की प्रशंसा और स्तुति केवल अल्लाह के लिए है तथा उसकी दया और शांति अवतरित हो उसके अंतिम संदेशा मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर।"³

"मैं धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।"

﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾

¹ सहीह बुखारी 7/162, हदीस संख्या : 11621

² सूर आल-ए-इमरान, आयत संख्या : 159

³ अनस -रज़ियल्लाहु अनहु- अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से रिवायत करते हुए कहते हैं : मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना, जो फ़ज़्र की नमाज़ से सूर्य निकलते समय तक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं, इस बात से अधिक प्रिय है कि इसमाईल -अलैहिस्सलाम- की नस्ल के तीन दासों को मुक्त कर दूँ। इसी तरह ऐसे लोगों के साथ बैठना, जो अस्त्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं, इस बात से अधिक प्रिय है कि चार दास मुक्त करूँ। सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 3667। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 2/698 में हसन कहा है।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ ۚ
إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

“अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थायी है। ना उसे ऊँघ आती है और ना निद्रा आती है। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, उन सब को अल्लाह जानता है। लोग उसके ज्ञान में से उतना ही जान सकते हैं, जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोए हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च, महान है।”]

[सूरा बक्रा : 255]¹

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝﴾ وَلَمْ
يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ﴿٤﴾

“(आप) कह दीजिए कि अल्लाह एक है।

अल्लाह निःछिद्र है।

न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

और न उसके बराबर कोई है।

¹ सूरा अल-बक्रा, आयत : 255। जिसने सुबह इसे कहा उसे शाम तक शैतान से बचाया जाएगा, और जिसने शाम को इसे कहा उसे सुबह तक शैतान से बचाया जाएगा। मुसतदरक हाकिम 1/562। अलबानी ने इसे सहीह अत-तरगीब व अत-तरहीब 1/273 में सहीह कहा है और नसई तथा तबरानी की ओर मनसूब किया है और कहा है कि तबरानी की इसनाद जय्यद है।

[सूरा इखलास : 1-4]

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝۳ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝۴ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝۵﴾

"(ऐ नबी!) कह दीजिए कि मैं भोर के रब की शरण लेता हूँ।
हर उस चीज़ की बुराई से, जिसे उसने पैदा किया।
तथा रात की बुराई से, जब उसका अंधेरा छा जाए।
तथा गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से।
तथा ईर्ष्या करने वाले की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।

[सूरा फलक : 1-5]

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝۱ مَلِكِ النَّاسِ ۝۲ إِلَهِ النَّاسِ ۝۳ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝۴ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝۵ مِنَ الْغِيَّةِ وَالنَّاسِ ۝۶﴾

"(ऐ नबी!) कह दीजिए कि मैं मनुष्यों के रब की शरण में आता हूँ।
जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
जो सारे इन्सानों का पूज्य है।
भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (शैतान) की बुराई से।
जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
जो जिन्नों में से है और मनुष्यों में से भी।

[सूरा नास : 1-6] तीन बार।¹

«أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ
لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، رَبِّ
أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا
فِي هَذَا الْيَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوءِ الْكِبَرِ،
رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ»

अस्बह्ना व अस्बहल मुल्कु लिल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि, ला इलाहा
इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व-हुवा अला
कुल्लि शैइन क़दीर, रब्बि असअलुक ख़ैरा मा फ़ी हाज़ल यौमि व ख़ैरा मा
बअदहू, व अऊज़ु बिका मिन शरि मा फ़ी हाज़ल यौमि व शरि मा बअदहू,
रब्बि अऊज़ु बिका मिनल कसलि व सूइल किबारि, रब्बि अऊज़ु बिका मिन
अज़ाबिन फ़िन् नारि व अज़ाबिन फ़िल क़ब्रि।

"हमने तथा अल्लाह के राज्य ने सुबह की, सारी प्रशंसा अल्लाह की है,
अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी
नहीं है, सारा राज्य उसी का है और सब प्रशंसा उसी की है और वह हर बात
की क्षमता रखता है। ऐ मेरे पालनहार! मैं तुझसे इस दिन की तथा इसके बाद
की भलाइयाँ माँगता हूँ। इसी तरह इस दिन की तथा इसके बाद की बुराइयों
से तेरी शरण में आता हूँ। ऐ मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण में आता हूँ सुस्ती

¹ जिसने सुबह या शाम को इन सूत्रों को पढ़ लिया, उसे यह सूत्रें हर चीज़ से बचाने के लिए काफ़ी होंगी।
सुनन अबू दाऊद 4/322 हदीस संख्या : 5082 और सुनन तिरमिज़ी 5/567 हदीस संख्या : 3575,
देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/182।

तथा बुढ़ापे की बुराई से। ऐ मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ आग की यातना और क्रब्र के अज़ाब से।¹

और शाम को कहे :

«أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ، وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ، وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوءِ الْكِبَرِ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ»

अम्सैना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि, ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शै-इन क़दीर, रब्बि अस-अलुका ख़ैरा मा फ़ी हाज़िहिल लैलति, व ख़ैरा मा बअ-दहा, व अऊज़ु बिका मिन शरि मा फ़ी हाज़िहिल लैलति, व शरि मा बअ-दहा, रब्बि अऊज़ु बिका मिनल कसलि व सू-इल किबरि, रब्बि अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिन फ़िन-नारि व अज़ाबिन फ़िल-क्रब्र

"हमने तथा अल्लाह के राज्य ने शाम की, सारी प्रशंसा अल्लाह की है, अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, सारा राज्य उसी का है और सब प्रशंसा उसी की है और वह हर बात की क्षमता रखता है। ऐ मेरे पालनहार! मैं तुझसे इस रात्रि की तथा इसके बाद की भलाइयाँ माँगता हूँ। इसी तरह इस रात्रि की तथा इसके बाद की बुराइयों

¹ सहीह मुस्लिम 4/2088, हदीस संख्या : 2723।

से तेरी शरण में आता हूँ। ऐ मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण में आता हूँ सुस्ती तथा बुढ़ापे की बुराई से। ऐ मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ आग की यातना और क्रब्र के अज़ाब से।"¹

«اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ نَحْيَا، وَبِكَ نَمُوتُ
وَإِلَيْكَ النُّشُورُ»

अल्लाहुम्मा बिका अस्बहना, व-बिका अम्सैना, व-बिका नह्या, व-बिका नमूतु व इलैका अन्नुशूर

"ऐ अल्लाह, हमने तेरे (अनुग्रह के) साथ सुबह की और तेरे ही (अनुग्रह के) साथ शाम की और हम तेरे ही अनुग्रह से जीते हैं और तेरे ही नाम से मरते हैं, और हमें तेरी ही ओर उठकर जाना है।"²

और शाम को कहे :

«اللَّهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ نَحْيَا، وَبِكَ نَمُوتُ،
وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ»

अल्लाहुम्मा बिका अम्सैना, व-बिका अस्बहना, व-बिका नह्या, व-बिका नमूतु, व इलैकल मसीर

"ऐ अल्लाह हमने तेरे (अनुग्रह के) साथ शाम की, तेरे ही (अनुग्रह के) साथ सुबह की, तेरे ही नाम से जीते हैं और तेरे ही नाम से मरते हैं, और तेरी ओर ही लौटकर जाना है।"³

¹ पूर्वोक्त हवाला।

² सुनन तिरमिज़ी 5/466 हदीस संख्या : 3391, देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/142।

³ गुज़रा हुआ हवाला।

«اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ»

अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता, खलक़्तनी व अना अब्दुक, व अना अला अहदिका व वअदिका मस्ततअतु, अऊज़ु बिका मिन शरि मा सनअतु, अबूउ लका बिनिअमतिका अलैय्या, व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़िफ़र ली फ़-इन्नहू ला यग़िफ़रुज़-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता।

"ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है। तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। तूने ही मेरी रचना की है और मैं तेरा बन्दा हूँ। मैं तुझसे की हुई प्रतिज्ञा एवं वादे को हर संभव पूरा करने का प्रयत्न करूँगा। मैं अपने हर उस कृत्य से तेरी शरण में आता हूँ जिसके कारण मैं तेरी रहमत से दूर हो जाऊँ। मैं तेरी ओर से दी जाने वाली नेमतों (अनुग्रहों) का तथा अपनी ओर से किए जाने वाले पापों का इक़रार करता हूँ। तू मुझे माफ़ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा पापों को क्षमा करने वाला कोई नहीं है।"²

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ، وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ، وَمَلَائِكَتَكَ، وَجَمِيعَ خَلْقِكَ، أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ»

¹ أبوء का अर्थात है मैं इक़रार एवं एतराफ़ करता हूँ

² जिसने विश्वास के साथ शाम को यह दुआ पढ़ी और उसी रात मर गया, वह जन्नत में दाखिल होगा। यही हाल सुबह का भी है। सहीह बुखारी 7/150, हदीस संख्या : 6306।

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्बहुतु उशहिदुका, व उशहिदु ह'म'ल'ता अर्शिका, व मलाईकतिका, व जमीआ खल्किका, अन्नका अन्तल्लाहु ला इलाहा इल्ला अन्ता वह्दका ला शरीका लका, व अन्ना मुहम्मदन अब्दुका व रसूलुक

"ऐ अल्लाह! मैंने सुबह की। मैं तुझे, तेरा अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को, अन्य फ़रिश्तों को तथा तेरी सारी सृष्टि को गवाह बनाता हूँ कि तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं है और मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- तेरे बंदे और रसूल हैं।"

चार बार कहना है।

और शाम को कहे :

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَمْسَيْتُ أَشْهَدُكَ، وَأَشْهَدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ، وَمَلَائِكَتِكَ، وَجَمِيعَ خَلْقِكَ، أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अम्सैतु उशहिदुका, व उशहिदु ह'म'ल'ता अर्शिका, व मलाईकतिका, व जमीआ खल्किका, अन्नका अन्तल्लाहु ला इलाहा इल्ला अन्ता वह्दका ला शरीका लका, व अन्ना मुहम्मदन अब्दुका व रसूलुक।

"ऐ अल्लाह! मैंने शाम की। मैं तुझे, तेरा अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को, अन्य फ़रिश्तों को तथा तेरी सारी सृष्टि को गवाह बनाता हूँ कि तेरे सिवा कोई

¹ जिसने सुबह या शाम को चार बार यह दुआ पढ़ी, उसे अल्लाह आग से मुक्ति प्रदान करेगा। अबू दाऊद 4/317, हदीस संख्या : 5071, तथा इमाम बुखारी की अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 1201, नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह हदीस संख्या : 9 तथा इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 70। शैख़ बिन बाज़ ने तोहफ़ा अल-अख्यार पृष्ठ : 23 में नसई तथा अबू दाऊद की सनद को हसन कहा है।

सत्य पूज्य नहीं है, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं है और मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- तेरे बंदे और रसूल हैं।"

चार बार कहना है।¹

«اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ»

अल्लाहुम्मा मा अस्बहा बी मिन् निअ्मतिन औ बिअहदिम् मिन खल्कि का फ़मिन्का वहदका ला शरीका लका, फ़'ल'कल हम्दु व-लकश् शुक्र

"ऐ अल्लाह! सुबह के समय मेरे तथा तेरी हर सृष्टि के साथ जो भी नेमत है, वह केवल तेरी ओर से है और उसमें तेरा कोई साझी नहीं है। अतः तेरी ही प्रशंसा है और तेरा ही शुक्र है।"²

और शाम को कहे :

«اللَّهُمَّ مَا أَمْسَى بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ»

अल्लाहुम्मा मा अम्सा बी मिन निअ्मतिन औ बिअहदिम् मिन खल्कि का फ़-मिनका वहदका ला शरीका लक, फ़'ल'कल हम्दु वलकश् शुक्र

¹ गुजरा हुआ हवाला।

² जिसने सुबह यह दुआ पढ़ी, उसने उस दिन का शुक्र अदा कर लिया। इसी तरह जिसने शाम को यह दुआ पढ़ी, उसने उस रात का शुक्र अदा कर लिया। अबू दाऊद 4/318, हदीस संख्या : 5075, नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह हदीस संख्या : 7, इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 41 तथा इब्न-ए-हिब्बान (मवारिद) हदीस संख्या : 2361। शैख बिन बाज ने तौहफ़ा अल-अख्यार पृष्ठ : 24 में इसकी सनद को हसन कहा है।

"ऐ अल्लाह! शाम के समय मेरे तथा तेरी हर सृष्टि के साथ जो भी नेमत है, वह केवल तेरी ओर से है और उसमें तेरा कोई साझी नहीं है। अतः तेरी ही प्रशंसा है और तेरा ही शुक्र है।"

«اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ، وَالْفَقْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ»

अल्लाहुम्मा आफ़िनी फ़ी बदनी, अल्लाहुम्मा आफ़िनी फ़ी समई, अल्लाहुम्मा आफ़िनी फ़ी बसरी, ला इलाहा इल्ला अन्ता, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल कुफ़्रि, वल फ़क्रि, व अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिल क़ब्रि, ला इलाहा इल्ला अन्त

"ऐ अल्लाह! मुझे शारीरिक कुशलता प्रदान कर। ऐ अल्लाह! मुझे सुनने की कुशलता प्रदान कर। ऐ अल्लाह! मुझे दृष्टि की कुशलता प्रदान कर। तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ कुफ़्र (अविश्वास) और निर्धनता से और तेरी शरण में आता हूँ क़ब्र की यातना से। तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।"

तीन बारा²

¹ गुज़रा हुआ हवाला।

² अबू दाऊद 4/324 हदीस संख्या : 5092, अहमद 5/42 हदीस संख्या 20430, नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह हदीस संख्या : 22, इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 69 तथा इमाम बुखारी की अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 7011 शैख बिन बाज़ ने तोहफ़ा अल-अख़्यार पृष्ठ : 26 में इसकी सनद को हसन कहा है।

«حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ

الْعَظِيمِ»

हस्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कलतु व हुवा रब्बुल
अर्शिल अज़ीम

"मेरे लिए अल्लाह ही काफी है, उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है,
मेरा उसी पर भरोसा है और वह महान सिंहासन का स्वामी है।"

इसे सात बार कहे।

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، اللَّهُمَّ إِنِّي
أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ: فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي، وَمَالِي، اللَّهُمَّ
اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيْ، وَمِنْ
خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي، وَعَنْ شِمَالِي، وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ
أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल-अफ़वा वल-आफ़ियता फ़िद-दुन्या
वल-आखिरह, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल-अफ़वा वल-आफ़ियता:
फ़ी दीनी व-दुन्याया व-अहली, व-माली, अल्लाहुम्मस्तुर औराती, व-

¹ जिसने सुबह एवं शाम यह दुआ सात बार पढ़ी, उसे अल्लाह दुनिया एवं आखिरत के दुखों से बचाएगा।
इब्न-अस-सुन्नी ने इसे हदीस संख्या : 71 के तहत अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-
के कथन के रूप में नकल किया है। जबकि अबू दाऊद ने 4/321, हदीस संख्या : 5081 में इसे सहाबी
के कथन के रूप में नकल किया है। शोऐब अरनाऊत तथा अब्दुल कादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को
सहीह कहा है। देखिए : जाद अल-मआद 2/376।

आमिन रौआती, अल्लाहुम्मा इहफ़ज़नी मिम् बैनि यदय्या, व-मिन ख़ल्फ़ी, व-अन यमीनी, व-अन शिमाली, व-मिन फ़ौक़ी, व-अऊज़ु बि-अज़मतिका अन उताला मिन तह्ती

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया एवं आखिरत में क्षमा एवं सुरक्षा माँगता हूँ ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अपने धर्म, अपने संसार, अपने परिवार और अपने धन के संबंध में क्षमा एवं सुरक्षा माँगता हूँ ऐ अल्लाह! मेरे ऐबों को छुपा दे और मुझे भय से सुरक्षा प्रदान कर। ऐ अल्लाह! तू मेरी, मेरे आगे, मेरे पीछे, मेरे दाएँ, मेरे बाएँ और मेरे ऊपर से रक्षा कर। साथ ही मैं इस बात से तेरी महानता की शरण में आता हूँ कि मुझे नीचे से धर दबोचा जाए।"

«اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ، رَبِّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكُهُ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَهٖ، وَأَنْ أَتَرَفَّ عَلَى نَفْسِي سُوءًا، أَوْ أَجْرَهُ إِلَى مُسْلِمٍ»

अल्लाहुम्मा आलिमल ग़ैबि वश-शहादति फ़ातिरस-समावाति वल-अर्ज़ि, रब्बा कुल्लि शैइन व मलीकहु, अश-हदु अल-ला इलाहा इल्ला अन्ता, अऊज़ु बिका मिन शरि नप्सी, व मिन शरिश-शैतानि व शर'किही, व अन अक्तरिफ़ा अला नप्सी सूअन, औ अजुरहू इला मुस्लिम।

"ऐ अल्लाह, छिपी तथा खुली बातों का जानने वाला, आकाशों तथा धरती का रचयिता, हर चीज़ का पालनहार और प्रभु! मैं गवाही देता हूँ कि

¹ अबू दाऊद, हदीस संख्या : 5074 और इब्न-ए-माजा, हदीस संख्या : 3871। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/332।

तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, मैं तेरी शरण में आता हूँ अपने प्राण की बुराई से, शैतान की बुराई और उसके फ़रेब से तथा इस बात से कि मैं अपने साथ या किसी मुसलमान के साथ कोई बुरा व्यवहार करूँ।"

«بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ»

बिस्मिल्लाहिल्लाजी ला यज़ुरू मा'अस्मिही शैउन फ़िल अर्ज़ि व ला फ़िस-समाई व हुवस-समीउल अलीम

"शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जिसके नाम के साथ धरती और आकाश में कोई वस्तु हानि नहीं पहुँचा सकती तथा वह सब सुनने वाला और सब जानने वाला है।"

तीन बारा²

«رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا»

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन, व बिल-इस्लामि दीनन, व बि-मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबिय्यन

"मैं अल्लाह को रब, इस्लाम को धर्म और मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को नबी के रूप में मान कर संतुष्ट हो गया।"

¹ सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3392, और सुनन अबू दाऊद, हदीस संख्या : 5067, देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/142।

² जिसने सुबह को तीन बार और शाम को तीन बार यह दुआ पढ़ी, उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। सुनन अबू दाऊद 4/323 हदीस संख्या : 5088, सुनन तिरमिज़ी 5/465 हदीस संख्या : 3388, इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3869 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 446। देखिए सहीह इब्न-ए-माजा 2/332। शैख़ बिन बाज़ ने तोहफ़ा अल-अख़यार पृष्ठ : 39 में इसकी सनद को हसन कहा है।

तीन बार।¹

«يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ وَلَا
تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ»

या हय्यु या कय्यूम, बिरहमतिका अस्तगीसु, अस्लिह ली शानिया
कुल्लह, वला तकिलनी इला नफ़सी तर्फता ऐन

"हे जीवित एवं नित्य स्थायी प्रभु! मैं तेरी कृपा के वसीले से तुझसे
फ़रियाद करता हूँ कि मेरा सारा हाल ठीक रख और मुझे क्षण भर के लिए भी
मेरे नफ़स के हवाले न करा।"²

«أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ
خَيْرَ هَذَا الْيَوْمِ: فَتَحَهُ، وَنَصْرَهُ، وَنَوْرَهُ، وَبَرَكَتَهُ، وَهُدَاهُ، وَأَعُوْذُ بِكَ
مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ»

अस्बहना व अस्बहल मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अल्लाहुम्मा
इन्नी अस्अलुका खैरा हाज़ल यौमि: फ़त-हहु, व नस्रहू, व नूरहू, व
ब'र'क'त'हू, व हुदाहू, व अऊज़ु बिका मिन शरि मा फ़ीहि व शरि मा ब'अद'ह।

¹ जिसने सुबह को तीन बार और शाम को तीन बार यह दुआ पढ़ी, उसे क़यामत के दिन संतुष्ट करना अल्लाह पर अनिवार्य हो जाता है। मुसनद अहमद 4/337, हदीस संख्या : 18967, नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 4, और इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 68, सुनन अबू दाऊद 4/318, हदीस संख्या : 1531 और सुनन तिरमिज़ी 5/465, हदीस संख्या : 3389। शेख़ बिन बाज़ ने तोहफ़ा अल-अख़्यार पृष्ठ : 39 में इसकी सनद को हसन कहा है।

² मुसतदरक हाकिम 1/545, और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है। देखिए : सहीह अत-तरगीब व अत-तरहीब 1/273।

"हमने तथा सारे संसार के पालनहार अल्लाह के राज्य ने सुबह की। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस दिन की भलाई; इसकी विजय, सहायता, प्रकाश, बरकत और मार्गदर्शन माँगता हूँ। इसी तरह इस दिन की कोख में जो कुछ है उसकी बुराई तथा इसके बाद की बुराई से तेरी शरण में आता हूँ।"¹

और शाम को कहे :

«أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ: فَتَحَهَا، وَنَصَرَهَا، وَتَوَرَّعَهَا، وَبَرَكْتَهَا، وَهَدَاَهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيهَا، وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا»

अम्सैना व-अम्सल् मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्'अलुका खैरा हाजिहिल-लैलति: फ़तहहा, व-नस्रहा, व-नूरहा, व-बर'का'त'हा, व-हुदाहा, व-अऊज़ु बिका मिन शरि मा फ़ीहा, व-शरि मा बअदहा

"हमने तथा सारे संसार के पालनहार अल्लाह के राज्य ने शाम की। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस रात की भलाई; इसकी विजय, सहायता, प्रकाश, बरकत और मार्गदर्शन माँगता हूँ। इसी तरह इस रात की कोख में जो कुछ है उसकी बुराई तथा इसके बाद की बुराई से तेरी शरण में आता हूँ।"²

¹ सुन्नन अबू दाऊद 4/322, हदीस संख्या : 5084। इसकी सनदों को शोऐब तथा अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने ज़ाद अल-मआद की हदीसों को संदर्भित करते समय हसन कहा है। देखिए ज़ाद अल-मआद 2/373।

² गुज़रा हुआ हवाला।

«أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، وَعَلَى كَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ، وَعَلَى
 دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ ﷺ، وَعَلَى مِلَّةِ آبَائِنَا إِبْرَاهِيمَ، حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ
 مِنْ الْمُشْرِكِينَ»

अस्बहना अला फ़ितरतिल इस्लाम, व अला कलिमतिल इखलासि, व
 अला दीनि नबियिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, व अला
 मिल्लति अबीना इब्राहीमा, हनीफ़म् मुस्लिमन व मा काना मिनल् मुश्रिकीना।
 "हमने इस्लाम की फितरत (अर्थाथ सत्य धर्म) पर, इखलास (विशुद्धता
) के कलिमा पर, अपने नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के
 धर्म पर तथा अपने पिता इबराहीम -अलैहिस्सलाम- जो मुश्रिकों में से नहीं
 थे, के संप्रदाय पर एकाग्र रूप से मुसलमान होकर सुबह की।"

शाम को कहे :

«أَمْسَيْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، وَعَلَى كَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ، وَعَلَى
 دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ ﷺ، وَعَلَى مِلَّةِ آبَائِنَا إِبْرَاهِيمَ، حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ
 مِنْ الْمُشْرِكِينَ»

अम्सैना अला फ़ितरतिल इस्लामि, व अला कलिमतिल इखलासि, व
 अला दीनि नबियिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, व अला
 मिल्लति अबीना इब्राहीमा, हनीफ़म् मुस्लिमन व मा काना मिनल् मुशरिकीन

¹ मुसनद-ए-अहमद 3/406, 407, हदीस संख्या : 15360, 15363 तथा इब्न अस-सुन्नी की अमल अल-
 यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 34। देखिए : सहीह अल-जामे 4/209।

"हमने इस्लाम की फितरत (अर्थात सत्य धर्म) पर, इखलास (निष्ठा) के कलिमा पर, अपने नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के धर्म पर तथा अपने पिता इबराहीम -अलैहिस्सलाम- जो मुश्रिकों में से नहीं थे, के संप्रदाय पर एकाग्र रूप से मुसलमान होकर शाम की।"

«سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ»

सुब्हानल्लाहि वबिहमिदह

"मैं अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ उसकी प्रशंसा के साथ।"

सौ बारा²

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य और उसी के लिए सब प्रशंसा है और वह प्रत्येक चीज़ का सामर्थ्य रखता है।"

¹ गुज़रा हुआ हवाला।

² जिसने सुबह एवं शाम को सौ बार इसे कहा, क़यामत के दिन उससे उत्तम अमल के साथ केवल वही व्यक्ति उपस्थित होगा, जिसने उसी की तरह सौ बार या उससे अधिक बार इसे कहा होगा। सहीह मुस्लिम 4/2071, हदीस संख्या : 2692।

दस बार¹, या फिर केवल एक बार आलस्य के समय।

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु व-हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य और उसी के लिए सब प्रशंसा है और वह प्रत्येक चीज़ का सामर्थ्य रखता है।"

सुबह के समय सौ बार।

«سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ: عَدَدَ خَلْقِهِ، وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِنَةَ عَرْشِهِ، وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ»

¹ नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 24, देखिए : सहीह अत-तरगीब व अत-तरहीब 1/272 तथा शैख बिन बाज़ की किताब तोहफ़ा अल-अखयार पृष्ठ : 44, तथा इसकी फ़ज़ीलत के लिए देखिए पृष्ठ : 146, हदीस संख्या : 255।

² सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 5077 तथा इब्न-ए-माजा, हदीस संख्या : 3798 तथा मुसनद-ए-अहमद, हदीस संख्या : 8719। देखिए : सहीह अत-तरगीब व अत-तरहीब 1/270, सहीह अबू दाऊद 3/957, सहीह इब्न-ए-माजा 2/331 तथा ज़ाद अल-मआद 2/377।

³ जिसने दिन में सौ बार इसे कहा, उसे दस दासों को मुक्त करने के बराबर पुण्य मिलेगा, उसके लिए सौ नेकियाँ लिखी जाएँगी, उसके सौ गुनाह मिटा दिए जाएँगे, उसे उस दिन शाम तक शैतान से सुरक्षा प्राप्त होगी और उससे उत्तम अमल के साथ केवल वही व्यक्ति उपस्थित होगा, जिसने इससे अधिक बार इसे कहा हो। सहीह बुखारी 4/95, हदीस संख्या : 3293 तथा सहीह मुस्लिम 4/2071, हदीस संख्या : 2691।

सुब्हानल्लाहि व बिहमिदिहि: अ'द'दा खल्किहि, व रिज़ा नफ़्सिहि, व जि'न'त अर्शिह, व मिदादा कलिमातिह

"मैं अल्लाह की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता बयान करता हूँ, उसकी सृष्टियों की संख्या के समान, उसकी प्रसन्नता की प्राप्ति के समान, उसके सिंहासन के वज़न के बराबर और उसके शब्दों की संख्या के बराबर।"

सुबह के समय तीन बार।

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا، وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका इल्मन नाफ़िअन, व रिज़क़न तय्यिबन, व अमलम् मुतक़ब्बलन

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे लाभकारी ज्ञान, स्वच्छ रोज़ी तथा ग्रहणयोग्य अमल माँगता हूँ।"

सुबह के समय।

«أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ»

अस्तग़फ़िरुल्लाहा व अतूबु इलैहि

"मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ और उसी की ओर लौटता हूँ।"

दिन में सौ बार।³

¹ सहीह मुस्लिम (4/2090), हदीस संख्या : (2726)

² इब्न अस-सुन्नी की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 54 और इब्न-ए-माजा, हदीस संख्या : 925, शोऐब तथा अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने ज़ाद अल-मआद की हदीसों को संदर्भित करते समय इसकी सनद को हसन कहा है। देखिए ज़ाद अल-मआद 2/375। यह हदीस इससे पीछे हदीस संख्या : 73 के तहत गुजर चुकी है।

³ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/101, हदीस संख्या : 6307 तथा सहीह मुस्लिम 4/2702, हदीस संख्या : 2775 एवं 2702।

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ»

अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहि ताम्माति मिन शरि मा खलक़

"मैं अल्लाह की पैदा की हुई वस्तुओं की बुराई से, उसके पूर्ण शब्दों की शरण में आता हूँ।"

शाम को तीन बार।

«اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ»

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम अला नबियिना मुहम्मद

"ऐ अल्लाह! हमारे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की प्रशंसा अपने निकटवर्ती फ़रिश्तों के बीच कर और उन पर शांति की जलधारा बरसा।"

दस बार।²

28- सोने के अज़कार

दोनों हथेलियों को जमा करके उनमें फूँक मारे और उनमें इन सूत्रों को पढ़े :

¹ जिसने शाम को तीन बार इसे कहा, उसे उस रात किसी ज़हरीले कीड़े के डंक मारने से कोई हानि नहीं होगी। मुसनद-ए-अहमद 2/290 हदीस संख्या : 7898, नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 590 तथा इब्न अस-सुन्नी, हदीस संख्या : 68। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/187, सहीह इब्न-ए-माजा 2/266 तथा इब्न-बाज़ की किताब तोहफ़ा अल-अख़यार पृष्ठ : 45।

² "जिसने सुबह को दस बार तथा शाम को दस बार मुझपर दरूद भेजा, उसे क़यामत के दिन मेरी सिफ़ारिश प्राप्त होगी।" तबरानी ने इसे दो सनदों से नक़ल किया है, जिनमें से एक जय्यिद है। देखिए : मजमा अज़-ज़वाइद 10/120 तथा सहीह अत-तरगीब व अत-तरहीब 1/273।

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾

“(आप) कह दीजिए कि अल्लाह एक है।

अल्लाह बेनियाज़ है।

न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

और न उसके बराबर कोई है। [सूरा इख़लास : 1-4]

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ﴾

“(ऐ नबी!) कह दीजिए कि मैं भोर के रब की शरण लेता हूँ।

हर उस चीज़ की बुराई से, जिसे उसने पैदा किया।

तथा रात की बुराई से, जब उसका अंधेरा छा जाए।

तथा गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से।

तथा ईर्ष्या करने वाले की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।

[सूरा फ़लक़: 1-5]

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ﴾

“(ऐ नबी!) कह दीजिए कि मैं मनुष्यों के रब की शरण में आता हूँ।

जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
जो सारे इन्सानों का पूज्य है।
भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (शैतान) की बुराई से।
जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
जो जिन्नों में से है और मनुष्यों में से भी।

[सूरा नास : 1-6]

फिर दोनों हाथों को जहाँ तक हो सके, अपने शरीर पर फेरे और इसका आरंभ अपने सर, चेहरा तथा शरीर के अगले भाग से करो। ऐसा तीन बार करो।

(اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ مَن ذَا الَّذِى يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۚ اِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهٗ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِىُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾)

“अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थायी है। ना उसे ऊँघ आती है और ना निद्रा आती है। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, उन सब को अल्लाह जानता है। लोग उसके ज्ञान में से उतना ही जान सकते हैं, जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोए हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च, महान है।”

¹ बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 9/62, हदीस संख्या : 5017 तथा मुस्लिम, हदीस संख्या : 2192।

﴿عَمَّنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ
 بِاللَّهِ وَمَلَكَاتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ
 وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ
 اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا
 تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إَصْرًا كَمَا
 حَمَلْتُهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ
 وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
 الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾﴾

"रसूल उस चीज़ पर ईमान लाया, जो उसके लिए अल्लाह की ओर से
 उतारी गई तथा सब ईमान वाले उसपर ईमान लाए। वे सब अल्लाह तथा
 उसके फ़रिश्तों और उसकी सब ग्रन्थों एवं रसूलों पर ईमान लाए। (वे कहते हैं
 :) हम उसके रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हमने सुना और
 हम आज्ञाकारी हो गए। ऐ हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे और हमें तेरे ही
 पास आना है।

अल्लाह किसी प्राणी पर उसकी क्षमता से अधिक (दायित्व का) भार
 नहीं रखता। जो सदाचार करेगा, उसका लाभ उसी को मिलेगा और जो

¹ सूरा अल-बक्रा, आयत संख्या : 255, जिसने बिस्तर में जाते समय इसे पढ़ लिया, उसकी रक्षा के
 लिए अल्लाह की ओर से एक फ़रिश्ता नियुक्त रहता है और सुबह तक शैतान उसके निकट नहीं जाता।
 सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 4/487, हदीस संख्या : 2311।

दुराचार करेगा, उसकी हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जाएँ, तो हमें न पकड़। हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल, जितना हमसे पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, हमें क्षमा कर दे तथा हमपर दया करा। तू ही हमारा स्वामी है तथा काफ़िरों के विरुद्ध हमारी सहायता करा।"

[सूरा बक्रा : 285-286]¹

«بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنِي، وَبِكَ أَرْفَعُهُ، فَإِنْ أُمِسَّتْ نَفْسِي
فَارْحَمْهَا، وَإِنْ أُرْسِلْتُهَا فَاحْفَظْهَا، بِمَا تَحَفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ»

बिस्मिका रब्बी वज्रअतु जम्बी, वबिका अफ़्रअहु, फ़इन अम्सक्ता नफ़सी
फ़रहम्हा, वइन अर्सलतहा फ़हफ़ज़हा, बिमा तहफ़ज़ु बिहि इबादकस-सालिहीन।

"ऐ अल्लाह! तेरे नाम से मैंने अपना पहलू रखा और तेरे ही अनुग्रह से उसे उठाऊँगा। यदि तू ने मेरे प्राण को रोक लिया, तो उसपर दया करना और अगर वापस कर दिया, तो उस चीज़ के द्वारा उसकी रक्षा करना जिसके द्वारा अपने सदाचारी बंदों की रक्ष करता है।"²³

¹ जिसने रात में इन दोनों आयतों को पढ़ लिया, दोनों आयतें उसके लिए काफ़ी होंगी। सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 9/94, हदीस संख्या : 4008 तथा सहीह मुस्लिम 1/554, हदीस संख्या : 807। दोनों आयतें सूरा अल-बक्रा की हैं। आयत संख्या : 285-286।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/126, हदीस संख्या : 6320 और सहीह मुस्लिम 4/2084, हदीस संख्या : 2714।

³ "जब तुममें से कोई अपने बिस्तर से उठने के बाद दोबारा बिस्तर में जाए, तो उसे अपनी लुंगी को किनारे से तीन बार झाड़े और अल्लाह का नाम ले। क्योंकि वह नहीं जानता कि उसके बिस्तर में कौन आया था। फिर जब लेटे तो कहे : ...।" इस हदीस में आए हुए शब्द "صِنْفَةٌ إِزَارَهُ" का अर्थ है : लुंगी का किनारा। देखिए : अन-निहायह फ़ी ग़रीब अल-हदीस वल-असर (صنف)

«اللَّهُمَّ إِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِي وَأَنْتَ تَوَفَّاهَا، لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا،
 إِنَّ أَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا، وَإِنْ أَمَتَهَا فَاعْفِرْ لَهَا، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ
 الْعَافِيَةَ»

अल्लाहुम्मा इन्नका खलक़ता नफ़सी व-अन्ता तवफ़ाहा, लका ममातुहा
 व-मह्याहा, इन अह्यैतहा फ़हफ़ज़हा, व-इन अमतहा फ़ग़िफ़र लहा,
 अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल-आफ़िया

"ऐ अल्लाह! तू ने मेरे प्राण की रचना की है और तू ही उसे मृत्यु देगा।
 मृत्यु तथा जीवन दोनों तेरे हाथ में हैं। यदि तू ने उसे जीवित रखा, तो उसकी
 रक्षा करना और यदि मृत्यु दे दी, तो उसे क्षमा कर देना। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे
 स्वास्थ्य तथा सुरक्षा माँगता हूँ।"

«اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ»

अल्लाहुम्मा क़िनी अज़ाबका यौमा तब्असु इबादक

"ऐ अल्लाह! मुझे उस दिन अपनी याताना से सुरक्षित रखना², जिस दिन
 अपने बंदों को जीवित करके उठाएगा।"³

«بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا»

¹ सहीह मुस्लिम 4/2083, हदीस संख्या : 2712 तथा मुसनद-ए-अहमद 2/79, हदीस संख्या : 5502
 अपने शब्द के साथ।

² अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब सोने का इरादा करते, तो अपने दाएँ गाल के नीचे
 अपना हाथ रख लेते और उसके बाद कहते :...

³ सुनन अबू दाऊद 4/311 हदीस संख्या : 5045 अपने शब्द के साथ, तथा सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या
 : 3398। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/143 तथा सहीह अबू दाऊद 3/240।

बिस्मिका अल्लाहुम्मा अमूतु व अह्या

"ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम से मरता और जीता हूँ।"

«سُبْحَانَ اللَّهِ»

अल्लाह पवित्र है

"सुब्हानल्लाह

(तैंतीस बारा)

«وَالْحَمْدُ لِلَّهِ»

वलहम्दु लिल्लाह

और सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है

(तैंतीस बारा)

«وَاللَّهُ أَكْبَرُ»

वल्लाहु अकबर

और अल्लाह सबसे बड़ा है

चौंतीस बारा।"²

«اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْأَرْضِ، وَرَبَّ الْعَرْشِ

الْعَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَةِ

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/113, हदीस संख्या : 6324 और सहीह मुस्लिम 4/2083, हदीस संख्या : 27111

² जिसने बिस्तर पर जाते समय यह अज़कार पढ़े, यह उसके लिए एक सेवक से उत्तम होंगे। सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 7/71, हदीस संख्या : 3705 तथा सहीह मुस्लिम 4/2091, हदीस संख्या : 27261

وَالْإِنجِيلَ، وَالْفُرْقَانَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ
 بِنَاصِيَتِهِ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ
 بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ
 دُونَكَ شَيْءٌ، اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ»

अल्लाहुम्मा रब्बस-समावातिस-सब्इ व रब्बल-अर्जि, व रब्बल-
 अर्शिल-अजीमि, रब्बना व रब्बा कुल्लि शैइन्, फ़ालिकल-हब्बि वन-नवा,
 व मुन्जिलत-तौराति वल-इन्जीलि, वल-फ़ुर्क़ानि, अरुजु बिका मिन शर्हि
 कुल्लि शैइन् अन्ता आखिज़ुन बिनासियतिहि, अल्लाहुम्मा अन्तल-अव्वलु
 फ़लैसा क़ब्लका शैउन्, व अन्तल-आखिरु फ़लैसा बअदका शैउन्, व-
 अन्तज़-ज़ाहिरु फ़लैसा फ़ौक़का शैउन्, व-अन्तल-बातिनु फ़लैसा दूनका
 शैउन्, इक्किज़ अन्नद-दैना व अग्निना मिनल-फ़क्र।

"ऐ अल्लाह! आकाशों के स्वामी, धरती के स्वामी, महान सिंहासन के
 स्वामी, हमारे स्वामी और हर चीज़ के स्वामी, दाने एवं गुठली को फाड़ने
 वाले और तौरात, इंजील तथा कुरआन उतारने वाले! मैं हर उस चीज़ की
 बुराई से तेरी शरण माँगता हूँ, जिसकी पेशानी को तू पकड़े हुए है। ऐ अल्लाह!
 तू प्रथम है अतः तुझसे पहले कोई चीज़ नहीं है तथा तू आखिर (अंतिम) अतः
 तेरे बाद कोई चीज़ नहीं है, तू ज़ाहिर (प्रत्यक्ष एवं उच्च) है अतः तेरे ऊपर
 कोई चीज़ नहीं और तू बातिन (अप्रत्यक्ष एवं गुप्त) है अतः तुझसे परे कोई
 चीज़ नहीं है। तू हमारा क़र्ज़ अदा कर दे और हमें निर्धनता से मुक्ति प्रदान
 कर।"¹

¹ सहीह मुस्लिम 4/2084, हदीस संख्या : 2713।

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا، وَكَفَانَا، وَأَوَانَا، فَكَمْ مِمَّنْ لَا

كَافِي لَهُ وَلَا مُؤْوِي»

अल्हम्दु लिल्लाहिल लजी अत्अ'म'ना व-सक्राना, व-कफ़ाना, व-
आवाना, फ़कम् मिम्मल् ला काफ़िया लहु व ला मुअ्वीया

"सारी प्रशंसा उस अल्लाह की है, जिसने हमें खिलाया, पिलाया, पर्याप्ति
प्रदान की तथा शरण दी। कितने ऐसे लोग हैं, जिनको न कोई पर्याप्ति प्रदान
करने वाला है, न शरण देने वाला।"

«اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ، رَبَّ

كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكِهِ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي،

وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا، أَوْ أَجْرَهُ

إِلَى مُسْلِمٍ»

अल्लाहुम्मा आलिमल ग़ैबि वश-शहादति फ़ातिरस्-समावाति वल-
अर्ज़ि, रब्बा कुल्लि शैइन व-मलीकहु, अशहदु अल् ला इलाहा इल्ला अन्ता,
अऊज़ु बिका मिन शरि नफ़सी, व-मिन शरिश-शैतानि व-शिकिहि, व-अन
अक़तरिफ़ा अला नफ़सी सू-अन, औ अजुरहु इला मुस्लिमा

"ऐ अल्लाह, छिपी तथा खुली बातों का जानने वाला, आकाशों तथा
धरती का रचयिता, हर चीज़ का पालनहार और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ
कि तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, मैं तेरी शरण में आता हूँ अपने प्राण की

¹ सहीह मुस्लिम 4/2085, हदीस संख्या : 27151

बुराई से, शैतान की बुराई और उसके फ़रेब से तथा इस बात से कि मैं अपने साथ या किसी मुसलमान के साथ कोई बुरा व्यवहार करूँ।"¹

अलिफ़ लाम मीम तनज़ीलस्सजदह और तबारकल्लज़ी बि-यदिहिलमुल्क, दोनों सूरतों को पढ़े।²

«اللَّهُمَّ أَسَلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَأَلْبَجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنَاجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ، وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ»

अल्लाहुम्मा अस्लम्तु नफ़सी इलैका, व-फ़व्वज़्तु अम्री इलैका, व-वज्जहतु वजही इलैका, व-अल्जअतु ज़ही इलैका, रसबतन व-रहबतन इलैका, ला मल्जअ व-ला मन्जा मिन्का इल्ला इलैका, आमन्तु बिकिताबिकल् लज़ी अन्ज़लता, व बिनबिथ्यिकल् लज़ी अर्सलता।

"ऐ अल्लाह! मैंने अपने प्राण को तेरे हवाले कर दिया, अपना मामला तुझे सौंप दिया, अपना चेहरा तेरी ओर कर दिया, तेरे ही ऊपर भरोसा किया और यह सब तेरी नेमतों की चाहत और तेरी यातना के भय से किया। क्योंकि स्वयं तेरे दरबार के अतिरिक्त न तेरी पकड़ से भाग कर जाने का कोई स्थान है

¹ सुनन अबू दाऊद 4/317 हदीस संख्या : 5067 तथा सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3629। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/142।

² सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3404 तथा नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 707। देखिए : सहीह अल-जामे 4/255।

³ "जब तुम सोने के स्थान में जाने लगे, तो उसी तरह वजू करो, जैसे नमाज़ के लिए वजू करते हो, फिर बाएँ करवट पर लेट जाओ और उसके बाद कहो : ...।"

और न शरण लेने की कोई जगह। मैं ईमान लाया तेरी उतारी हुई किताब और तेरे भेजे हुए नबी पर।"¹

29- रात को करवट बदलते समय की दुआ

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ، رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ»

ला इलाहा इल्लल्लाहुल वाहिदुल क़हहार, रब्बुस समावाति वल अज़ि व-मा बैनहुमल अज़ीज़ुल ग़फ़फ़ार

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, बलशाली है, आकाशों तथा धरती और उन दोनों के बीच स्थित सारी चाज़ों का रब है, शक्तिमान है और अत्यधिक क्षमा करने वाला है।"²

30- नींद में बेचैनी तथा घबराहट की दुआ

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ، وَشَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُون»

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित-ताम्माति मिन ग़'ज़'बिहि व-इक्काबिहि, व-शरि इबादिहि, व-मिन हमज़ातिश-शयातीनि व अन् यहज़रून

¹ अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने यह दुआ पढ़ने वाले के बारे में कहा है : "अब अगर तुम मर गए, तो इस्लाम पर मरोगे।" सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/113, हदीस संख्या : 6313 तथा सहीह मुस्लिम 4/2081, हदीस संख्या : 2710।

² रात को जब करवट बदले तो यह दुआ पढ़े। मुसतदरक हाकिम 1/540 हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमत व्यक्ति की है, नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 202 तथा इब्न अस-सुन्नी, हदीस संख्या : 757। तथा देखिए : सहीह अल-जामे 4/213।

"मैं अल्लाह के संपूर्ण शब्दों की शरण में आता हूँ उसके क्रोध, दंड, उसके बंदों की बुराई और शैतानों के द्वारा डाले गए बुरे खयालों से और इस बात से कि वे मेरे पास आजाएं।"¹

31- कोई व्यक्ति बुरा स्वप्न देखे तो क्या करे?

अपनी बाईं ओर तीन बार थूके।

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर रजीम

शैतान से तथा अपने इस स्वप्न की बुराई से तीन बार अल्लाह की शरण माँगे।²

स्वप्न में क्या कुछ देखा है, किसी को न बताए।⁴

पहलू बदल ले और दूसरे करवट पर लेटे।⁵

यदि इच्छा हो, तो उठकर नमाज़ पढ़ो।⁶

32- वित्र की दुआ-ए-कुनूत

«اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِي

فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ، وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ؛ فَإِنَّكَ

¹ सुनन अबू दाऊद 4/12 हदीस संख्या : 3893 तथा सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3528। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/171।

² सहीह मुस्लिम 4/1772, हदीस संख्या : 2261।

³ सहीह मुस्लिम 4/1773, 1773, हदीस संख्या : 2261 तथा 2262।

⁴ सहीह मुस्लिम 4/1772 हदीस संख्या : 2261 तथा 2263।

⁵ सहीह मुस्लिम 4/1773, हदीस संख्या : 2261।

⁶ सहीह मुस्लिम 4/1773, हदीस संख्या : 2263।

تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْكَ، إِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ، [وَلَا يَعْزُّ مَنْ عَادَيْتَ]، تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ»

अल्लाहुम्महिदनी फ़ीमन हदैता, व-आफ़िनी फ़ीमन आफ़ैता, व-तवल्लनी फ़ीमन तवल्लैता, व-बारिक ली फ़ीमा अअ़तैता, व-क्रिनी शर्मा मा क्रज़ैता; फ़'इन्नका तक्रज़ी व ला युक्रज़ा अलैका, इन्नहू ला यज़िल्लु मन् वालैता, व-ला यइज़ज़ु मन आदैता, तबारक्ता रब्बना व तआलैत

"ऐ अल्लाह जिन लोगों को तू ने हिदायत दी है उनके संग मुझे भी हिदायत दे, जिन लोगों को तू ने आफियत दी है उनके संग मुझे भी आफियत दे, जिनको तू ने अपना मित्र बनाया है उनके संग मुझे भी अपना मित्र बना, जो कुछ तू ने हमें दे रखा है उसमें बरकत प्रदान कर, और जो फैसला तू ने कर रखा है उसकी बुराई से हमें बचाए रख, (क्योंकि) फैसला तू करता है और तेरे विरुद्ध फैसला नहीं किया जा सकता, जिसको तू अपना मित्र बना ले उसे कोई अपमानित नहीं कर सकता। हे हमारे रब! तू बरकत वाला तथा महान है।"¹

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ، لَا أَحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ»

¹ सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1425, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 464, सुनन नसई हदीस संख्या : 1744, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 1178, मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 1718, दारिमी हदीस संख्या : 1592, हाकिम 3/172 और बैहकी 2/209। दोनों कोष्ठकों के बीच के शब्द बैहकी के हैं। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 1/144, सहीह इब्न-ए-माजा 1/194 तथा अलबानी की किताब इरवा अल-गलील 2/172।

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजु बिरिज़ाका मिन सख़तिका, व-
बिमुआफ़ातिका मिन उक़ूबतिका, व-अऊजु बिका मिन्का, ला उह्सी
सनाअन अलैका, अन्ता कमा अस्नैता अला नफ़्सक

"ऐ अल्लाह! मैं तेरे क्रोध से तेरी प्रसन्नता की शरण माँगता हूँ, तेरी सज़ा से तेरे क्षमादान की शरण माँगता हूँ और तुझसे तेरी शरण में आता हूँ मैं तेरी प्रशंसा संपूर्ण रूप से नहीं कर सकता। तू वैसा ही है, जैसा तूने अपनी प्रशंसा की है।"

«اللَّهُمَّ إِنَّاكَ نَعْبُدُ، وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ، وَإِلَيْكَ نَسْعَى وَنَحْفِدُ،
نَرْجُو رَحْمَتَكَ، وَنَخْشَى عَذَابَكَ، إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَافِرِينَ مُلْحِقٌ،
اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَغِيثُكَ، وَنَسْتَغْفِرُكَ، وَنُثْنِي عَلَيْكَ الْحَمْدَ، وَلَا نَكْفُرُكَ،
وَنُؤْمِنُ بِكَ، وَنَخْضَعُ لَكَ، وَنَخْلَعُ مِنْ يَكْفُرُكَ»

अल्लाहुम्मा इय्याका नअबुदु, व लका नुसल्ली व नस्जुदु, व इलैका
नस्आ व नह्फ़िदु, नर्जू रहमतका, व नख़शा अज़ाबका, इन्ना अज़ाबका बिल्-
काफ़िरीना मुल्हिक्कुन, अल्लाहुम्मा इन्ना नस्तईनुका, व नस्तग़िफ़रुका, व नुस्नी
अलैकल् ख़ैरा, व ला नक्फ़ुरुका, व-नुअमिनु बिका, व नख़ज़उ लका, व
नख़लऊ मन् यक्फ़ुरुक

"ऐ अल्लाह! हम तेरी ही बंदगी करते हैं, तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते और
तुझी को सजदा करते हैं, तेरी ओर तेज़ी से भागते और दौड़ते हैं, तेरी कृपा
की आश रखते हैं, तेरी यातना से भयभीत रहते हैं, निश्चय ही तेरी यातना

¹ सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 1427, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3566, सुनन नसई हदीस संख्या : 1746, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 1179 तथा मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 7511 देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/180, सहीह इब्न-ए-माजा 1/194 तथा इरवा अल-ग़लील 2/175।

काफ़िरों को पहुँच कर रहेगी। ऐ अल्लाह! हम तुझसे सहयोग माँगते हैं, तुझसे क्षमा याचना करते हैं, तेरी अच्छी प्रशंसा करते हैं, तेरे प्रति अविश्वास का भाव नहीं रखते, तुझपर ईमान रखते हैं, तेरे सामने नत्मस्तक होते हैं और तेरे प्रति अविश्वास व्यक्त करने वालों से अलग होने की घोषणा करते हैं।¹

33- वित्र से सलाम फेरने के बाद का ज़िक्र

«سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ»

सुब्हानल् मलिकिल कुद्दूस

वह परम पावन बादशाह पवित्र है।

तीन बार। और तीसरी बार इसे बुलंद आवाज़ से और अपनी आवाज़ को खींचकर पढ़े, और कहे :

«رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ»

रब्बिल मलाइकति वरूह

"फ़रिश्तों एवं रूह (जिबरील) का रब।"²

¹ इसे बैहकी ने अस-सुनन अल-कुबरा 2/211 में नक़ल किया है और इसकी सनद को सही कहा है। जबकि अलबानी ने इरवा अल-ग़लील 2/170 में कहा है : "यह सनद सही है।" हालाँकि यह उमर -रज़ियल्लाहु अनहु- का कथन ही है।

² सुनन नसई 3/244, हदीस संख्या : 1734 तथा दारकुतनी 2/31 आदि। दोनों कोष्ठकों के बीच का भाग दारकुतनी 2/31, हदीस संख्या : 2 से लिया गया है और उसकी सनद सहीह है। देखिए : ज़ाद अल-मआद 1/337, शोएब अरनाऊत तथा अब्दुल क़ादिर अरनाऊत के अनुसंधान के साथ।

34- शोक तथा चिंता के समय की दुआएँ

«اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، ابْنُ عَبْدِكَ، ابْنُ أَمَتِكَ، نَاصِيَتِي بِيَدِكَ، مَاضٍ فِي حُكْمِكَ، عَدْلٌ فِي قَضَائِكَ، أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ، أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، أَوْ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رِيعَ قَلْبِي، وَتُورَ صَدْرِي، وَجَلَاءَ حُزْنِي، وَذَهَابَ هَمِّي»

अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुका, इब्नु अब्दिका, इब्नु अ'म'तिका, नासियती बियदिका, माजिन फ़िय्या हुक्मुका, अद्लुन फ़िय्या क़ज़ाउका, अस्अलुका बिकुल्लिस्मिन् हुवा लका, सम्मैता बिहि नफ़्सका, औ अन्ज़ल्लतहु फ़ी किताबिका, औ अल्लम्तहु अहदम् मिन् खल्किका, अविस्तअसर्ता बिहि फ़ी इल्मिल-ग़ैबि इन्दका, अन् तजअलल-कुरआना रबीआ क़ल्बी, व नूरा सद्दी, व जलाअ हुज़नी, व ज़हाबा हम्मी।

"ऐ अल्लाह! मैं तेरा बंदा और तेरे बंदे एवं बंदी का बेटा हूँ। मेरी पेशानी तेरे हाथ में है। मेरे बारे में तेरा आदेश चलता है। मेरे बारे में तेरा निर्णय न्याय पर आधारित है। मैं तुझसे तेरे हर उस नाम का वास्ता देकर माँगता हूँ, जिससे तूने खुद को नामित किया है, या उसे अपनी किताब में उतारा है, या उसे अपनी किसी सृष्टि को सिखाया है, या उसे अपने पास अपने परोक्ष ज्ञान में

सुरक्षित कर रखा है, कि कुरआन को मेरे दिल का वसंत, मेरे सीने की रोशनी, मेरे दुःख का मोचन और मेरी व्याकुलता को समाप्त करने वाला बना दे।"¹

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ،
وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَضَلَعِ الدِّينِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजु बिका मिनल हम्मि वल-ह'ज'नि, वल-अज्जि
वल-कसलि, वल बुख्लि वल जुब्नि, व दलइद दैनि व गलबतिर रिजाल

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ चिंता तथा शोक से, विवशता
तथा सुस्ती से, कंजूसी तथा कायरता से और कर्ज के बोझ तथा लोगों के
वर्चस्व से।"²

35- बेचैनी की दुआ

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ،
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु, अल-अजीमुल् हलीमु, ला इलाहा इल्लल्लाहु,
रब्बुल अर्शिल अजीमि, ला इलाहा इल्लल्लाहु, रब्बुस् समावाति व रब्बुल
अर्जि व रब्बुल अर्शिल् करीम

¹ मुसनद-ए-अहमद 1/391, हदीस संख्या : 3712, अलबानी सिलसिला अल-अहादीस अस-सहीहा 1/337 में इसे सहीह कहा है।

² सहीह बुखारी 7/158, हदीस संख्या : 2893, अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- यह दुआ बहुत ज्यादा पढ़ा करते थे। देखिए : सहीह बुखारी फ्रह अल-बारी के साथ 11/173। यह हदीस आगे भी पृष्ठ : 89 में हदीस संख्या : 137 के तहत आणी।

"अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, जो महान और सहनशील है। अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, जो महान अर्श (सिंहासन) का मालिक है। अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, जो आकाशों का रब , धरती का रब और सम्मानित सिंहासन (अर्श) का रब है।"

«اللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو، فَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ،
وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ»

अल्लाहुम्मा रहमतका अर्जू फ़ला तकिल्नी इला नफ़्सी तर्फ़ता ऐनिन,
व अस्लिह ली शअनी कुल्लहु, ला इलाहा इल्ला अन्त

“ऐ अल्लाह मैं तेरी ही कृपा की आशा रखता हूँ। अतः तू मुझे क्षण भर के लिए मेरी आत्मा के हवाले न कर। तथा मेरे लिए मेरे सारे कार्यों को ठीक कर दे। तेरे अतिरिक्त कोई वास्तविक उपास्य नहीं है।”²

«لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ»

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिनज़-ज़ालिमीन
"तेरे सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं है। तू पवित्र है। निःसंदेह मैं ही ज़ालिमों में से था।"³

«اللَّهُ اللَّهُ رَبِّي لَا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا»

अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उश्रिकु बिहि शैअन

¹ सहीह बुखारी 7/154 हदीस संख्या : 6345 तथा सहीह मुस्लिम 4/2092, हदीस संख्या : 2730।

² सुनन अबू दाऊद 4/324 हदीस संख्या : 5090 तथा अहमद 5/42 हदीस संख्या : 20430, अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 3/959 में हसन कहा है।

³ सुनन तिरमिज़ी 5/529, हदीस संख्या : 3505 तथा मुसतदरक हाकिम 1/505। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। तथा देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/168।

"अल्लाह, अल्लाह, मेरा रब , मैं किसी को उसका साझी नहीं बनाऊंगा।"¹

36- शत्रु तथा शासक से मिलने की दुआ

«اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ، وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ»

अल्लाहुम्मा इन्ना नज्अलुका फी नुहूरिहिम, व नऊज़ु बिका मिन शूरुरिहिम

"ऐ अल्लाह, हम तुझे उनके मुक़ाबले में पेश करते हैं और उनकी विषैलेपन से तेरी पनाह चाहते हैं।"²

«اللَّهُمَّ أَنْتَ عَضْدِي، وَأَنْتَ نَصِيرِي، بِكَ أَحُولُ وَبِكَ أَصُولُ،

وَبِكَ أُقَاتِلُ»

अल्लाहुम्मा अन्ता अज़ुदी, व-अन्ता नसीरी, बिका अहूलु व-बिका असूलु, व-बिका उक्तातिल

"ऐ अल्लाह तू ही मेरा बाजू और सहायक है। तेरे ही सहारे मैं स्थान बदलता हूँ, तेरी ही मदद से शत्रु पर आक्रमण करता हूँ और तेरी सहायता से युद्ध करता हूँ।"³

¹ सुनन अबू दाऊद 2/87 हदीस संख्या : 1525 तथा इब्न-ए-माजा, हदीस संख्या : 3882। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/335।

² सुनन अबू दाऊद 2/89, हदीस संख्या : 1537। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। देखिए : मुसतदरक हाकिम 2/142।

³ सुनन अबू दाऊद 3/42, हदीस संख्या : 2632 तथा सुनन तिरमिज़ी 5/572, हदीस संख्या : 3584। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/183।

«حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ»

हस्बुनल्लाहु व-निअमल वकील

"अल्लाह हमारे लिए काफी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।"¹

37- शासक के अत्याचार से डरे हुए व्यक्ति की दुआएँ

«اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، كُنْ لِي
جَارًا مِنْ فَلَانِ بْنِ فَلَانٍ، وَأَحْزَابِهِ مِنْ خَلَائِقِكَ، أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ
مِنْهُمْ أَوْ يَطْغَى، عَزَّ جَارُكَ، وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ»

अल्लाहुम्मा रब्बस समावातिस-सब्इ, व रब्बल् अर्शिल् अज़ीमि, कुन् ली जारन मिन फुलान् इब्नि फुलानिन, व अहज़ाबिही मिन ख़लाइक़िका, अन् यफ़्रुता अलय्या अ'ह'दुम् मिन्हुम् औ यत्ता, अज़ज़ा जारुका, व-जल्ला मनाउका, व ला इलाहा इल्ला अन्त

"ऐ अल्लाह, सातों आकाशों के रब तथा महान सिंहासन के रब ! मुझे अमुक से जो अमुक का पुत्र है तथा उसके जत्थों से शरण देने वाला बन जा कि उनमें से कोई मुझपर अत्याचार अथवा अतिक्रमण करे। तेरी शरण पाने वाला बलवान है, तेरी प्रशंसा बहुत बड़ी है और तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।"²

¹ सहीह बुखारी 5/172, हदीस संख्या : 4563।

² इमाम बुखारी की अल-अदब अल-मुफ़रद 707। अलबानी ने इसे सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद, हदीस संख्या : 545 में सहीह कहा है।

«اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَعَزُّ مِنْ خَلْقِهِ جَمِيعًا، اللَّهُ أَعَزُّ مِمَّا أَخَافُ وَأَحْذَرُ،
 أَعُوذُ بِاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، الْمُؤْمِسِكِ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ أَنْ يَقَعْنَ
 عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ، مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فَلَانٍ، وَجُنُودِهِ وَأَتْبَاعِهِ
 وَأَشْيَاعِهِ، مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ، اللَّهُمَّ كُنْ لِي جَارًا مِنْ شَرِّهِمْ، جَلَّ
 ثَنَاؤُكَ وَعَزَّ جَارُكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ»

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अ-अज़्जु मिन खल्किही जमीअन, अल्लाहु
 अ-अज़्जु मिम्मा अखाफु व अहज़रु, अऊज़ु बिल्लाहिल्लज़ी ला इलाहा
 इल्ला हुवा, अल-मुम्सिकिस् समावातिस् सबूइ अन् यकअन्ना अलल अर्ज़ि
 इल्ला बि-इज़्जिनी, मिन शरि अब्दिका फ़ुलानिन, व-जुनूदिही व-अल्बाइही
 व-अश्याइही, मिनल जिन्नि वल इन्सि, अल्लाहुम्मा कुन् ली जारन मिन
 शरिहिम, जल्ला सनाउका व अज़्ज़ा जारुका, व-तबारकस्मुका, व ला इलाहा
 ग़ैरुका।

"अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह अपनी सारी सृष्टि से अधिक
 बलशाली है। अल्लाह उससे भी बलशाली है, जिससे मैं डर रहा हूँ तथा भय
 महसूस कर रहा हूँ। मैं उस अल्लाह की शरण में आता हूँ, जिसके अतिरिक्त
 कोई सत्य पूज्य नहीं है, जिसने सातों आकाशों को धरती के ऊपर गिरने से
 रोक रखा है, और जिसकी अनुमति मिलने पर आकाशों का बंधन टूट जाएगा,
 उसके अमुक बंदे, उसकी सेनाओं और उसके अनुसरणकारी जिन्नों एवं
 इनसानों की बुराई से। ऐ अल्लाह! मुझे उनकी बुराई से शरण देने वाला बन
 जा। तेरी प्रशंसा बहुत बड़ी है, तेरी शरण में आने वाला बलवान हो जाता है,
 तेरा नाम बरकत वाला है और तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।"

तीन बार।¹

38- शत्रु के लिए बददुआ

«اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، سَرِيعَ الْحِسَابِ، اهْزِمِ الْأَحْزَابَ، اللَّهُمَّ

اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ»

अल्लाहुम्मा मुन्ज़िलल किताबि, सरीअल हिसाबि, इहिज़मिल अहज़ाबि, अल्लाहुम्मा इहिज़महुम व ज़लज़िलहुम

"ऐ अल्लाह! किताब उतारने वाले और जल्दी हिसाब लेने वाले! इन जत्थों को पराजित कर। ऐ अल्लाह! इन्हें पराजित कर और इन्हें हिलाकर रख दो।"²

39- जिसे लोगों का डर हो, वह यह दुआ पढ़े

«اللَّهُمَّ اكْفِنِيهِمْ بِمَا شِئْتَ»

अल्लाहुम्म् इकिफ़नीहिम बिमा शिअ़ता

"ऐ अल्लाह! तू जैसे चाहे, मेरी ओर से उनसे निमट ले।"³

40- जिसे अपने ईमान में संदेह होने लगे, उसके लिए दुआ

अल्लाह की शरण माँगे।⁴ यह दुआ पढ़े :

¹ अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 708। अलबानी ने सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 546 में इसे सहीह कहा है।

² सहीह मुस्लिम 3/1362, हदीस संख्या : 1742।

³ सहीह मुस्लिम 4/2300, हदीस संख्या : 3005।

⁴ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 6/336, हदीस संख्या : 3276 तथा सहीह मुस्लिम 1/120, हदीस संख्या : 134।

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश् शैतानिर् रजीम
"मैं दुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ"
इस संदेह से खुद को अलग कर ले।
(यह कहे :

«أَمَنْتُ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ»

आमन्तु बिल्लाहि व रुसुलिहि
(मैं अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाया।)²
यह आयत पढ़े :

﴿هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ (3)

"वही प्रथम, वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।" [सूरा हदीद : 3]³

41- क़र्ज़ की अदायगी के लिए दुआ

«اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ

سِوَاكَ»

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 6/336, हदीस संख्या : 3276 तथा सहीह मुस्लिम 1/120, हदीस संख्या : 134।

² सहीह मुस्लिम 1/119-120, हदीस संख्या : 134।

³ सूरा अल-हदीद आयत संख्या : 3। सुनन अबू दाऊद 4/329, हदीस संख्या : 5110। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 3/962 में सहीह कहा है।

अल्लाहुम्मकिफ़नी बिहलालिका अन ह़रामिका, व अग्निनी बिफ़ज़्लिका अम्मन सिवाक

"ऐ अल्लाह! मुझे अपने हलाल चीज़ों के द्वारा अपनी हराम चीज़ों से बचा ले और मुझे अपने अनुग्रह से अपने अतिरिक्त अन्य लोगों से बेनियाज़ कर दे।"¹

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ،
وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल हम्मि वल ह'ज़'नि, वल अज़्ज़ि वल क'स'लि, वल बुख़िल वल जुब्नि, व ज़'ल'इद् दैनि व ग'ल'बतिर् रिज़ाल

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ चिंता तथा शोक से, विवशता तथा सुस्ती से, कंजूसी तथा कायरता से और कर्ज़ के बोझ तथा लोगों के वर्चस्व से।"²

42- नमाज़ में अथवा कुरआन पढ़ते समय आने वाले बुरे ख़यालों से बचने की दुआ

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश् शैतानिर् रज़ीम

"«मैं दुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँगता हूँ

¹ सुन्न तिरमिज़ी 5/560। हदीस संख्या : 3563। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/180।

² सहीह बुख़ारी 7/158, हदीस संख्या : 2893। यह हदीस पहले भी पृष्ठ : 83 में हदीस संख्या : 121 के तहत गुज़र चुकी है।

तथा अपने बाईं ओर तीन बार थुकथुकाए।"

43- उस व्यक्ति की दुआ, जिसे कोई कार्य कठिन दिखाई पड़े

«اللَّهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا، وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا

شِئْتَ سَهْلًا»

अल्लाहुम्मा ला सहला इल्ला मा जअल्लतहु सहलन्, व अन्ता तज्अलुल हज्ना इजा शिअ्ता सहला

"ऐ अल्लाह! आसान केवल वही कार्य है, जिसे तू आसान बनाए और तू जब चाहे तो कठिन कार्य को भी आसान बना दे।"²

44- आदमी गुनाह कर बैठे, तो कौन-सी दुआ पढ़े और क्या करे?

"जब कोई बंदा कोई गुनाह कर बैठे, फिर अच्छी तरह वज्रू करे, फिर उठकर दो रकात नमाज़ पढ़े और अल्लाह से क्षमा माँगे, तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है।"³

¹ सहीह मुस्लिम 4/1729, हदीस संख्या : 2203। वर्णनकर्ता उसमान बिन अबू अल-आस -रज़ियल्लाहु अनहु- हैं। इसमें उनका यह कथन भी है कि मैंने ऐसा किया, तो अल्लाह की कृपा से बुरे खयाल दूर हो गए।

² सहीह इब्न-ए-हिब्बान, हदीस संख्या : 2427 (मवारिद) तथा इब्न अस-सुन्नी, हदीस संख्या : 351। हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर कहते हैं : "यह एक सहीह हदीस है।" अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने भी इसे इमाम नववी की अल-अज़कार की हदीसों को संदर्भित करने के क्रम में पृष्ठ संख्या : 106 में सहीह कहा है।

³ सुनन अबू दाऊद 2/86, हदीस संख्या : 1521 और सुनन तिरमिज़ी 2/257, हदीस संख्या : 406। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 1/283 में सहीह कहा है।

45- शैतान और उसके बुरे खयालों को दूर करने की दुआ

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश् शैतानिर् रजीम

अल्लाह से उसकी शरण माँगना।¹

अज़ान देना।²

अज़कार एवं कुरआन की तिलावत में व्यस्त होना।

"तुम अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ। निस्संदेह शैतान उस घर से दूर भागता है, जिसमें सूरह अल-बक्ररह पढ़ी जाए।"³

इसी तरह सुबह एवं शाम, सोने तथा जागने, घर में प्रवेश करने तथा घर से बाहर निकलने और मस्जिद के अंदर जाने और उससे बाहर निकलने आदि के अज़कार, तथा इनके अतिरिक्त अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के सिखाए हुए अन्य अज़कार, जैसे सोते समय आयत अल-कुर्सी एवं सूरह अल-बक्ररह की अंतिम दो आयतों का पढ़ना आदि भी शैतान को भगाने का काम करते हैं। इसी तरह जिसने कहा :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

¹ सुनन अबू दाऊद 1/203 तथा सुनन इब्न-ए-माजा 1/265, हदीस संख्या : 807। पीछे पृष्ठ संख्या : 31
के तहत इसके संदर्भों का उल्लेख किया जा चुका है। देखिए : सूर अल-मोमिनून, आयत संख्या : 97-98।

² सहीह मुस्लिम 1/291, हदीस संख्या : 389 तथा सहीह बुखारी 1/151, हदीस संख्या : 608।

³ सहीह मुस्लिम (1/539), हदीस संख्या : (780)।

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का राज्य है, उसी की सब प्रशंसा है और वह प्रत्येक चीज़ का सामर्थ्य रखता है।

सौ बार, उसे पूरे दिन शैतान से सुरक्षा प्राप्त होगी, इसी तरह अज़ान भी शैतान को भगाने का काम करती है।

46- जब कोई अप्रिय घटना घटित हो जाए या आदमी विवश दिखाई दे, उस समय की दुआ

«قَدَّرُ اللهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ»

क़'द'रुल्लाहि व मा शाआ फ़'अल

"यही अल्लाह का निर्णय है और अल्लाह जो चाहे करता है।"²

¹ सहीह बुखारी (4/126), हदीस संख्या : (3293)।

² “शक्तिशाली मोमिन कमज़ोर मोमिन के मुकाबले में अल्लाह के समीप अधिक बेहतर तथा प्रिय है। किंतु, प्रत्येक के अंदर भलाई है। जो चीज़ तुम्हारे लिए लाभदायक हो, उसके लिए तत्पर रहो और अल्लाह की मदद माँगो तथा असमर्थता न दिखाओ। फिर यदि तुम्हें कोई विपत्ति पहुँचे, तो यह न कहो कि यदि मैंने ऐसा किया होता, तो ऐसा और ऐसा होता। बल्कि यह कहो कि अल्लाह ने ऐसा ही भाग्य में लिख रखा था और वह जो चाहता है, करता है। क्योंकि ‘अगर’ शब्द शैतान के कार्य का द्वार खोलता है।” सहीह मुस्लिम 4/2052, हदीस संख्या : 2664।

47- जिसके घर नया बच्चा पैदा हुआ हो, उसके लिए मुबारकबाद तथा उसका उत्तर

«بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي الْمَوْهُوبِ لَكَ، وَشَكَرْتَ الْوَاهِبَ، وَبَلَغَ أَشُدَّهُ، وَرَزَقْتَ بَرَّهُ»

बारकल्लाहु लका फ़िल् मौहूबि लका, व श'कर्तल वाहिबा, व ब'ल'गा
अशुद्दह, व रुज़िक्ता बिर'हू

"अल्लाह ने आप को जो बच्चा दिया है, उसमें आप के लिए बरकत दे, आप बच्चा देने वाले का शुक्र अदा करें, बच्चा युवावस्था को पहुँचे और आप को उसके अच्छे व्यवहार का लाभ मिले।"

और बधाई पाने वाला उसे जवाब में यह कहे :

«بَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا، وَرَزَقَكَ اللَّهُ مِثْلَهُ، وَأَجْزَلَ ثَوَابِكَ»

बारकल्लाहु लका व बारका अलैका, व जज़ाकल्लाहु खैरन, व
र'ज़'क'कल्लाहु मिस्ल'हू, व अज्ज़ल सवाबक।

"अल्लाह आप पर बरकतों की बारिश करे, आप को इसका अच्छा बदला दे, इसके समान आप को भी दे और खूब प्रतिफल दे।"²

¹ इसे हसन बसरी के कथन के रूप में बयान किया जाता है। देखिए : इब्न अल-क़य्थिम की किताब तोहफ़ा अल-मौद्द पृष्ठ : 20। जबकि अल-औसत में इसे इब्न अल-मुज़िर के हवाले से नक़ल किया गया है।

² यह बात नेववी ने अल-अज़कार पृष्ठ : 349 में कही है। तथा देखिए : सलीम हिलाली की सहीह अल-अज़कार 2/713 तथा इस किताब में लेखक की किताब तमाम अत-तखरीज फ़ी अज़-ज़िन्न व अद-दुआ व अल-इलाज बि-अर-रुका 1/ 416।

48- बच्चों को अल्लाह की शरण में देने के शब्द

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- हसन और हुसैन - रज़ियल्लाहु अनहुमा- को इन शब्दों द्वारा अल्लाह की शरण में देते थे :

«أَعِذُّكُمْ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ»

उईज़ुकुमा बिकलिमातिल्लाहिह् ताम्मति मिन कुल्लि शैतानिन व हाम्मतिन, व मिन कुल्लि ऐनिन लाम्मतिना

"मैं तुम दोनों को अल्लाह के संपूर्ण शब्दों द्वारा अल्लाह की शरण में देता हूँ हर शैतान, ज़हरीले जानवर एवं लग जाने वाली नज़र से।"

49- रोगी का हाल जानने जाते समय उसके लिए की जाने वाली दुआ

«لَا بِأَسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ»

ला बअसा, तहूरुन, इन शा अल्लाह

"कोई बात नहीं है। अल्लाह ने चाहा तो यह (बीमारी) पाक-साफ करने वाली है।"²

«أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ»

¹ सहीह बुखारी 4/119, हदीस संख्या : 3371, वर्णनकर्ता अब्दुल्लाह बिन अब्बास -रज़ियल्लाहु अनहुमा- हैं।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ (10/118), हदीस संख्या : (3616)।

अस्-अलुल्लाहा अल-अजीमा, रब्बल अर्शिल अजीमि, अन्-यशिफ़यका

"मैं विशाल सिंहासन के रब महान अल्लाह से विनती करता हूँ कि तुम्हें स्वास्थ्य लाभ कराए।"

इसे सात बार कहे।¹

50- बीमार व्यक्ति का हाल जानने के लिए जाने की फ़ज़ीलत

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जब कोई व्यक्ति अपने बीमार मुसलमान भाई को देखने जाता है, तो जब तक उसके पास जाकर बैठ नहीं जाता, उस समय तक जन्नत के फलों को चुनने के लिए चल रहा होता है। फिर जब वह बैठ जाता है, तो उसे अल्लाह की कृपा ढाँप लेती है। अगर वह सुबह के समय निकला होता है, तो शाम तक उसके लिए सत्तर हजार फ़रिश्ते अल्लाह की कृपा की दुआ करते रहते हैं, और अगर शाम के समय निकला होता है, तो सुबह तक सत्तर हजार फ़रिश्ते उसके लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं।"²

¹ "जब कोई मुसलमान किसी बीमार व्यक्ति का, जिसकी मृत्यु का समय न आया हो, हाल जानने और उसे ढारस देने के लिए उसके पास जाता है और सात बार यह दुआ पढ़ता है : ... तो उसे स्वास्थ्य लाभ हो जाता है।" सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 2083 तथा सुनन अबू दाऊद, हदीस संख्या : 3106। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 2/210, तथा सहीह अल-जामे 5/180।

² सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 969, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 1442 और मुसनद-ए-अहमद हदीस संख्या : 975। देखिए सहीह इब्न-ए-माजा 1/244 तथा सहीह तिरमिज़ी 1/286। अहमद शाकिर ने भी इसे सहीह कहा है।

51- जीवन से निराश रोगी की दुआ

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ الْأَعْلَى»

अल्लाहुम्मः!फ़र ली, वर्हम्नी, व अल्हिकनी बिर-रफीकिल आला

"ऐ अल्लाह, तू मुझे माफ कर दे और मुझपर दया कर तथा मुझे रफीक-ए-आला (उच्च मित्र अर्थात नबियों, शहीदों, सिद्दीकों तथा नेक लोगों) से मिला दे।"

मृत्यु के समय अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अपने दोनों हाथ पानी में डालकर उनको अपने चेहरे पर फेरने लगे और यह दुआ करने लगे : अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। निश्चय मृत्यु के समय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।"

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ»

ला इलाहा इल्लल्लाह

"अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं"

इन्ना लिल् मौति स'क'रातिन²

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ»

«لَا شَرِيكَ لَهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا

حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ»

¹ सहीह बुखारी 7/10 हदीस संख्या : 4435 तथा सहीह मुस्लिम 4/1893 हदीस संख्या : 2444।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 8/144 हदीस संख्या : 4449। इस हदीस में मिसवाक का उल्लेख है।

ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु,
ला इलाह इल्लल्लाह वहदहु ला शरीक लहु, ला इलाह इल्लल्लाह लहुल
मुल्कु वलहुल हम्दु, ला इलाह इल्लल्लाह वला हौल वला कुव्वत इल्ला
बिल्लाह

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह सबसे बड़ा है।
अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है। अल्लाह के
अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है।
अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, उसी का सारा राज्य है और
उसी की सब प्रशंसा है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है तथा
अल्लाह की मदद के बिना न किसी के पास पुण्य करने की क्षमता है, न गुनाह
से बचने की शक्ति।"

52- मृत्यु के निकट व्यक्ति को कलिमा पढ़ने की प्रेरणा देना

"जिसकी ज़बान से निकलने वाला अंतिम शब्द

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ»

ला इलाहा इल्लल्लाह

अल्लाह के सिवा कोई (वास्तविक) पूज्य नहीं
हो, वह जन्नत में प्रवेश करेगा।²

¹ सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3430, सुनन इब्न-ए-माज़ा हदीस संख्या : 3794। अलबानी ने इसे सहीह तिरमिज़ी 3/152 और सहीह इब्न-ए-माज़ा 2/317 में सहीह कहा है।

² सुनन अबू दाऊद 3/190, हदीस संख्या : 3116। देखिए : सहीह अल-जामे 5/432।

53- विपत्ति के शिकार व्यक्ति की दुआ

«إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، اللَّهُمَّ أَجْرُنِي فِي مُصِيبَتِي، وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا»

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, अल्लाहुम्मअजुर्नी फी मुसीबती, व अख्लिफ़ ली खैरम् मिन्हा

"निश्चय ही हम अल्लाह के लिए हैं और हमें उसी की ओर लौटकर जाना है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी इस मुसीबत का प्रतिफल प्रदान करना तथा मुझे इसके स्थान पर इससे अच्छी चीज़ देना।"

54- मृतक की आँखें बंद करते समय की दुआ

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ (بِاسْمِهِ) وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّينَ،
وَاخْلُفْهُ فِي عَقَبِهِ فِي الْغَابِرِينَ، وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ،
وَافْسَحْ لَهُ فِي قَبْرِهِ، وَنَوِّرْ لَهُ فِيهِ»

अल्लाहुम्म इग़फ़िर लिफ़ुलानिन (बिस्मिही), वरफ़अ् द'र'ज'तहु फ़िल-महदियीना, वख़्लुफ़हु फ़ी अक़्रिबिही फ़िल-गाबिरीन, वग़फ़िर लना व-लहु या रब्बल आलमीना, वफ़सह लहु फ़ी क़ब्रिही, व-नव्विर लहु फ़ीहि

ऐ अल्लाह! अमुक (उसका नाम लेकर कहे) को क्षमा कर दे, सुपथगामी लोगों में उसका पद ऊँचा कर दे, उसके जाने के बाद उसके छोड़े हुए लोगों में उसका प्रतिनिधि बन जा। हे सारे संसार के पालनहार! हमें और उसे क्षमा कर

¹ सहीह मुस्लिम 2/632, हदीस संख्या : 9181

दे, उसके लिए उसकी क़ब्र को खूब फैला दे और उसके लिए उसमें प्रकाश का प्रबंध कर दे।¹

55- जनाज़े की नमाज़ में मृतक के लिए दुआ

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، وَعَافِهِ، وَاعْفُ عَنْهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ،
وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ، وَاعْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا
كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ،
وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ، وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ،
وَأَعِزَّهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ [وَعَذَابِ النَّارِ]

अल्लाहुम्मा!फिर लहु वर्हम्हु, व आफ़िहि, वअफु अन्हु, व अक्रिम
नु'ज़ुलहु, व वस्सिअ मुदख़'ल'हु, वसिल्हु बिल-माई वस-सल्लिज वल-
बर'दि, व नक्किह मिनल-ख़ताया कमा नक्कैतस-सौबल-अब्यज़ा मिनद्-
दन'सि, व अब्दिल्हु दारन ख़ैरम् मिन दारिहि, व अहलन ख़ैरम् मिन
अहलिहि, व ज़ौजन ख़ैरम् मिन ज़ौजिहि, व अदख़िलहुल-जन्नता, व अइज़्हु
मिन अज़ाबिल-क़ब्रि [व अज़ाबिन-नार]

"ऐ अल्लाह! इसे क्षमा कर दे, इसपर दया कर, इसे सकुशल रख, इसे
माफ़ कर, इसका ससम्मान सत्कार कर, इसकी क़ब्र को फैला दे, इसे पानी,
बर्फ़ और ओले से धो दे, इसे गुनाहों से उस तरह स्वच्छ एवं साफ़ कर, जैसे
तू ने उजले कपड़े को मैल-कुचैल से साफ़ किया है, इसे अपने घर के बदले
में उससे उत्तम घर प्रदान कर, अपने घर वालों से अच्छे घर वाले दे और अपने

¹ सहीह मुस्लिम 2/634, हदीस संख्या : 9201

जीवन साथी से अच्छा जीवन साथी दे, इसे जन्नत में दाखिल कर और क़ब्र की यातना तथा आग के अज़ाब से बचा।"¹

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا، وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا، وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا،
وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا، اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ، وَمَنْ
تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ، اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ، وَلَا تُضِلَّنَا
بَعْدَهُ»

अल्लाहुम्माफ़िर लिहय्यिना व-मय्यितिना, व-शाहिदिना व-गाइबिना,
व-सगीरिना व-कबीरिना, व-ज़करिना व-उन्साना, अल्लाहुम्मा मन अह्यैतहु
मिन्ना फ़अह्यिही अलल इस्लामि, व-मन तवफ़ैतहु मिन्ना फ़त'व'वफ़हु
अलल ईमानि, अल्लाहुम्मा ला तहरिम्ना अज़्रहु, वला तुज़िल्लना बअदहु।

"ऐ अल्लाह, हमारे जीवित तथा मृत, छोटे तथा बड़े, पुरुष तथा स्त्री और
उपस्थित तथा अनुपस्थित सबको क्षमा कर दे। ऐ अल्लाह, हममें से जिसे
जीवित रखना हो, इस्लाम पर जीवित रख और हममें से जिसे मारना हो, उसे
ईमान की अवस्था में मौत दे। ऐ अल्लाह, हमें उसके प्रतिफल से वंचित न
कर और हमें उसके बाद पथ-भ्रष्ट मत कर।"²

¹ सहीह मुस्लिम 2/663, हदीस संख्या : 963।

² सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 3201, तिरमिज़ी : 1024, नसई : 1985, इब्न-ए-माजा 1/480, हदीस
संख्या : 1498 तथा मुसनद-ए-अहमद 2/368, हदीस संख्या : 8809। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा
1/251।

«اللَّهُمَّ إِنَّ فُلَانَ بَنَ فُلَانٍ فِي ذِمَّتِكَ، وَحَبْلُ جِوَارِكَ، فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَعَذَابِ النَّارِ، وَأَنْتَ أَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَقِّ، فَاعْفُ لَهُ وَارْحَمْهُ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ»

अल्लाहुम्मा इन्ना फुलानब्ना फुलानिन फ़ी ज़िम्मतिका, व हब्लि जिवारिका, फ़क्रिहि मिन फ़ित्नतिल् क़ब्रि, व अज़ाबिन् नारि, व अन्ता अहलुल वफ़ाई वल हक्कि, फ़ाफ़िर लहु वर्हम्हु इन्नका अन्तल ग़फ़ूर रहीमा।

"ऐ अल्लाह, अमुक पुत्र अमुक तेरी शरण तथा तेरी सुरक्षा में है। अतः उसे क़ब्र की आजमाइश और आग के अज़ाब से बचा। तू दाता और प्रशंसायोग्य है। ऐ अल्लाह, इसे क्षमा कर दे और इसपर दया करा। निश्चय ही तू अति क्षमाशील और दयावान है।"¹

«اللَّهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ أُمَّتِكَ احتَاجُ إِلَى رَحْمَتِكَ، وَأَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهِ، إِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِي حَسَنَاتِهِ، وَإِنْ كَانَ مُسِيئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ»

अल्लाहुम्मा अब्दुका वब्नु अमतिका इहताजा इला रहमतिका, व अन्ता ग़निय्युन अन अज़ाबिही, इन् काना मुहसिनन फ़ज़िद फ़ी हसनातिही, व इन् काना मुसीअन फ़तजावज़ अन्हु

"ऐ अल्लाह! यह तेरा बंदा और तेरी दासी का बेटा है, जो तेरी दया का मोहताज है और तुझे उसे यातना देने की आवश्यकता नहीं है। अगर यह

¹ सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 1499। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 1/251। सुनन अबू दाऊद 3/211, हदीस संख्या : 3202।

सदाचारी है, तो तू इसकी नेकियों को बढ़ा दे और अगर दुराचारी है, तो इसे क्षमा कर दे"।¹

56- जनाज़े की नमाज़ में बच्चे के लिए की जाने वाली दुआँ

«اللَّهُمَّ أَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ»

अल्लाहुम्म अइज़्हु मिन अज़ाबिल क़ब्र

"ऐ अल्लाह! इसे क़ब्र की यातना से बचा।"²

और यदि कहे :

«اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَطًا وَذُخْرًا لِدَايِهِ، وَشَفِيعًا مُجَابًا، اللَّهُمَّ ثَقِّلْ بِهِ مَوَازِينَهُمَا، وَأَعْظِمْ بِهِ أَجُورَهُمَا، وَالْحَقِّهِ بِصَالِحِ الْمُؤْمِنِينَ، وَاجْعَلْهُ فِي كِفَالَةِ إِبْرَاهِيمَ، وَقِهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْجَحِيمِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَسْلَافِنَا، وَأَفْرَاطِنَا، وَمَنْ سَبَقَنَا بِالْإِيمَانِ»

¹ मुसतदरक हाकिम 1/359। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमत व्यक्त की है। देखिए : अलबानी की किताब अहकाम अल-जनाइज़ पृष्ठ : 125।

² सईद बिन मुसथिब कहते हैं : "मैंने अबू हुरैरा -रज़ियल्लाहु अनहु- के पीछे एक ऐसे बच्चे की नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ी, जिसने कभी कोई गुनाह नहीं किया था, इसके बावजूद उन्होंने यह दुआ पढ़ी : ...।" देखिए : इمام मालिक की अल-मुवत्ता 1/288, इब्न-ए-अबू शैबा की अल-मुसनफ़ 3/217 तथा बैहकी 4/9। शोऐब अरनाऊत ने शर्ह अस-सुन्ह के अनुसंधान 5/357 में इसकी सनद को सहीह कहा है।

अल्लाहुम्मजअल्हु फ़रतन् व जुखरन् लिवालिदैहि, व शफ़ीअन् मुजाबन्, अल्लाहुम्म सन्निकल बिहि मवाज़ीनुमा, व आअज़िम बिहि उज़ूरहुमा, व अल्हिक़हु बिस्सालिहिल मुअ्मिनीना, वज्अल्हु फ़ी कफ़ालति इब्राहीमा, व-क़िहि बिरह्मतिका अज़ाबल ज़हीमि, व अब्दिल्हु दारन् ख़ैरन् मिन दारिहि, व अहलन् ख़ैरन् मिन अहलिहि, अल्लाहुम्माफ़िर लि-अस्लाफ़िना, व अफ़ातिना, व-मन स'ब'क़ना बिलईमान।

"ऐ अल्लाह! इसे इसके माता-पिता के लिए अग्रदूत एवं संग्रह और एक स्वीकार्य सिफ़ारिशकर्ता बना दे। ऐ अल्लाह! इसके द्वारा उनके तराजू को भारी कर दे, और इसके द्वारा उनके पुण्य को बढ़ा दे। इसे नेक मोमिनों के साथ मिला दे, इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- की कफ़ालत (ज़िम्मेदारी, लालन-पालन) में रख एवं अपनी दया से इसे जहन्नम के अज़ाब से बचा। इसे इसके घर से बेहतर घर एवं इसके परिवार से बेहतर परिवार प्रदान कर। ऐ अल्लाह! हमारे पूर्वजों, अग्रदूतों एवं ईमान के साथ हमसे आगे बढ़ चुके लोगों को क्षमा करा।"

तो उत्तम है।

«اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا قَرِطًا، وَسَلَفًا، وَأَجْرًا»

अल्लाहुम्मजअल्हु लना फ़र'तन्, व स'ल'फ़न्, व अज़न

"ऐ अल्लाह! इसे हमारे लिए गंतव्य में पहले पहुँचकर तैयारी करने वाला, हमारे लिए हम से पहले जन्नत की तरफ जाने वाला और प्रतिफल का साधन बना।"²

¹ देखिए : इब्न-ए-कुदामा की अल-मुग़नी 3/416 तथा शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ की किताब अद-दुरूस अल-मुहिम्मह लि-आम्मह अल-उम्मह पृष्ठ : 15।

² हसन बच्चे पर सूर फ़ातिहा पढ़ते और उसके बाद यह दुआ पढ़ते : ... इसे बग़वी ने शर्ह अस-सुन्नह 5/357 में तथा अब्दुर रज़्ज़ाक़ ने हदीस संख्या : 6558 के तहत नक़ल किया है। जबकि इमाम बुख़ारी

57- मृतक के परिजन को सांत्वना देने के शब्द

«إِنَّ لِلَّهِ مَا أَخَذَ، وَلَهُ مَا أُعْطِيَ، وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُّسَمًّى...
فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ»

इन्ना लिल्लाहि मा अ'ख'ज़, व लहु मा आअूता, व कुल्लु शैइन इन्दहु
बि-अ'ज'लिन् मुसम्मा... फ़लतस्बिर वलतहतसिब

"बेशक अल्लाह ही का है, जो उसने ले लिया और उसी का है, जो उसने दिया। उसके निकट प्रत्येक वस्तु का समय निश्चित है। अतः अब तू सब्र कर तथा अल्लाह से प्रतिफल की उम्मीद रखा।"

यदि यह दुआ भी पढ़ ले :

«أَعْظَمَ اللَّهُ أَجْرَكَ، وَأَحْسَنَ عَزَاءَكَ، وَغَفَرَ لِمَيِّنِكَ»

आअूजमल्लाहु अज़्रका, व अहसना अज़ाअका, व ग़ाफ़रा लि-
मय्यितिक

"अल्लाह तुम्हें बड़ा प्रतिफल दे, हिम्मत से काम लेने की शक्ति दे और तुम्हारे मृतक को क्षमा करे।"

तो उत्तम है।

ने इसे किताब अल-जनाइज़, अध्याय : क़िराअह फ़ातिहा अल-किताब अला अल-जनाज़ह 2/113 में,
हदीस संख्या : 1335 से पहले तालीक़ करके नक़ल किया है।

¹ सहीह बुखारी 2/80, हदीस संख्या : 1284 तथा सहीह मुस्लिम 2/636, हदीस संख्या : 923।

² नववी की किताब अल-अज़कार पृष्ठ : 126।

58- मृतक को क़ब्र में दाखिल करते समय की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ»

बिस्मिल्लाहि व-अला सुन्नति रसूलिल्लाह

"हम इसे अल्लाह के नाम से और उसके रसूल की सुन्नत के अनुरूप क़ब्र में रख रहे हैं।"

59- मृतक को दफ़न करने के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ، اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ»

अल्लाहुम्म!फ़िर लहु, अल्लाहुम्म स़ब्बित्हु

"ऐ अल्लाह! इसे क्षमा कर दे और सुदृढ़ रखा।"²

60- क़ब्रों की ज़ियारत की दुआ

«السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ، مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ، وَإِنَّا إِنْ

شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ، [وَيَرْحَمُ اللَّهُ الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنَّا

وَالْمُسْتَأْخِرِينَ] أَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمْ الْعَافِيَةَ»

¹ सुन्न अबू दावूद (3/314), हदीस संख्या : (3215), सहीह सनद के साथ। इसी तरह मुसनद अहमद, हदीस संख्या : (5234) तथा (4812)। उसके शब्द हैं : "बिस्मिल्लाहि व-अला मिल्लति रसूलिल्लाहि" इसकी सनद भी सहीह है।

² अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब मृतक को दफ़न करने का काम संपन्न कर लेते तो उसके पास खड़े हो जाते और फ़रमाते : "अपने भाई के लिए क्षमायाचना करो और उसके लिए सुदृढ़ रहने की दुआ करो। क्योंकि इस समय उससे प्रश्न किया जा रहा है।" सुन्न अबू दाऊद 3/315, हदीस संख्या : 3223, तथा हाकिम 1/370। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है।

अस्सलामु अलैकुम अह्मद-दियारि, मिनल मुअ्मिनीना वल मुस्लिमीना, व-इन्ना इन शा अल्लाहु बिकुम लाहिकून, [व-यरहमुल्लाहुल् मुस्तक्रदिमीना मिन्ना वल मुस्तअखिरीना], अस-अलुल्लाहा लना व लकुमुल आफ्रियता।

"ऐ इस स्थान के रहने वाले मोमिनो और मुसलमानो, अल्लाह तुमपर शांति की जलधारा बरसाए और हम भी इन शा अल्लाह तुमसे मिलने वाले हैं। अल्लाह हममें से आगे जाने वालों और पीछे आने वालों पर दया करो। मैं अल्लाह से हमारे तथा तुम्हारे लिए कल्याण की प्रार्थना करता हूँ।"

61- आँधी के समय की दुआ

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا»

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका खैरहा, व अऊजु बिका मिन् शर्रिहा

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस तेज़ हवा (आँधी) की भलाई माँगता हूँ और इसकी बुराई से तेरी शरण में आता हूँ।"

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا فِيهَا، وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ،

وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا، وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ»

¹ सहीह मुस्लिम 2/671, हदीस संख्या : 975 तथा इब्न-ए-माजा 1/494, हदीस संख्या : 15471 हदीस के वर्णनकर्ता बुरैदा -रज़ियल्लाहु अनहु- हैं और यहाँ नक़ल किए गए शब्द इब्न-ए-माजा से लिए गए हैं। जबकि दोनों कोष्ठकों के बीच का भाग सहीह मुस्लिम 2/671, हदीस संख्या : 975 में लिया गया है और आइशा -रज़ियल्लाहु अनहा- से वर्णित है।

² सुनन अबू दाऊद 4/326 हदीस संख्या : 5099 तथा इब्न-ए-माजा 2/1228, हदीस संख्या : 37271 देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/305।

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका खैरहा, व खैरा मा फ़ीहा, व खैरा मा उर्सिलता बिहि, व अऊज़ु बिका मिन शर्रिहा, व शर्रि मा फ़ीहा, व शर्रि मा उर्सिलता बिहि।

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई, इसमें जो कुछ है उसकी भलाई तथा इसे जिसके साथ भेजा गया है उसकी भलाई माँगता हूँ तथा इसकी बुराई, इसमें जो कुछ है उसकी बुराई और इसे जिसके साथ भेजा गया है उसकी बुराई से तेरी शरण में आता हूँ।"

62- बादल गरजते समय की दुआ

«سُبْحَانَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ»

सुब्हानल्लजी युसब्बिहूर् रअदु बिहम्दिही वल्-मलाइकतु मिन खीफ़तिहि

"मैं पवित्रता बयान करता हूँ उस प्रभु की, बिजली की कड़क जिसकी प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन करती है और फ़रिश्ते उसके भय से काँपते हैं।"²

63- बारिश माँगने की कुछ दुआएँ

«اللَّهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُغِيثًا مَرِيئًا مَرِيْعًا، نَافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ، عَاجِلًا غَيْرَ

«أَجَلٍ»

¹ सहीह मुस्लिम 2/666, हदीस संख्या : 899 तथा सहीह बुखारी 4/76, हदीस संख्या : 3206 एवं 4829। शब्द सहीह मुस्लिम के हैं।

² अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर -रज़ियल्लाहु अन्हुमा- जब बादल गरजने की आवाज़ सुनते, तो बात करना बंद कर देते और यह दुआ पढ़ते : ...। मुवत्ता 2/992। अलबानी सहीह अल-कलिम अत-तय्यिब पृष्ठ : 157 में कहते हैं : सहाबी के कथन के रूप में इसकी सनद सहीह है।

अल्लाहुम्मा इस्किना गैसन् मुगीसन् मरीअन मरीअन, नाफ़िअन गैरा ज़ार्रिन, आज़िलन गैरा आज़िलिन

"ऐ अल्लाह! हमें ऐसी बारिश दे, जो सहायक, अनुकूल और हरियाली लाने वाली हो। हानीकारक होने की बजाए लाभदायक हो, और देर न करे, बल्कि जल्दी आए।"¹

«اللَّهُمَّ اغْنِنَا، اللَّهُمَّ اغْنِنَا، اللَّهُمَّ اغْنِنَا»

अल्लाहुम्मा अगिस्ना, अल्लाहुम्मा अगिस्ना, अल्लाहुम्मा अगिस्ना
"ऐ अल्लाह! हमें बारिश दे, ऐ अल्लाह! हमें बारिश दे, ऐ अल्लाह! हमें बारिश दे।"²

«اللَّهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ، وَبَهَائِمَكَ، وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ، وَأَحْيِي بَلَدَكَ

الْمَيِّتِ»

अल्लाहुम्मस्कि इबादका, व-बहाइमका, वन्शुरू रहमतका, व अह्यी ब'ल'द'कल मय्यिता

"ऐ अल्लाह! अपने बंदों तथा अन्य प्राणियों की पियास दूर कर दे, अपनी कृपा की चादर फैला दे और अपने मृत नगर को फिर से जीवित कर दे।"³

¹ सुन्नन अबू दाऊद 1/303, हदीस संख्या : 1171, अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 1/216 में सहीह कहा है।

² सहीह बुखारी 1/224, हदीस संख्या : 1014, तथा सहीह मुस्लिम 2/613, हदीस संख्या : 8971

³ सुन्नन अबू दाऊद 1/305, हदीस संख्या : 1178। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 1/218 में हसन कहा है।

64- बारिश होते देखते समय की दुआ

«اللَّهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا»

अल्लाहुम्मा सय्यिबन नाफ़िअन

"ऐ अल्लाह! इसे लाभदायक बारिश बना दे।"

65- बारिश होने के बाद की दुआ

«مُطْرِنَا بِفَضْلِ اللَّهِ وَرَحْمَتِهِ»

मुत्तिर्ना बिफ़ज़िल्ललाहि व रह्मतिहि

"हमें अल्लाह के अनुग्रह तथा उसकी कृपा से वर्षा प्राप्त हुई।"²

66- बारिश रुकवाने की दुआ

«اللَّهُمَّ حَوَّالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا، اللَّهُمَّ عَلَى الْآكَامِ وَالظُّرَابِ، وَبُطُونِ

الْأَوْدِيَةِ، وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ»

अल्लाहुम्मा हवालैना व-ला अलैना, अल्लाहुम्मा अलल-आकामि
वज़-ज़िराबि, व-बुतूनिल-औदियति, व मनाबितिश-शजर

"ऐ अल्लाह! हमारे आस-पास बारिश बरसा, हमपर नहीं। ऐ अल्लाह!
टीलों पर, पहाड़ियों पर, घाटियों में और पेड़ों के उगने की जगहों पर बारिश
बरसा।"³

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ (2/518), हदीस संख्या : (1032)

² सहीह बुखारी 1/205, हदीस संख्या : 846, तथा सहीह मुस्लिम 1/83, हदीस संख्या : 711

³ सहीह बुखारी 1/224, हदीस संख्या : 933, तथा सहीह मुस्लिम 2/614, हदीस संख्या : 8971

67- नया चाँद देखने की दुआ

«اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُمَّ أَهْلُهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيمَانِ، وَالسَّلَامَةِ

وَالْإِسْلَامِ، وَالتَّوْفِيقِ لِمَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَتَرْضَى، رَبُّنَا وَرَبُّكَ اللَّهُ»

अल्लाहु अकबर, अल्लाहुम्मा अहिल्लहु अलैना बिल अम्नि वल-ईमानी, वस्सलामति वल-इस्लामि, वत्तौफीकि लिमा तुहिब्बु रब्बना व तर्जा, रब्बुना व-रब्बुकल्लाह

"अल्लाह सबसे बड़ा है। ऐ अल्लाह! तू इसे हमारे सामने शांति, ईमान, सुरक्षा और इस्लाम के साथ ला तथा उस चीज़ के सुयोग के साथ, जिसे तू ऐ हमारे रब प्रिय जानता और पसंद करता है। (ऐ चाँद!) हमारा तथा तुम्हारा पालनहार अल्लाह है।"

68- रोज़ा इफ़तार करते समय की दुआ

«ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ، وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ»

ज़'ह'बज़् ज़'म'उ वब्तल्लतिल उरूकु, व'स'ब'तल अज्रु इन् शा अल्लाह

"प्यास दूर हो गई, रगें तर हो गईं और अल्लाह ने चाहा तो प्रतिफल भी सिद्ध हो गया।"²

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْ تَغْفِرَ

لِي»

¹ सुनन तिरमिज़ी 5/504, हदीस संख्या : 3451, तथा सुनन दारिमी 1/336। शब्द दारिमी के हैं। देखिए : सहीह तिरमिज़ी : 3/157।

² सुनन अबू दाऊद 2/306, हदीस संख्या : 2359, आदि। देखिए : सहीह अल-जामे 4/209।

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका, बिरह्मतिका अल्लती वसिअत कुल्ला
शैइन, अन् तफ़िरा ली

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरी उस कृपा का वास्ता देकर विनती करता हूँ,
जिसने हर चीज़ को अपने घेरे में ले रखा है, कि मुझे क्षमा कर दे।"¹

69- खाने से पहले की दुआ

"जब तुम में से कोई व्यक्ति कोई चीज़ खाए, तो कहे :"

«بِسْمِ اللَّهِ»

बिस्मिल्लाहि

अल्लाह के नाम से,

यदि शुरू में भूल जाए, तो कहे:

«بِسْمِ اللَّهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ»

बिस्मिल्लाहि फ़ी अव्वलिहि व आखिरिह

"मैं इसके आरंभ और अंत में अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ।"²

"जिसे अल्लाह कोई खाना खिलाए, वह कहे :

«اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ»

अल्लाहुम्मा बारिक लना फ़ीहि व अत्इम्ना खैरम् मिन्हु

¹ सुनन इब्न-ए-माजा 1/557, हदीस संख्या : 1753 में इसे अब्दुल्लाह बिन अम्र -रज़ियल्लाहु अन्हुमा- की दुआ के रूप में नक़ल किया गया है। हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर ने इसे अल-अज़कार की तख़रीज में हसन कहा है। देखिए : शर्ह अल-अज़कार 4/342।

² सुनन अबू दाऊद 3/347, हदीस संख्या : 3767 तथा सुनन तिरमिज़ी 4/288, हदीस संख्या : 1858। देखिए सहीह तिरमिज़ी 2/167।

ऐ अल्लाह! हमारे लिए इसमें बरकत दे और हमें इससे उत्तम भोजन खिला।

और जिसे अल्लाह दूध पिलाए, वह कहे :

«اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ»

अल्लाहुम्मा बारिक लना फ़ीहि व ज़िद्ना मिन्हु

"ऐ अल्लाह! हमारे लिए इसमें बरकत दे और हमें इस में से अधिक दो।"¹

70- खाना खा लेने के बाद की दुआ

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هَذَا، وَرَزَقَنِيهِ، مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي

وَلَا قُوَّةَ»

अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लज़ी अत्अमनी हाज़ा, व रज़'क'नीहि, मिन ग़ैरि हौलिम् मिन्नी व ला कुव्वता

"सारी प्रशंसा उस अल्लाह की है, जिसने मुझे यह खाना खिलाया और मुझे यह भोजन प्रदान किया, जबकि मेरे पास न कोई शक्ति है और न सामर्थ्य।"²

«الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ، غَيْرَ [مَكْنَفِيٍّ وَلَا

مُودَعٍ، وَلَا مُسْتَغْنَى عَنْهُ رَبَّنَا»

¹ सुन्न तिरमिज़ी 5/506, हदीस संख्या : 3455, देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/158।

² इसे अबू दाऊद हदीस संख्या : 4025, तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3458 और इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3285 ने रिवायत किया है। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/159।

अल-हम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तय्यिबम् मुबारकन फ़ीहि, ग़ैरा
[मकफ़ियिन व-ला] मुवद्इन, व-ला मुस्तानन अन्हु रब्बना

"मैं अल्लाह की अत्यधिक, स्वच्छ और बरकत वाली प्रशंसा करता हूँ।
अल्लाह को छोड़ न प्रयासि प्राप्त की जा सकती है, न उसे छोड़ा जा सकता
है और न उससे बेनियाज़ी बरती जा सकती है, ऐ हमारे रब !"

71- अतिथि की दुआ आतिथेय के लिए

«اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ، وَاعْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمَهُمْ»

अल्लाहुम्मा बारिक लहुम फ़ीमा रज़क़तहुम, वःफ़िर लहुम वर्हम्हुम
"ऐ अल्लाह! तू ने इन्हें जो रोज़ी दी है, उसमें बरकत दे, इन्हें क्षमा कर
और इनपर कृपा करा"¹

72- दुआ के माध्यम से खाने या पीने की चीज़ माँगने का इशारा

«اللَّهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِي، وَاسْقِ مَنْ سَقَانِي»

अल्लाहुम्मा अत्इम मन अत्अमनी, वस्कि मन सक़ानी
"ऐ अल्लाह! तू उसे खिला जो मुझे खिलाए और उसे पिला जो मुझे
पिलाए"³

¹ सहीह बुखारी 6/214, हदीस संख्या : 5458 और सुनन तिरमिज़ी 5/507, हदीस संख्या : 3456। शब्द
सुनन तिरमिज़ी के हैं।

² सहीह मुस्लिम 3/1615, हदीस संख्या : 2042।

³ सहीह मुस्लिम 3/1626, हदीस संख्या : 2055।

73- किसी के घर में रोज़ा इफ़तार करने के समय की दुआ

«أَفْطَرُ عِنْدَكُمْ الصَّائِمُونَ، وَأَكَلْ طَعَامَكُمْ الْأَبْرَارُ، وَصَلَّتْ عَلَيْكُمْ الْمَلَائِكَةُ»

अफ़तरा इन्दकुमुस साइमूनe, व अ'क'ला तआ'म'कुमुल् अबरारु, व सल्लत अलैकुमुल् मलाइकतु

"तुम्हारे यहाँ रोज़ेदार इफ़तार करें , तुम्हारा खाना नेक लोग खायें और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआ करें।"¹

74- रोज़ेदार की दुआ जब खाना उपस्थित हो और वह रोज़ा न तोड़े

"जब तुममें से किसी को निमंत्रण दिया जाये , तो वह निमंत्रण स्वीकार करे। अगर रोज़ेदार हो, तो दुआ दे दे और अगर रोज़े से न हो, तो खाए।"²

इस हदीस में आए हुए शब्द "فَلْيُصَلِّ" का अर्थ है, दुआ दे दे।

75- रोज़ेदार को जब कोई गाली दे, तो वह क्या कहे?

"मैं रोज़े से हूँ। मैं रोज़े से हूँ।"³

¹ सुनन अबू दाऊद 3/367, हदीस संख्या : 3856, इब्न-ए-माजा 1/556, हदीस संख्या : 1747 तथा नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 296-298। यहाँ स्पष्ट रूप से यह बताया गया है कि अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब किसी के यहाँ इफ़तार करते, तो यह दुआ पढ़ते थे। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 2/730 में सहीह कहा है।

² सहीह मुस्लिम 2/1054, हदीस संख्या : 1150।

³ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 4/103, हदीस संख्या : 1894, तथा सहीह मुस्लिम 2/806, हदीस संख्या : 1151।

76- पहला फल देखने के समय की दूआ

«اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي ثَمَرِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي مَدِينَتِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي مُدِّنَا»

अल्लाहुम्मा बारिक लना फ़ी स'म'रिना, व-बारिक लना फ़ी मदी'न'तिना,
व-बारिक लना फ़ी साइना, व-बारिक लना फ़ी मुद्दिना

"ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे फलों में बरकत दे, हमारे लिए हमारे नगर में बरकत दे, हमारे लिए हमारे साअ में बरकत दे और हमारे लिए हमारे मुद्द में बरकत दे।"

77- छींक की दुआ

"जब तुम में से कोई छींके, तो कहे :

«الْحَمْدُ لِلَّهِ»

अलहम्दु लिल्लाह

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है,

और उसका भाई या जो उसके साथ है वह कहे:

«يَرْحَمُكَ اللَّهُ»

यर्हमुकल्लाह

अल्लाह तुझ पर कृपा करे,

जब वह उससे "यर्हमुकल्लाह" (अल्लाह आप पर रहम करे) कहे, तो वह कहे:

¹ सहीह मुस्लिम 2/1000, हदीस संख्या : 1373।

«يَهْدِيكُمْ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ»

यहदीकुमुल्लाहु वयुस्लिहु बा'ल'कुम

"अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी दशा ठीक कर दे।"¹

78- यदि कोई काफ़िर छींकने के बाद अल्लाह की प्रशंसा करे, तो क्या कहा जाए?

«يَهْدِيكُمْ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ»

यहदीकुमुल्लाहु वयुस्लिहु बा'ल'कुम

"अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी दशा ठीक कर दे।"²

79- नवव्याहता के लिए दुआ

«بَارَكَ اللَّهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ»

बारकल्लाहु लका, व बारका अलैका, व ज'म'अ बैनकुमा फ़ी खैर

"अल्लाह तेरे लिए और तुझपर बरकत की बरखा बरसाए और तुम दोनों को अच्छाई के कामों में एकमत रखे।"³

80- नवव्याहता तथा जानवर खरीदने वाले के लिए दुआ

जब तुम में से कोई किसी स्त्री से विवाह करे या कोई दास खरीदे, तो कहे:

¹ सहीह बुखारी 7/125, हदीस संख्या : 5870।

² सुनन तिरमिज़ी 5/82, हदीस संख्या : 2741, मुसनद-ए-अहमद 4/400, हदीस संख्या : 19586 तथा अबू दाऊद 4/308, हदीस संख्या : 5040। देखिए : सहीह अबू दाऊद 2/354।

³ सुनन अबू दाऊद हदीस संख्या : 2130, सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 1091, सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 1905 तथा नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 259। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 1/316।

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ، وَأَعُوذُ بِكَ

مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका खैरहा, व खैरा मा जबल्लतहा अलैहि, व
अऊजु बिका मिन शर्रिहा, व शर्रि मा जबल्लतहा अलैह

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई तथा इसकी रचना के समय तू ने
इसके अंदर जो विशेषताएँ रखी हैं, उनकी भलाई माँगता हूँ। तथा मैं इसकी
बुराई एवं इसकी रचना के समय तू ने इसके अंदर जो विशेषताएँ रखी हैं,
उनकी बुराई से तेरी शरण में आता हूँ।"

इसी तरह जब कोई ऊँट खरीदे, तो उसके कोहान का ऊपरी भाग पकड़
कर यह दुआ पढ़े।¹

81- स्त्री से संभोग से पहले की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ، اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا»

बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्मा जन्निबनश् शैताना, व जन्निबिश् शैताना मा
रज़क़तना

"अल्लाह के नाम से। ऐ अल्लाह! हमें शैतान से बचा और हमें जो संतान
दे उसे भी शैतान से बचा।"²

¹ सुनन अबू दाऊद 2/248 हदीस संख्या : 2160 तथा इब्न-ए-माजा 1/617, हदीस संख्या 1918। देखिए
: सहीह इब्न-ए-माजा 1/324।

² सहीह बुखारी 6/141, हदीस संख्या : 141 तथा सहीह मुस्लिम 2/1028, हदीस संख्या : 1434।

82- क्रोध के समय की दुआ

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अऊजू बिल्लाहि मिनश् शैतानिर रजीम

"मैं धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।"

83- किसी विपत्ति में पड़े हुए व्यक्ति को देखकर पढ़ने की

दुआ

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ

مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلًا»

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी आफ़ानी मिम्मब्तलाका बिहि, वफ़ज़ज़लनी
अला कसीरिम् मिम्मन् खलक्का तफ़ज़ीलन

"सारी प्रशंसा उस अल्लाह की है, जिसने मुझे उस विपत्ति से सुरक्षित
रखा, जिसके साथ तुम को आज़माईश में डाला , और मुझे अपनी बहुत-सी
सृष्टियों से श्रेष्ठ बनाया।"²

84- सभा में पढ़ने की दुआ

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है, वह कहते हैं कि
उनकी गिनती के अनुसार अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम
एक ही सभा में खड़े होने से पहले-पहले यह दुआ सौ बार पढ़ लिया करते थे

:

¹ सहीह बुखारी 7/99 हदीस संख्या : 3282 तथा सहीह मुस्लिम 4/2015 हदीस संख्या : 2610।

² सुनन तिरमिज़ी 5/494, 5/493, ददीस संख्या : 3432। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/153।

«رَبِّ اغْفِرْ لِي، وَتُبْ عَلَيَّ، إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُورُ»

रबिःफ़िर ली, व-तुब अलैय्या, इन्नका अन्तत् तव्वाबुल ग़फ़ूर
 "ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मेरी तौबा क़बूल कर ले। निश्चय ही तू
 बहुत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला और क्षमा करने वाला है।"

85- सभा का प्रायश्चित्त

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ

وَأَتُوبُ إِلَيْكَ»

सुब्हा'न'कल्लाहुम्मा व-बिहम्दिका, अशहदु अल्ला इलाह इल्ला अन्ता,
 अस्तःफ़िरुका व-अतूबु इलैका

"ऐ अल्लाह, तू पाक है और तेरी ही प्रशंसा है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे
 अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है। मैं तुझसे क्षमा माँगता हूँ और तेरी ओर
 लौटकर आता हूँ।"

¹ सुनन तिरमिज़ी हदीस संख्या : 3434 तथा सुनन इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 3814, देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/153 और सहीह इब्न-ए-माजा 2/321। शब्द तिरमिज़ी के हैं।

² सुनन अबू दारूद हदीस संख्या : 4858, सुनन तिरमिज़ी : 3433 और सुनन नसई हदीस संख्या : 1344। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/153। एक सहीह हदीस में है कि आइशा -रज़ियल्लाहु अनहा- ने फ़रमाया : "अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब भी किसी सभा में बैठते, कुरआन की तिलावत करते या कोई नमाज़ पढ़ते तो उसका अंत इन शब्दों द्वारा करते : ... " नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 308 तथा मुसनद-ए-अहमद 6/77, हदीस संख्या : 24486। इसे डॉ फ़ारूक हमदा ने नसई की अमल अल-यौम वल-लैलह के अनुसंधान के दौरान सहीह कहा है। देखिए पृष्ठ : 273।

86- उसके लिए दुआ, जिसने कहा : "अल्लाह तुझे क्षमा करे"

«وَلَكَ»

वा'ल'क

"और तुझे भी।"¹

87- कोई उपकार करने वाले के लिए दुआ

«جَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا»

जज़ाकल्लाहु ख़ैरन

"अल्लाह तुझे अच्छा बदला दे।"²

88- दज्जाल के फ़ितने से बचाव के उपाय

"जिसने सूरा अल-कहफ़ के आरंभ से दस आयतें याद कर लीं, उसे दज्जाल के फ़ितने से बचा लिया जाएगा।"³

इसी तरह हर नमाज़ के अंतिम तशहहुद के बाद दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की शरण माँगने से भी उससे सुरक्षा प्राप्त होगी।⁴

¹ मुसनद-ए-अहमद 5/82, हदीस संख्या : 20778 तथा नसई की अमल अल-यौम व अल-लैलह, पृष्ठ : 218, हदीस संख्या : 421, अनुसंधान : डॉक्टर फ़ारूक हमादा।

² सुनन तिरमिज़ी, हदीस संख्या : 2035। देखिए : सहीह अल-जामे, हदीस संख्या : 6244 तथा सहीह अत-तिरमिज़ी 2/200।

³ देखिए : इस किताब की हदीस संख्या : (55) तथा (56), पृष्ठ : (41)।

⁴ सहीह मुस्लिम (1/555), हदीस संख्या : (809)। जबकि एक रिवायत में है : "सूरा अल-कहफ़ के अंत से।" सहीह मुस्लिम (1/556), हदीस संख्या : (809)।

89- "मुझे तुमसे अल्लाह के लिए प्रेम है" कहने वाले के लिए दुआ

«أَحَبُّكَ الَّذِي أَحْبَبْتَنِي لَهُ»

अ'हब्बक् अल्लज़ी अहब्बतनी लहु

"तुझसे भी वह प्रेम रखे, जिसके लिए तू मुझसे प्रेम रखता है।"

90- अपना धन प्रस्तुत करने वाले के लिए दुआ

«بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ»

अल्लाह आपके परिवार और आपके धन-संपत्ति में बरकत प्रदान करे।

"अल्लाह तेरे परिवार एवं धन-संपत्ति में बरकत दे।"²

91- क़र्ज़ अदा करते समय क़र्ज़ देने वाले के लिए दुआ

«بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ»

बार'कल्लाहु लका फ़ी अहलिका व मालिका

"अल्लाह तेरे लिए तेरे धन एवं परिवार में बरकत दे। क़र्ज़ का बदला यह है कि देने वाले की प्रशंसा की जाए और लिए हुए क़र्ज़ को अदा कर दिया जाए।"³

¹ सुनन अबू दाऊद 4/333, हदीस संख्या : 5125। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 3/965 में सहीह कहा है।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ (4/288), हदीस संख्या : (2049)।

³ नसई की अलम अल-यौम वल-लैलह, पृष्ठ : 300 तथा इब्न-ए-माजा 2/809, हदीस संख्या : 2424। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/55।

92- शिर्क से भय की दुआ

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका अन् उश्रिका बिका व अना अअ्लमु,
व अस्तग़्फ़िरुका लिमा ला अअ्लमु

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ इस बात से कि जान-बूझकर किसी को तेरा साझी बनाऊँ और तुझसे क्षमा माँगता हूँ उस शिर्क के लिए जो अनजाने में हो जाए।"

93-यह दुआ (अल्लाह तुझ में बरकत दे) देने वाले के लिए
दुआ

«وَفِيكَ بَارَكَ اللَّهُ»

व-फ़ीका बा'र'कल्लाह

"अल्लाह तुझ में भी बरकत दे।"

94- अपशुन को अप्रिय जानने की दुआ

«اللَّهُمَّ لَا طَيْرٍ إِلَّا طَيْرُكَ، وَلَا خَيْرٍ إِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ»

¹ मुसनद-ए-अहमद 4/403, हदीस संख्या : 19606 तथा बुखारी की अल-अदब अल-मुफ़रद हदीस संख्या : 7161 देखिए : सहीह अल-जामे 3/233 तथा अलबानी की सहीह अत-तरगीब व अत-तरहीब 1/191

² इब्न अस-सुन्नी, पृष्ठ : 138, हदीस संख्या : 2781 देखिए : इब्न अल-क़य्यिम की अल-वाबिल अस-सय्यिब, पृष्ठ : 304, अनुसंधान : बशीर मुहम्मद अयूना

अल्लाहुम्मा ला तौरा इल्ला तौरका, वला खैरा इल्ला खैरुका, वला इलाहा गौरुका

"ऐ अल्लाह! तेरे शगुन के अतिरिक्त कोई शगुन नहीं है, तेरी भलाई के अतिरिक्त कोई भलाई नहीं है और तेरे अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं है।"

95- सवारी पर सवार होने की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ»

बिस्मिल्लाहि, वल्हम्दु लिल्लाह

"मैं अल्लाह के नाम से सवार होता हूँ। और सारी प्रशंसा अल्लाह की है।

«سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ»

सुब्हानल्लजी सख़ख़रा लना हाज़ा वमा कुन्ना लहु मुक्रिनीन
{पवित्र है वह, जिसने इसे हमारे वश में कर दिया। अन्यथा हम इसे अपने वश में नहीं कर सकते थे।

«وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ»

व-इन्ना इला रब्बिना लमुन्कलिबून

¹ मुसनद-ए-अहमद 2/220, हदीस संख्या : 7045 तथा इब्न अस-सुन्नी, हदीस संख्या : 292। अलबानी ने इसे अस-सिलसिला अस-सहीहा 3/54, हदीस संख्या : 1065 में सहीह कहा है। अल्लाह के रसूल को शगुन पसंद था। यही एक कारण है कि आपने एक व्यक्ति से एक अच्छी बात सुनी, जो आपके मन को भा गई, तो फ़रमाया : "हमने तेरे मुँह से तेरा शगुन ले लिया।" सुनन अबू दाऊद, हदीस संख्या : 3719 तथा मुसनद-ए-अहमद, हदीस संख्या : 9040। अलबानी ने इसे अस-सिलसिला अस-सहीहा 2/363 में अबू अश-शौख की कितबा अख़लाक़ अन-नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-, पृष्ठ : 270 के हवाले से सहीह कहा है।

तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार की ओर फिरकर जाने वाले हैं।}

«الْحَمْدُ لِلَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ»

अल-हम्दु लिल्लाहि, अल-हम्दु लिल्लाहि, अल-हम्दु लिल्लाहि,
अल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु, सुब्हानक्
अल्लाहुम्मा इन्नी जलम्तु नफ्सी फ़ग़्फ़िर ली; फ़इन्नुहु ला यग़्फ़िर अज़्-
ज़ुनूबा इल्ला अन्ता

"सारी प्रशंसा अल्लाह की है। सारी प्रशंसा अल्लाह की है। सारी प्रशंसा अल्लाह की है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। तू पवित्र है। ऐ अल्लाह! मैंने अपने ऊपर अत्याचार किया है। अतः मुझे क्षमा कर दो क्योंकि तेरे अतिरिक्त कोई गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता।"¹

96- यात्रा की दुआ

«اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ»

अल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु
अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है

¹ सुनन अबू दाऊद 3/34, हदीस संख्या : 2602 तथा सुनन तिरमिजी 5/501, हदीस संख्या : 3446।
देखिए : सहीह तिरमिजी 3/156। दोनों आयतों के लिए देखिए : सूरा अज़-ज़ुख़रफ़, आयत संख्या : 13-14।

«سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ»

सुब्हानल्लजी सख़खरा लना हाज़ा वमा कुन्ना लहु मुकरिनीना
{पवित्र है वह, जिसने इसे हमारे वश में कर दिया। अन्यथा हम इसे अपने
वश में नहीं कर सकते थे।

«وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ»

व इन्ना इला रब्बिना लमुन्कलिबून
तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार की ओर फिरकर जाने वाले हैं।}

«اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَىٰ، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا
تَرْضَىٰ، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ، اللَّهُمَّ أَنْتَ
الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالْخَلِيفَةُ فِي الْأَهْلِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ
وَعَثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ»

अल्लाहुम्मा इन्ना नस'अलुका फ़ी स'फ़'रिना हाज़ल-बिर्'ा वतक्कवा,
वमिनल-अमलि मा तर्जा अल्लाहुम्मा हव्विन अलैना स'फ़'रना हाज़ा वल्वि
अन्ना बु'अद्हु, अल्लाहुम्मा अन्तस्-साहिबु फ़िस-सफ़रि, वल-खलीफ़तु
फ़िल-अहलि, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिन वअ'साइस्-सफ़रि, व-
काआबतिल मंज़रि, व-सूइल मुन'क़'लबि फ़िल-मालि वल-अहल

"ऐ अल्लाह! हम अपनी इस यात्रा में तुझसे भलाई, धर्मपरायणता और
ऐसा अमल माँगते हैं, जो तुझे पसंद हो। ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारी इस
यात्रा को आसान कर दे और इसकी दूरी को समेट दे। ऐ अल्लाह! तू ही यात्रा
में साथी और अनुपस्थिति में घर-परिवार की देखभाल करने वाला है। ऐ

अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ यात्रा की कठिनाइयों, बुरी हालत और धन तथा परिवार में बुरे परिवर्तन से।"

जब यात्रा से वापस आए, तो इन वाक्यों के साथ-साथ यह वृद्धि भी करे:

«آيُّونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ»

आयिबूना, ताइबूना, आबिदूना, लिरब्बिना हामिदून

"हम लौट आए तौबा करते हुए तथा अपने रब की इबादत और उसकी प्रशंसा करते हुए।"

97- गाँव या नगर में दाखिल होने की दुआ

«اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ، وَرَبَّ الْأَرْضِينَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ، وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضْلَلْنَ، وَرَبَّ الرِّيَّاحِ وَمَا ذَرَيْنِ، أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ، وَخَيْرَ أَهْلِهَا، وَخَيْرَ مَا فِيهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ أَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا»

अल्लाहुम्मा रब्बस-समावातिस सब्-इ वमा अज़लल्ना, व-रब्बल अर्ज़ीनस-सब्इ वमा अक्लल्ना, व-रब्बश शयातानि वमा अज़लल्ना, व-रब्बर् रियाहि वमा ज़रैना, अस्अलुका खैरा हाज़िहिल क़र्यति, व-खैरा अहलिहा, व-खैरा मा फ़ीहा, व-अरुज़ु बिका मिन शरिहा, व-शरि अहलिहा, व-शरि मा फ़ीहा।

"ऐ अल्लाह! सातों आकाशों तथा उनके नीचे की सारी चीज़ों के रब ! सातों धरतियों और उनके ऊपर की सारी चीज़ों के रब! शैतानों तथा उनके

¹ सहीह मुस्लिम 2/978, हदीस संख्या : 13421

बहकावे में आए हुए लोगों के रब तथा हवाओं एवं उनके द्वारा उड़ाई गई वस्तुओं के रब! मैं तुझसे इस गाँव, इसके निवासियों और इसमें मौजूद चीजों की भलाई माँगता हूँ तथा मैं इस गाँव, इसके रहने वालों और इसमें मौजूद चीजों से तेरी शरण माँगता हूँ।¹

98- बाज़ार में प्रवेश करने की दुआ

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ، وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ، بِيَدِهِ الْخَيْرُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु, व लहुल हम्दु, युह्यी व युमीतु, व हुवा ह्य्युन ला यमूतु, बियदिहिल खैरु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का सारा राज्य और उसी की सब प्रशंसा है, वह जीवन और मृत्यु देता है और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।"²

99- सवारी के फिसलने के समय की दुआ

«بِسْمِ اللَّهِ»

बिस्मिल्लाह

¹ मुसतदरक हाकिम 2/100, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 524। जबकि हाफ़िज़ इब्न-ए-हज़र ने तख़रीज अल-अज़कार 5/154 में हसन कहा है। शैख़ बिन बाज़ कहते हैं : "नसई ने इसे हसन सनद से रिवायत किया है।" देखिए : तोहफ़ा अल-अख़यार, पृष्ठ : 371

² सुनन तिरमिज़ी, हदीस संख्या : 3428, इब्न-ए-माजा 5/291, हदीस संख्या : 3860 तथा हाकिम 1/538। अलबानी ने इसे सहीह इब्न-ए-माजा 2/21 तथा सहीह तिरमिज़ी 3/152 में हसन कहा है।

"मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ।"

100- यात्री की मुक़ीम (ठहरे हुए) के लिए दुआ

«أَسْتَوْدِعُكُمْ اللَّهَ الَّذِي لَا تَضِيعُ وَدَائِعُهُ»

अस्तौदिउ कुमुल्लाहल् लज़ी ला तज़ीउ व-दाइउहु

"मैं तुम्हें अल्लाह के हवाले करता हूँ, जिसके हवाले की हुई चीज़ें नष्ट नहीं होती हैं।"²

101- ठहरे हुए व्यक्ति की यात्री के लिए दुआ

«أَسْتَوْدِعُ اللَّهَ دِينَكَ، وَأَمَانَتَكَ، وَخَوَاتِيمَ عَمَلِكَ»

अस्तौदिउल्लाहा दीनका, व अमानतका, व ख़वातीमा अमलिका

"मैं तेरे धर्म, तेरी अमानत और तेरे अंतिम कर्मों को अल्लाह के हवाले करता हूँ।"³

«رَوَدَّكَ اللَّهُ التَّقْوَى، وَغَفَرَ ذَنْبَكَ، وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُ مَا

كُنْتَ»

ज़व्वदकल्लाहु अत-तक्रवा, व ग़ाफ़रा ज़म्बका, व यस्सरा लकल ख़ैरा
हैसु मा कुन्त

¹ सुनन अबू दाऊद 4/296, हदीस संख्या : 4982। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 3/941 में सहीह कहा है।

² मुसनद-ए-अहमद 2/403, हदीस : 9230 तथा इब्न-ए-माजा 2/943, हदीस संख्या : 2825। देखिए : सहीह इब्न-ए-माजा 2/133।

³ मुसनद-ए-अहमद 2/7, हदीस संख्या : 4524 और सुनन तिरमिज़ी 5/499, हदीस संख्या : 3443। अलबानी ने इसे सहीह सुनन तिरमिज़ी 3/419 में सहीह कहा है।

"अल्लाह तुम्हें धर्मपरायणता का पाथेय प्रदान करे, तुम्हारे गुनाह माफ़ करे और जहाँ भी रहो, तुम्हारे लिए भलाई को प्राप्त करना आसान करे।"¹

102- यात्रा के करने के दौरान अल्लाह की बड़ाई और पवित्रता बयान करना

जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : "जब हम ऊपर चढ़ते तो अल्लाहु अकबर कहते, यह दुआ पढ़े :

«اللَّهُ أَكْبَرُ»

अल्लाहु अकबर
(अल्लाह सबसे बड़ा है) और जब नीचे उतरते तो सुब्हानल्लाह कहते थे।"²

यह दुआ पढ़े :

«سُبْحَانَ اللَّهِ»

सुब्हानल्लाह
(अल्लाह पवित्र है)

103- यात्री के लिए सुबह के समय पढ़ने की दुआ

«سَمِّعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللَّهِ، وَحُسْنِ بَلَائِهِ عَلَيْنَا، رَبَّنَا صَاحِبِنَا،
وَأَفْضَلُ عَلَيْنَا، عَائِدًا بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ»

¹ सुन्नन तिरमिज़ी, हदीस संख्या : 3444। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/155।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ (6/135), हदीस संख्या : (2993)।

सम्मआ सामिउम् बिह्मिदल्लाहि, व हुस्नि बलाइहि अलैना, रब्बना साहिब्ना, व अफ़ज़ल अलैना, आइज़म् बिल्लाहि मिनन् नार

"एक सुनने वाले ने हमारी ओर से अल्लाह की प्रशंसा करने और नेमतों द्वारा उसकी हमारी परीक्षा लेने को दूसरों तक पहुँचाया। ऐ हमारे पालनहार! तू हमारे साथ रह और हमपर अनुग्रह फ़रमा। मैं यह बात जहन्नम से अल्लाह की शरण में आते हुए कह रहा हूँ।"

104- यात्रा के दौरान या बिना यात्रा के भी किसी जगह ठहरने की दुआ

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ»

अऊज़ु बि'क'लिमातिल्लाहि ताम्माति मिन शरि मा ख'ल'क़

"मैं अल्लाह की पैदा की हुई वस्तुओं की बुराई से, उसके पूर्ण शब्दों की शरण में आता हूँ।"

105- यात्रा से वापसी की दुआ

«हर ऊंचे स्थान पर तीन बार तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहे, फिर कहे:

¹ सहीह मुस्लिम 4/2086, हदीस संख्या : 2718। इस हदीस में आए हुए शब्द "سَمِعَ سَامِعٌ" को दो तरह से पढ़ा गया है। एक "سَمِعَ سَامِعٌ", जिसका अर्थ है, एक गवाही देने वाले ने हमारे द्वारा अल्लाह की नेमतों पर उसकी प्रशंसा किए जाने और नेमतों द्वारा उसके हमारी परीक्षा लेने की गवाही दी। दूसरे "سَمِعَ سَامِعٌ" का अर्थ है, एक सुनने वाले ने हमारे इस कथन को दूसरे तक पहुँचाया। दरअसल अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने इस तरह की बात भोर के समय जिक्र तथा दुआ के महत्व को इंगित करने के लिए कही है। शर्ह अन-नववी अला सहीह मुस्लिम 17/39।

² सहीह मुस्लिम 4/2080, हदीस संख्या : 2709।

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، آيُّونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ، صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु, व'ल'हुल ह्मदु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीरुन, आयिबूना, ताइबूना, आबिदूना, लिर्बिना हामिदूना, स'द'क़ल्लाहु वअ्दहू, व नसरा अब्दहू, व ह'ज़'मल अहज़ाबा वह्दहु

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का सारा राज्य है, उसी की सब प्रशंसा है और वह हर काम की शक्ति रखता है। हम वापस हो रहे हैं, तौबा करते हुए और अपने रब की इबादत तथा उसकी प्रशंसा करते हुए। अल्लाह ने अपना वचन सच कर दिखाया, अपने बंदे की मदद की और अकेले ही सारे जत्थों को पराजित कर दिया।"

106- कोई प्रिय अथवा अप्रिय घटना घटित होते समय की दुआ

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के सामने जब कोई ऐसी बात आती, जो आपको पसंद होती, तो फ़रमाते :

«الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ»

¹ अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब किसी युद्ध या हज से लौटते, तो यह दुआ कहते थे। सहीह बुखारी 7/163, हदीस संख्या : 1797 तथा सहीह मुस्लिम 2/980, हदीस संख्या : 1344।

अल्हम्दु लिल्लाहिल् लज़ी बिनिअमतिहि ततिम्मुस् सालिहात
 "सारी प्रशंसा उस अल्लाह की है, जिसके अनुग्रह से सब अच्छे काम
 संपन्न होते हैं।"

और जब सामने कोई ऐसी बात आती, जो पसंद न होती, तो फ़रमाते :

«الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ»

अल्हम्दु लिल्लाहि अला कुल्लि हाल

"सारी प्रशंसा हर हाल में अल्लाह की है।"

107- अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर दरूद भेजने की फ़ज़ीलत

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जिसने
 मुझपर एक बार दरूद भेजा , उसके बदले में अल्लाह उसपर दस रहमों
 उतारेगा।"² जैसे कि यह कहें :

«اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ»

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम अला नबिय्यिना मुहम्मद

(ऐ अल्लाह! हमारे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की
 प्रशंसा अपने निकटवर्ती फ़रिश्तों के बीच कर और उन पर शांति की जलधारा
 बरसा।)

¹ इब्न अस-सुन्नी की अमल अल-यौम वल-लैलह, हदीस संख्या : 377 तथा मुसतदरक हाकिम 1/499।
 अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे 4/201 में सहीह कहा है।

² सहीह मुस्लिम 1/288, हदीस संख्या :384।

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : " मेरी क़ब्र को मेला स्थल बनाओ। और मुझपर दुरूद भेजते रहो, क्योंकि तुम जहाँ भी रहो, तुम्हारा दुरूद मुझे पहुँच जाएगा।"¹

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "असल कंजूस वह व्यक्ति है, जिसके सामने मेरा नाम लिया जाए और वह मुझपर दुरूद न भेजे।"²

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते हैं, जो धरती में घूमते फिरते हैं। वे मुझे मेरी उम्मत का सलाम पहुँचाते हैं।"³

और आप-सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-ने फ़रमाया : "जब कोई बंदा मुझपर सलाम पढ़ता है, अल्लाह मुझे मेरी आत्मा लौटा देता है, यहाँ तक कि मैं उसे सलाम का उत्तर दे दों।"⁴

108- सलाम को आम करना

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : "तुम जन्मत मे ें उस समय तक प्रवेश नहीं कर सकते, जब तक ईमान न लाओ, और तुम उस समय तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक एक-दूसरे से प्रेम न करने लगो। क्या मैं तुम्हारा मार्गदर्शन ऐसे कार्य की ओर न कर दूँ, जिसे यदि

¹ सुनन अबू दाऊद 2/218, हदीस संख्या : 2044 तथा अहमद 2/367, हदीस संख्या : 8804। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 2/383 में सहीह कहा है।

² सुनन तिरमिज़ी 5/551, हदीस संख्या : 3546 आदि। देखिए : सहीह अल-जामे 3/25 तथा सहीह अत-तिरमिज़ी 3/177।

³ सुनन नसई 3/43, हदीस संख्या : 1282 तथा हाकिम 2/421। अलबानी ने इसे सहीह नसई 1/274 में सहीह कहा है।

⁴ अबू दाऊद हदीस संख्या : 2041। अलबानी ने सहीह अबू दाऊद 1/383 में इसे हसन कहा है।

तुम करोगे तो एक-दूसरे से प्रेम करने लगोगे? अपने बीच में सलाम को आम करो।"¹

"तीन बातें ऐसी हैं कि जिसने उन्हें एकत्र कर लिया, उसने ईमान को एकत्र कर लिया : अपने साथ न्याय करना, तमाम लोगों को सलाम करना और तंगी होने के बावजूद खर्च करना।"²

अब्दुल्लाह बिन अम्र -रज़ियल्लाहु अनहुमा- से रिवायत है कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से पूछा कि इस्लाम का कौन-सा कार्य सबसे अच्छा है ? आपने फ़रमाया : "तुम खाना खिलाओ और सलाम करो। जिसे जानते हो उसे भी और जिसे न जानते हो उसे भी।"³

109- यदि काफ़िर सलाम करे, तो उसका उत्तर कैसे दिया जाए?

«وَعَلَيْكُمْ»

व अलैकुम

"जब अह्ले किताब तुम्हें सलाम करें, तो कहो : व अलैकुम (तुमपर भी)।"⁴

¹ सहीह मुस्लिम 1/74, हदीस संख्या : 54 तथा मुसनद-ए-अहमद, हदीस संख्या : 1430। शब्द मुसनद-ए-अहमद के हैं। जबकि सहीह मुस्लिम के शब्द हैं : "तुम जन्नत में उस समय तक प्रवेश नहीं कर सकते..."

² इमाम बुखारी ने इसे अपनी सहीह 1/82 हदीस संख्या : 28 में अम्मार बिन यासिर -रज़ियल्लाहु अनहु- से सहाबी के कथन में रूप में बिना सनद के नक़ल किया है।

³ सहीह बुखारी 1/55, हदीस संख्या : 12 तथा सहीह मुस्लिम 1/65 हदीस संख्या : 39।

⁴ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/42, हदीस संख्या : 6258 तथा सहीह मुस्लिम 4/1705, हदीस संख्या : 2163।

110- मुर्गे के बाँग देने और गधे के रेंकने के समय की दुआ

"जब तुम मुर्गे की बाँग सुनो तो अल्लाह से उसका अनुग्रह माँगो, क्योंकि उसने किसी फ़रिश्ते को देखा है।

जैसे कि यह कहें :

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका मिन फ़ज़्लिका
(ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरी कृपा माँगता हूँ।)

"और जब तुम गधे का रेंकना सुनो तो शैतान से अल्लाह की शरण माँगो, क्योंकि उसने किसी शैतान को देखा है।" जैसे कि यह कहें :

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अऊजु बिल्लाहि मिनश् शैतानिर रजीम

"मैं दुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।"

111- रात को कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनते समय की

दुआ

"जब तुम रात में कुत्ते के भौंकने तथा गधे के रेंकने की आवाज़ सुनो, तो तुम उनसे अल्लाह की शरण माँगो, क्योंकि ये जानवर वह देखते हैं, जो तुम नहीं देखते।"²

जैसे कि यह कहें :

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 6/350 हदीस संख्या : 3303 और सहीह मुस्लिम 4/2092 हदीस संख्या : 2729।

² सुनन अबू दाऊद 4/327 हदीस संख्या : 5105 तथा अहमद 3/306, हदीस संख्या : 14283। अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद 3/961 में सहीह कहा है।

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश् शैतानिर रजीम

"मैं दुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।"

112- उस व्यक्ति के हक़ में दुआ, जिसे तुमने गाली दी हो

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "ऐ अल्लाह! जिस किसी ईमान वाले को मैंने गाली दी है, उसके लिए इसे क़यामत के दिन तेरी निकटता की प्राप्ति का साधन बना दे।"¹

113- मुसलमान किसी मुसलमान की प्रशंसा में क्या कहे?

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जब तुममें से किसी को अपने साथी की प्रशंसा करनी ही हो, तो कहे : "मैं अमुक को (ठीक) समझता हूँ, हालाँकि उसका हिसाब अल्लाह ही लेगा और मैं किसी को अल्लाह के सामने पवित्र नहीं कहता।" मैं अमुक को ऐसा और ऐसा समझता हूँ -अगर वह जानता हो कि उसके अंदर यह बात सचमुच मौजूद है-।"²

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/171, हदीस संख्या : 6361 तथा सहीह मुस्लिम 4/2007, हदीस संख्या : 3961 सहीह मुस्लिम के शब्द हैं : "उसे उसके लिए परिशुद्धता एवं कृपा का साधन बना दे।"

² सहीह मुस्लिम 4/2296, हदीस संख्या : 30001

114- जब कोई मुसलमान अपनी प्रशंसा सुने तो क्या कहे?

«اللَّهُمَّ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا يَقُولُونَ، وَاعْفِرْ لِي مَا لَا يَعْلَمُونَ،
[وَاجْعَلْنِي خَيْرًا مِمَّا يَظُنُّونَ]»

अल्लाहुम्मा ला तुआखिज़नी बिमा यकूलूना, वग़िफ़र ली मा ला यअल्मून, [वजअलनी ख़ैरम् मिम्मा यज़ुन्नून]।

"ऐ अल्लाह! लोग जो कुछ कह रहे हैं, उसके आधार पर मेरी पकड़ न करना और मेरी उन बातों को क्षमा कर देना जो लोग नहीं जानते और मुझे उनकी कल्पना से भी उत्तम बना देना।"

115- हज या उमरा का एहराम बाँधा हुआ व्यक्ति तलबिया कैसे कहे?

«لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ،
وَالنُّعْمَةَ، لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ»

लब्बैका अल्लाहुम्मा लब्बैका, लब्बैका ला शरीका लका लब्बैका,
इन्नल हम्दा, वन्निअमता, लका वल मुल्का, ला शरीका लका

¹ बुखारी की अल-अदब अल-मुफ़रद, हदीस संख्या : 761। अलबानी ने इसे सहीह अल-अदब अल-मुफ़रद, हदीस संख्या : 585 में सहीह कहा है। दोनों कोष्ठकों के बीच का भाग बैहकी की शोअब अल-ईमान 4/228 से लिया गया है और एक अन्य सनद से वर्णित है।

"मैं उपस्थित हूँ। ऐ अल्लाह! मैं उपस्थित हूँ। तेरा कोई साझी नहीं है, मैं उपस्थित हूँ। सारी प्रशंसा, सारी नेमतें और सारा राज्य तेरा है। तेरा कोई साझी नहीं है।"¹

116- हजर-ए-असवद के पास आते समय तकबीर कहना

"अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने एक ऊँट पर सवार होकर काबा का तवाफ़ किया। इस दौरान आप जब-जब हजर-ए-असवद वाले कोने के पास आते, तो अपने पास मौजूद किसी चीज़ से उसकी ओर इशारा करते और अल्लाहु अकबर कहते।"²

117- रुक्न-ए-यमानी और हजर-ए-असवद के बीच की दुआ

(...رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ).

रब्बना आतिना फ़िदुन्या ह'स'न'तन् व फ़िल आखिरति ह'स'न'तन् व क्रिना अज़ाबन् नार

(...رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ).

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 3/408, हदीस संख्या : 1549 तथा सहीह मुस्लिम 2/841, हदीस संख्या 1184।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 3/476, हदीस संख्या : 1613। यहाँ जिस चीज़ से इशारा करने की बात कही गई है, उससे मुराद नेजा है। सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी 3/472।

"ऐ हमारे रब , हमें दुनिया में भी भलाई प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।"

118- सफ़ा और मरवा पर ठहरने समय की दुआ

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जब सफ़ा के निकट आए, तो यह आयत पढ़ी :

«إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ...، أْبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ»

इन्नस् सफ़ा वल मर्वता मिन श'आइरिल्लाहि..., अब्दउ बिमा ब'द'अल्लाहु बिहि

"निस्संदेह सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं...", " मैं उसी से आरंभ करता हूँ, जिससे अल्लाह ने आरंभ किया है।"

चुनांचे आप पहले सफ़ा पहाड़ी के पास जाकर उसपर चढ़ गए, यहाँ तक कि जब काबा दिखने लगा, तो क़िबले की ओर मुँह करके खड़े हो गए, अल्लाह का एकत्व और उसकी बड़ाई बयान की तथा फ़रमाया :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ، أَنْجَزَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ»

¹ सुनन अबू दाऊद 2/179, हदीस संख्या : 1894, मुसनद-ए-अहमद 3/411, हदीस संख्या : 15398 और बग़वी की शर्ह अस-सुन्नह 7/354। आयत के लिए देखिए : सूरा अल-बक्ररा आयत संख्या : 201।

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु, अंजज़ा व अद्दु, व न'स'रा अब्दहु, व ह'ज़'मल अहज़ाबा वह्दहु

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का सारा राज्य है और उसी की सब प्रशंसा है और वह हर काम करने की क्षमता रखता है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसने अपना वचन पूरा कर दिखाया है, अपने बंदे की मदद की है और अकेले ही सारे जत्थों को पराजित कर दिया। फिर इसके बीच आपने दुआ फ़रमाई। इसी तरह आपने तीन बार कहा।"

फिर इसके बीच में दुआ करे, इस तरह तीन बार कहे। इस हदीस में आगे है : उन्होंने मरवा पर वैसा ही किया, जैसा सफ़ा पर किया था।"

119- अरफ़ा के दिन की दुआ

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "सबसे अच्छी दुआ अरफ़ा के दिन की दुआ है और मैंने तथा मुझसे पहले नबियों ने जो सबसे अच्छी बात कही है, वह यह है :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

¹ सहीह मुस्लिम 2/888, हदीस संख्या : 1218। आयत के लिए देखिए : सूरा अल-बक्रा आयत संख्या :

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का राज्य है, उसी की सब प्रशंसा है और वह प्रत्येक चीज़ का सामर्थ्य रखता है।"¹ "अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- क़सबा पर सवार होकर मशअर-ए-हराम आए और क़िबला की ओर मुँह करके दुआ की, अल्लाह की बड़ाई बयान की, उसके अतिरिक्त कोई अन्य पूज्य न होने का ऐलान किया और उसके एकत्व को बयान किया। आप अच्छी तरह भोर होने तक यहीं रुके रहे और सूरज निकलने से पहले यहाँ से चल पड़े।"² "तीनों जमरात के पास हर कंकड़ी फेंकने के साथ अल्लाहु अकबर कहे। फिर पहले तथा दूसरे जमरे के बाद थोड़ा-सा आगे बढ़े और क़िबला की ओर मुँह करके खड़े होकर तथा दोनों हाथों को उठाकर दुआ करे। रही बात जमरा अक़बा की, तो उसमें हर बार कंकड़ी मारते समय अल्लाहु अकबर कहे और उसके बाद वहाँ रुके बिना ही वापस लौट जाए।"³

¹ सुन्नन तिरमिज़ी, दीस संख्या : 3585। अलबानी ने इस सहीह तिरमिज़ी 3/184 तथा सिलसिला सहीहा 4/6 में हसन कहा है।

² सहीह मुस्लिम 2/891, हदीस संख्या : 1218।

³ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 3/583, हदीस संख्या : 1751। यहाँ लाए गए शब्द यहीं से लिए गए हैं। तथा सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 3/583, 3/584, 3/581, हदीस संख्या : 1753। इमाम मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है। देखिए हदीस संख्या : 1218।

120- मशअर-ए-हराम के निकट का ज़िक्र

121- कंकड़ी मारते समय हर कंकड़ के साथ अल्लाहु
अकबर कहना

122- आश्चर्यचकित करने वाली तथा प्रसन्नतापूर्ण बात
सामने आने के समय की दुआ

«سُبْحَانَ اللَّهِ»

सुब्हानल्लाह

"मैं अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ"¹

«اللَّهُ أَكْبَرُ»

अल्लाहु अकबर

"अल्लाह सबसे बड़ा है"²

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 1/210, 390, 414, हदीस संख्या : 115, 3599 एवं 6218 और सहीह मुस्लिम 4/ 1857 हदीस संख्या : 1674।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 8/441, हदीस संख्या : 4741 तथा 3092, सुनन तिरमिज़ी : 2180 तथा नसई की अल-कुबरा हदीस संख्या : 11185। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 2/103 एवं 2/235 तथा मुसनद-ए-अहमद 5/218, हदीस संख्या : 21900।

123- कोई प्रसन्नतापूर्ण बात सामने आने पर आदमी क्या करे?

"अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के सामने जब कोई प्रसन्न करने वाली बात आती, तो सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह के शुक्र के तौर सजदे में गिर जाते।"¹

124- शरीर में कोई दर्द होने पर आदमी क्या करे और क्या कहे?

"शरीर के जिस भाग में दर्द हो, वहाँ अपना हाथ रखो और उसके बाद तीन बार बिस्मिल्लाह कहो तथा सात बार यह दुआ पढ़ो :

«بِسْمِ اللَّهِ»

बिस्मिल्लाह

अल्लाह के नाम से,

तीन बार। और सात बार कहे:

«أَعُوذُ بِاللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَازِرُ»

अऊजु बिल्लाहि व कुद्रतिहि मिन शरि मा अजिदु व उहाजिरु

"मैं उस चीज़ की बुराई से जिसे मैं अनुभव करता हूँ और जिस से मैं डरता हूँ, अल्लाह और उसकी कुदरत की शरण में आता हूँ।"²

¹ अबू दाऊद हदीस संख्या : 2774, तिरमिज़ी हदीस संख्या : 1578, इब्न-ए-माजा हदीस संख्या : 1394।

देखिए : सहीह अब्द-ए-माजा 1/233 तथा इरवा अल-ग़लील 2/226।

² सहीह मुस्लिम 4/1728, हदीस संख्या : 2202।

125- जिसे भय हो कि उसकी नज़र किसी वस्तु को लग सकती है ,तो वह आदमी क्या कहे?

"जब तुममें से कोई अपने भाई के अंदर, स्वयं अपने अंदर या अपने धन में कोई ऐसी बात देखे, जो उसके मन को भा जाए, तो उसके लिए बरकत की दुआ करो क्योंकि नज़र लगना सत्य है।"¹

126- घबराहट के समय का ज़िक्र

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ»

ला इलाहा इल्लल्लाह

"अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं है।"²

127- ऊंट अथवा अन्य जानवरों को ज़बह करते समय क्या कहा जाए?

«بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ [اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ] اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي»

बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबरु, [अल्लाहुम्मा मिन्का व-लका],
अल्लाहुम्मा तक्रब्बल मिन्नी

¹ मुसनद-ए-अहमद 4/447, हदीस संख्या : 15700, इब्न-ए-माजा, ददीस संख्या : 3508 तथा मालिक 3/118-119। अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे 1/212 में सहीह कहा है। देखिए अरनाऊत द्वारा संपादित ज़ाद अल-मआद की अनुसंधानयुक्त प्रति 4/170।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 6/381, हदीस संख्या : 3346 तथा सहीह मुस्लिम 4/2208, हदीस संख्या : 2880।

"मैं अल्लाह के नाम से ज़बह करता हूँ और अल्लाह सबसे बड़ा है। ऐ अल्लाह! यह तेरी ओर से है और तेरे लिए है। ऐ अल्लाह! इसे मेरी ओर से ग्रहण कर ले।"

128- सरकश शैतानों के फ़रेब से बचने की दुआ

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يَجَاوِزُهَا بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ: مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، وَبَرٍّ أَوْ ذَرَأٍ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرِجُ فِيهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ إِلَّا طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمَنُ»

अऊजु बिकलिमातिल-लाहित-ताम्मातिल-लती ला युजाविजुहुन्ना
बरून व ला फ़ाजिरुन, मिन शर्री मा ख'ल'का, व ब'र'आ व ज़'र'आ, व मिन
शर्री मा यन्जिलु मिनस-समाई, व मिन शर्री मा यअरुजु फ़ीहा, व मिन शर्री मा
ज़'र'आ फ़िल-अर्ज़ि, व मिन शर्री मा यखरुजु मिन्हा, व मिन शर्री फ़ितनिल-
लैलि वन-नहारि, व मिन शर्री कुल्लि त़ारिक़िन इल्ला त़ारिक़न यत्रुकु
बिखैरिन या रहमान

"मैं अल्लाह के उन संपूर्ण शब्दों की शरण में आता हूँ, जिनसे कोई
अच्छा या बुरा इनसान आगे नहीं बढ़ सकता, जिसे उसने पैदा किया,
अस्तित्व प्रदान किया, और फैला दिया, उन तमाम चीज़ों की बुराई से। इसी

¹ सहीह मुस्लिम 3/1557, हदीस संख्या : 1967 तथा बैहकी 9/287। दोनों कोषठकों के बीच का भाग बैहकी 9/287 आदि से लिया गया है। जबकि अंतिम वाक्य को मैंने सहीह मुस्लिम की रिवायत से लिया है लेकिन केवल अर्थ लिया है शब्द नहीं।

तरह मैं उसकी शरण में आता हूँ उन तमाम चीजों की बुराई से, जो आकाश से नीचे आती हैं, नीचे से आकाश की ओर जाती हैं, जिनको उसने धरती में फैलाया है और जो धरती से निकलती हैं। इसी तरह रात और दिन के फ़ितनों की बुराई से और हर रात में आने वाले की बुराई से, सिवाय उस रात में आने वाले के, जो भलाई के साथ आता हो। ऐ रहमान!"¹

129- तौबा तथा क्षमा याचना

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है :
"अल्लाह की क़सम! मैं दिन में सत्तर बार से अधिक अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ और उसके सामने तौबा करता हूँ।"²

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "ऐ लोगो! अल्लाह के सामने तौबा करो और उससे क्षमा माँगो, क्योंकि खुद मैं दिन में सौ बार तौबा करता हूँ।"³

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : «जिसने कहा :

«أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الْعَظِيمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ

إِلَيْهِ»

¹ मुसनद-ए-अहमद 3/419, दीस संख्या : 15461, सहीह सनद के साथ। इब्न अस-सुन्नी हदीस संख्या : 637। इसकी सनद को अरनाऊद ने अत-तहाविया की अनुसंधानयुक्त प्रति पृष्ठ : 133 में सहीह कहा है। देखिए : मजमा अज़-ज़वाइद 10/127।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ (11/101), हदीस संख्या : (6307)।

³ सहीह मुस्लिम 4/2076, हदीस संख्या : 2702।

अस्तःफ़िरुल्लाहल् अज़ीम् अल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुबल् हय्युल
क्रय्युम्

व अतूबु इलैहि

मैं महान अल्लाह से क्षमा मांगता हूँ, जिसके सिवा कोई (वास्तविक) पूज्य नहीं, जो जीवन्त है, सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है, और मैं उसी की ओर लौटता हूँ,

उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, यद्यपि वह युद्ध के मैदान से भाग खड़ा ही क्यों न हुआ हो।"¹

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "अल्लाह अपने बंदे से सबसे निकट रात के अंतिम भाग में होता है। अतः यदि उस समय अल्लाह का स्मरण करने वालों में शामिल हो सको, तो हो जाओ।"²

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "बंदा अपने रब से सबसे अधिक निकट उस समय होता है, जब वह सजदे में होता है। अतः, तुम उसमें अधिक दुआएँ किया करो।"³

¹ सुनन अबू दाऊद 2/85, हदीस संख्या : 1517, तिरमिज़ी 5/569, हदीस संख्या : 3577 और मुसतदरक हाकिम 1/511। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त कही है। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/182 तथा जामे अल-उसूल लि-अहादीस अर-रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-, अरनाऊत के अनुसंधान के साथ 4/389-390।

² सुनन तिरमिज़ी, हदीस संख्या : 3579, सुनन नसई 1/279, हदीस संख्या : 572 और हाकिम 1/309। देखिए : सहीह तिरमिज़ी 3/183 तथा जामे अल-उसूल लि-अहादीस अर-रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-, अरनाऊत के अनुसंधान के साथ 4/144।

³ सहीह मुस्लिम 1/350, हदीस संख्या : 482।

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "मेरे दिल पर पर्दा सा आ जाता है और मैं दिन में सौ बार अल्लाह से क्षमा याचना करता हूँ।"¹

130- सुबहान अल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाह तथा अल्लाहु अकबर कहने की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जिसने दिन में सौ बार कहा : "जिसने यह दुआ पढ़ी :

«سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ»

सुब्हानल्लाहि व बिहमिदिहि

मैं अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ उसकी प्रशंसा के साथ।

दिन में सौ बार, उसके सारे पाप क्षमा कर दिए जाएँगे, यद्यपि वे समुद्र के झाग के बराबर ही क्यों न हों।"²

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जिसने कहा :

¹ सहीह मुस्लिम 4/2075, हदीस संख्या : 2702, इब्न अल-असीर कहते हैं : : "الْيُغَانُ عَلَى قَلْبِي" का अर्थ है, मेरे दिल पर पर्दा डाल दिया जाता है और उसे ढाँप दिया जाता है। दरअसल इससे मुराद ग़फ़लत है। क्योंकि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- हमेशा अल्लाह के ज़िक्र, उससे निकटता की प्राप्ति के फ़िक्र और उसके ध्यान में लीन रहते थे। अतः, इस संबंध में कभी ज़रा सी भी ग़फ़लत होती, तो उसे पाप समझते हुए क्षमा याचना करने लगते। देखिए : जामे अल-उसूल 4/386।

² सहीह बुखारी 7/168, हदीस संख्या : 6405 तथा सहीह मुस्लिम 4/2071, हदीस संख्या : 2691। देखिए : इसी किताब की पृष्ठ संख्या : 65।

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल् मुल्कु, व'ल'हुल हम्दु, व-हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का राज्य है, उसी की सब प्रशंसा है और वह प्रत्येक चीज़ का सामर्थ्य रखता है।"

दस बार, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने इस्माईल -अलैहिस्सलाम- की संतान में से चार दासों को मुक्त किया।¹

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "दो शब्द ऐसे हैं, जो बोलने में ज़बान पर हल्के हैं, तराजू में भारी सिद्ध होंगे एवं रहमान (अल्लाह) को बड़े प्रिय हैं :

«سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ»

सुब्हानल्लाहि व बिहमदिहि, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम

"मैं अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ उसकी प्रशंसा के साथ। मैं महान अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ।"²

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "मेरा यह कहना :

¹ सहीह बुखारी 7/67, हदीस संख्या : 6404 तथा सहीह मुस्लिम 4/2071, हदीस संख्या : 2693 यहाँ शब्द मुस्लिम के हैं। देखिए : इस किताब की दुआ संख्या : 93, पृष्ठ : 661

² सहीह बुखारी 7/168 हदीस संख्या : 6404 तथा सहीह मुस्लिम 4/2072 हदीस संख्या : 2694।

«سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ»

सुब्हानल्लाहि, वल्हम्दुलिल्लाहि, व ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु
अकबर

अल्लाह पवित्र है, सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए योग्य है, अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है।

मुझे उन सारी वस्तुओं से अधिक प्रिय है, जिन पर सूरज निकलता है।¹

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "क्या तुममें से कोई इस बात से विवश है कि प्रत्येक दिन एक हजार नेकियाँ प्राप्त करे? आपके पास बैठे लोगों में से एक व्यक्ति ने पूछा : आदमी एक हजार नेकियाँ कैसे प्राप्त कर सकता है? आपने फ़रमाया :

«سُبْحَانَ اللَّهِ»

सुब्हानल्लाह

“सौ बार 'सुबहानल्लाह' कहने से उसके लिए एक हजार नेकियाँ लिखी जाएँगी अथवा उसके एक हजार गुनाह मिटा दिए जाएँगे।”²

"जिसने यह दुआ पढ़ी :

«سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ»

सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमि व बिहम्दिह

"मैं महान अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ उसकी प्रशंसा के साथ।"

¹ सहीह मुस्लिम 4/2072, हदीस संख्या : 26951

² सहीह मुस्लिम 4/2073, हदीस संख्या : 26981

उसके लिए जन्नत में एक खजूर का पेड़ लगा दिया जाता है।"¹

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस! क्या मैं तुमको जन्नत के खज़ानों में से एक खज़ाने के बारे में न बता दूँ?" मैंने कहा : अवश्य, ऐ अल्लाह के रसूल। आपने फ़रमाया : "आप कह दें :

«لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ»

ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

"अल्लाह की तौफ़ीक़ के बिना ना पाप से बचने की शक्ति है, न पुण्य करने की क्षमता।"²

एक अन्य हदीस में है कि आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "अल्लाह के निकट सबसे प्रिय वाक्य चार हैं :

«سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ»

सुब्हानल्लाहि, वल्हम्दु लिल्लाहि, वला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर

अल्लाह पवित्र है, सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए योग्य है, अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है।

"तुम उन में से जिस से भी आरंभ करो, तुम्हें कोई हानि नहीं होगी।"³

¹ सुनन तिरमिज़ी 5/511, हदीस संख्या : 3464 तथा मुसतदरक हाकिम 1/501। हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। देखिए : सहीह अल-जामे 5/531 तथा सहीह तिरमिज़ी 3/160।

² सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 11/213, हदीस संख्या : 4206 और सहीह मुस्लिम 4/2076, हदीस संख्या : 2704।

³ सहीह मुस्लिम 3/1685, हदीस संख्या : 2137।

एक देहाती, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और बोला : मुझे कोई ऐसी बात सिखा दीजिए, जो मैं कहता रहूँ। आपने फ़रमाया : "आप कह दें :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ
كَثِيرًا، سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहु, अल्लाहु अकबर कबीरन, वल-हम्दु लिल्लाहि कसीरन, सुब्हानल्लाहि रब्बिल आलमीना, ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अज़ीज़िल हकीम

अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है। अल्लाह बहुत बड़ा है। उसकी अत्यधिक प्रशंसा है। मैं अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ जो सारे संसार का पालनहार है। सर्वशक्तिमान एवं हिकमत वाले अल्लाह के अतिरिक्त न किसी के पास भलाई के मार्ग पर लगाने की शक्ति है, न बुराई के मार्ग से रोकने की क्षमता।

उसने कहा : यह बातें तो मेरे रब के लिए हैं। मेरे लिए क्या है? आपने कहा : "आप कहें :

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَارْزُقْنِي»

अल्लाहुम्मग़िफ़र ली, वर्हम्नी, वह्दिनी, वर्ज़ुक्नी

"ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा प्रदान कर, मुझ पर दया कर, मुझे सत्य का मार्ग दिखा और मुझे रोजी प्रदान करा।"¹

जब कोई व्यक्ति इस्लाम ग्रहण करता, तो अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- उसे नमाज़ सिखाते और फिर उसे आज्ञा देते कि इन शब्दों द्वारा दुआ करे:

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي»

अल्लाहुम्मग़िफ़र ली, वर्हम्नी, वह्दिनी, वआफ़िनी वर्ज़ुक्नी

"ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा प्रदान कर, मुझपर दया कर, मुझे सत्य का मार्ग दिखा, मुझे हर विपत्ति से सुरक्षित रख और मुझे रोजी प्रदान करा।"²

"सबसे उत्तम दुआ

«الْحَمْدُ لِلَّهِ»

अल्हम्दु लिल्लाह

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है,

और सबसे उत्तम ज़िक्र

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ»

ला इलाहा इल्लल्लाह

¹ सहीह मुस्लिम 4/2072, हदीस संख्या : 2696। जबकि अबू दाऊद 1/220 हदीस संख्या : 832 में यह वृद्धि है : जब वह देहाती जाने लगा, तो अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "इसने अपने हाथ को भलाई से भर लिया।"

² सहीह मुस्लिम 4/2073, हदीस संख्या : 3697। जबकि एक रिवायत में है : "ये वाक्य तुम्हारे लिए दुनिया एवं आखिरत दोनों को एकत्र कर देंगे।"

"अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं है।"

"शेष रहने वाले सत्कर्म हैं :

«سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ

وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ»

सुब्हानल्लाहि, वल्हम्दु लिल्लाहि, वला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबरु, वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

"अल्लाह पवित्र है, सारी प्रशंसा अल्लाह की है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह की मदद के बिना न किसी के पास पुण्य करने की क्षमता है, न गुनाह से बचने की शक्ति।"²

131- अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- तसबीह कैसे पढ़ते थे?

अब्दुल्लाह बिन अम्र -रज़ियल्लाहु अनहु- से वर्णित है, वह कहते हैं :
"मैंने अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को अपनी उँगलियों से तसबीह गिनते देखा।" जबकि एक जगह यह वृद्धि है : "दाएँ हाथ की ।"³

¹ सुनन तिरमिज़ी 5/462, हदीस संख्या : 3383, इब्न-ए-माजा 2/1249, हदीस संख्या : 3800 तथा हाकिम 1/5031 हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने उनसे सहमति व्यक्त की है। देखिए : सहीह अल-जामे 1/3621

² मुसनद-ए-अहमद, हदीस संख्या : 513, अहमद शाकिर की तरतीब के साथ। देखिए : मजमा अज़-ज़वाइद 1/297। इब्न-ए-हज़र ने इसे बुलूग अल-मराम में अबू सईद की रिवायत से नसई (की अल-कुबरा : 10617) की ओर मंसूब किया है और उसके बाद कहा है : इसे इब्-ए-हिब्बान [हदीस संख्या : 840] और हाकिम [1/541] ने सहीह कहा है।

³ सुनन अबू दाऊद 2/81, हदीस संख्या : 1502 तथा सुनन तिरमिज़ी 5/521, हदीस संख्या : 3486। देखिए : सहीह अल-जामे 1/271, हदीस संख्या : 4865। यहाँ आए हुए शब्द सुनन अबू दाऊद के हैं।

132- विभिन्न प्रकार के पुण्य एवं व्यापक शिष्टाचार

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : "जब रात आने लगे या फिर शाम होने लगे, तो अपने बच्चों को रोक लो। क्योंकि इस समय सारे शैतान फैल जाते हैं। फिर जब रात का कुछ भाग गुज़र जाए, तो उन्हें छोड़ दो और अपने घरों के द्वार बंद कर लो तथा अल्लाह का नाम ले लिया करो। क्योंकि शैतान बंद द्वार नहीं खोलता। इसी तरह अपने मशकीज़ों का मुँह रस्सी से बाँध दो और अल्लाह का नाम ले लिया करो। इसी प्रकार अपने बरतनों को ढाँप दो और अल्लाह का नाम ले लिया करो। कुछ नहीं तो चौड़ाई में कोई चीज़ ही रख दो। साथ ही अपने चराग भी बुझा दिया करो।"

अल्लाह की दया और शांति की बरखा बरसे हमारे नबी मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम-, आपके परिजनों और सभी साथियों पर।

देखिए : सहीह अल-जामे 4/271, हदीस संख्या : 4865। अलबानी ने इसे सहीह सुनन अबू दाऊद 1/411 में सहीह कहा है।

¹ सहीह बुखारी फ़तह अल-बारी के साथ 10/88, हदीस संख्या : 5623 तथा सहीह मुस्लिम 3/1595, हदीस संख्या : 2012।

सूची

हिस्न अल-मुस्लिम	2
(कुरआन एवं हदीस की दुआएँ)	2
भूमिका	2
ज़िक्र का महत्व	4
1- नींद से जागने के अज़कार	8
2- कपड़ा पहनने की दुआ	12
3- नया कपड़ा पहनने की दुआ	13
4- नया कपड़ा पहनने वाले को दी जाने वाली दुआ	13
5- कपड़ा उतारने की दुआ	14
6- शौचालय जाने की दुआ	14
7- शौचालय से निकलने की दुआ	15
8- वज़ू से पहले की दुआ	15
9- वज़ू के बाद की दुआ	15
10- घर से निकलने की दुआ	16
11- घर में प्रवेश करने की दुआ	17
12- मस्जिद जाने की दुआ	18
13- मस्जिद में प्रवेश करने की दुआ	20
14- मस्जिद से निकलने की दुआ	21
15- अज़ान के अज़कार	22
16- नमाज़ आरंभ करने की दुआ	24
17- रुकू की दुआ	31
18- रुकू से उठाने की दुआ	33
19- सजदे की दुआ	34
20- दो सजदों के बीच बैठने की अवस्था में पढ़ी जाने वाली दुआ	37
21- सजदा-ए-तिलावत की दुआ	38
22- तशह्हुद	39
23- तशह्हुद के बाद अल्लाह के नबी-सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम-पर दरूद	40
24- अंतिम तशह्हुद के बाद सलाम से पहले की दुआ	41

25- सलाम फेरने के बाद के अज़कार.....	48
26- इस्तिख़ारा की नमाज़ की दुआ	55
27- सुबह तथा शाम के अज़कार.....	57
28- सोने के अज़कार	76
29- रात को करवट बदलते समय की दुआ	86
30- नौंद में बेचैनी तथा घबराहट की दुआ	86
31- कोई व्यक्ति बुरा स्वप्न देखे तो क्या करे?.....	87
32- वित्र की दुआ-ए-कुनूत	87
33- वित्र से सलाम फेरने के बाद का ज़िक्र	90
34- शोक तथा चिंता के समय की दुआएँ	91
35- बेचैनी की दुआ.....	92
36- शत्रु तथा शासक से मिलने की दुआ	94
37- शासक के अत्याचार से डरे हुए व्यक्ति की दुआएँ	95
38- शत्रु के लिए बददुआ.....	97
39- जिसे लोगों का डर हो, वह यह दुआ पढ़े.....	97
40- जिसे अपने ईमान में संदेह होने लगे, उसके लिए दुआ	97
41- क़र्ज़ की अदायगी के लिए दुआ.....	98
42- नमाज़ में अथवा कुरआन पढ़ते समय आने वाले बुरे खयालों से बचने की दुआ	99
43- उस व्यक्ति की दुआ, जिसे कोई कार्य कठिन दिखाई पड़े.....	100
44- आदमी गुनाह कर बैठे, तो कौन-सी दुआ पढ़े और क्या करे?	100
45- शैतान और उसके बुरे खयालों को दूर करने की दुआ.....	101
46- जब कोई अप्रिय घटना घटित हो जाए या आदमी विवश दिखाई दे, उस समय की दुआ ...	102
47- जिसके घर नया बच्चा पैदा हुआ हो, उसके लिए मुबारकबाद तथा उसका उत्तर	103
48- बच्चों को अल्लाह की शरण में देने के शब्द	104
49- रोगी का हाल जानने जाते समय उसके लिए की जाने वाली दुआ	104
50- बीमार व्यक्ति का हाल जानने के लिए जाने की फ़ज़ीलत	105
51- जीवन से निराश रोगी की दुआ.....	106
52- मृत्यु के निकट व्यक्ति को कलिमा पढ़ने की प्रेरणा देना.....	107
53- विपत्ति के शिकार व्यक्ति की दुआ.....	108
54- मृतक की आँखें बंद करते समय की दुआ	108

55- जनाजे की नमाज़ में मृतक के लिए दुआ	109
56- जनाजे की नमाज़ में बच्चे के लिए की जाने वाली दुआएँ	112
57- मृतक के परिजन को सांत्वना देने के शब्द	114
58- मृतक को कब्र में दाखिल करते समय की दुआ	115
59- मृतक को दफ़न करने के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ	115
60- क़ब्रों की ज़ियारत की दुआ	115
61- आँधी के समय की दुआ	116
62- बादल गरजते समय की दुआ	117
63- बारिश माँगने की कुछ दुआएँ	117
64- बारिश होते देखते समय की दुआ	119
65- बारिश होने के बाद की दुआ	119
66- बारिश रुकवाने की दुआ	119
67- नया चाँद देखने की दुआ	120
68- रोज़ा इफ़तार करते समय की दुआ	120
69- खाने से पहले की दुआ	121
70- खाना खा लेने के बाद की दुआ	122
71- अतिथि की दुआ आतिथेय के लिए	123
72- दुआ के माध्यम से खाने या पीने की चीज़ माँगने का इशारा	123
73- किसी के घर में रोज़ा इफ़तार करने के समय की दुआ	124
74- रोज़ेदार की दुआ जब खाना उपस्थित हो और वह रोज़ा न तोड़े	124
75- रोज़ेदार को जब कोई ग़ाली दे, तो वह क्या कहे?	124
76- पहला फल देखने के समय की दूआ	125
77- छींक की दुआ	125
78- यदि कोई काफ़िर छींकने के बाद अल्लाह की प्रशंसा करे, तो क्या कहा जाए?	126
79- नवव्याहता के लिए दुआ	126
80- नवव्याहता तथा जानवर खरीदने वाले के लिए दुआ	126
81- स्त्री से संभोग से पहले की दुआ	127
82- क्रोध के समय की दुआ	128
83- किसी विपत्ति में पड़े हुए व्यक्ति को देखकर पढ़ने की दुआ	128
84- सभा में पढ़ने की दुआ	128

85- सभा का प्रायश्चित्त	129
86- उसके लिए दुआ, जिसने कहा : "अल्लाह तुझे क्षमा करे"	130
87- कोई उपकार करने वाले के लिए दुआ	130
88- दज्जाल के फ़ितने से बचाव के उपाय	130
89- "मुझे तुमसे अल्लाह के लिए प्रेम है" कहने वाले के लिए दुआ	131
90- अपना धन प्रस्तुत करने वाले के लिए दुआ	131
91- कर्ज़ अदा करते समय कर्ज़ देने वाले के लिए दुआ	131
92- शिर्क से भय की दुआ	132
93- यह दुआ (अल्लाह तुझ में बरकत दे) देने वाले के लिए दुआ	132
94- अपशयुक्त को अप्रिय जानने की दुआ	132
95- सवारी पर सवार होने की दुआ	133
96- यात्रा की दुआ	134
97- गाँव या नगर में दाखिल होने की दुआ	136
98- बाज़ार में प्रवेश करने की दुआ	137
99- सवारी के फिसलने के समय की दुआ	137
100- यात्री की मुक़ीम (ठहरे हुए) के लिए दुआ	138
101- ठहरे हुए व्यक्ति की यात्री के लिए दुआ	138
102- यात्रा के करने के दौरान अल्लाह की बड़ाई और पवित्रता बयान करना	139
103- यात्री के लिए सुबह के समय पढ़ने की दुआ	139
104- यात्रा के दौरान या बिना यात्रा के भी किसी जगह ठहरने की दुआ	140
105- यात्रा से वापसी की दुआ	140
106- कोई प्रिय अथवा अप्रिय घटना घटित होते समय की दुआ	141
107- अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर दरूद भेजने की फ़ज़ीलत	142
108- सलाम को आम करना	143
109- यदि काफ़िर सलाम करे, तो उसका उत्तर कैसे दिया जाए?	144
110- मुर्गे के बाँग देने और गधे के रेंकने के समय की दुआ	145
111- रात को कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनते समय की दुआ	145
112- उस व्यक्ति के हक़ में दुआ, जिसे तुमने गाली दी हो	146
113- मुसलमान किसी मुसलमान की प्रशंसा में क्या कहे?	146
114- जब कोई मुसलमान अपनी प्रशंसा सुने तो क्या कहे?	147

115- हज या उमरा का एहराम बाँधा हुआ व्यक्ति तलबिया कैसे कहे?	147
116- हजर-ए-असवद के पास आते समय तकबीर कहना	148
117- रुक्न-ए-यमानी और हजर-ए-असवद के बीच की दुआ	148
118- सफ़ा और मरवा पर ठहरने समय की दुआ	149
119- अरफ़ा के दिन की दुआ	150
120- मशअर-ए-हराम के निकट का ज़िक्र	152
121- कंकड़ी मारते समय हर कंकड़ के साथ अल्लाहु अकबर कहना	152
122- आश्चर्यचकित करने वाली तथा प्रसन्नतापूर्ण बात सामने आने के समय की दुआ	152
123- कोई प्रसन्नतापूर्ण बात सामने आने पर आदमी क्या करे?	153
124- शरीर में कोई दर्द होने पर आदमी क्या करे और क्या कहे?	153
125- जिसे भय हो कि उसकी नज़र किसी वस्तु को लग सकती है ,तो वह आदमी क्या कहे?..	154
126- घबराहट के समय का ज़िक्र	154
127- ऊँट अथवा अन्य जानवरों को ज़बह करते समय क्या कहा जाए?.....	154
128- सरकश शैतानों के फ़रेब से बचने की दुआ	155
129- तौबा तथा क्षमा याचना	156
130- सुबहान अल्लाह, अलहमदु लिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाह तथा अल्लाहु अकबर कहने की फ़ज़ीलत	158
131- अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- तसबीह कैसे पढ़ते थे?	164
132- विभिन्न प्रकार के पुण्य एवं व्यापक शिष्टाचार	165



hi24v5.0 - 04/10/2026



رسالة الحرمين

हरमैन का संदेश

मस्जिद-ए-हराम एवं मस्जिद-ए-नबवी के आगंतुकों के लिए
मार्गदर्शक सामग्री विभिन्न भाषाओं में



978-603-517-278-3

